Maple EDUCATION

ANSWER KEY

सतरंग हिन्दी

Class
6 To 8

Written By :
Anuja Arora

PURPLE STROKE

© All Rights Reserved Information contained in this book has been published by MAPLE EDUCATION (A UNIT OF PARI PUBLICATION) has been obtained by its authors from sources believed to be reliable and are correct to the best of the knowledge. However, the publisher and its authors shall in no event be liable for any errors, omissions or damages arising out of use of this information and specifically disclaim any implied warranties or merchantability or fitness for any particular use.
Warm Welcome for your suggestions and guidelines to improve the book for bright educational INDIA.

Quality Books For Better Education

PARI

PUBLICATION

A HOUSE OF CHILDREN BOOKS

Today A Reader...
Tomorrow A Leader.

Selection Book House

LEADING PUBLISHERS OF CHILDREN BOOKS

E-mail : pari_publication@yahoo.com

सतरंग हिन्दी

कक्षा - 6

अध्याय – 1 मातृभूमि

मौखिक अभ्यास – 1. मैथिलीशरण गुप्त 2. मातृभूमि की खूबसूरती का। **(क)** 1. इस कविता में मातृभूमि का गुणगान किया गया है। 2. इस कविता के लेखक –''मैथिलीशरण गुप्त'' है। 3. साधारण जीवन बिताने वाला गुणवान व्यक्ति मनुष्य को कहा गया है। 4. कवि ने मातृभूमि को परमात्मा की साकार मूर्ति कहा हैं। 5. मानव शरीर मिट्टी से बना है, और अंत में इसी मिट्टी में मिल जाएगा। **(ख)** 1. ब 2. अ 3. अ **(ग)** 1. करते अभिषेक पयोद है बलिहारी इस वेश की हे मातृभूमि ! तू सत्य ही सगुण मूर्ति सर्वेश की। 2. तेरी ही यह देह इसी से बनी हुई है, बस तेरे ही सुरस-सर से सनी हुई है। **(घ)** छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं करें। **(ङ)** 1. पंक्ति का आशय यह है कि हमारी देह जो तेरे द्वारा दी गई है, वो तुझी से बनी हुई है। 2. सिंहद पुरुष बचपन में ही सभी सुख पाऐं। 3. हे मातृभूमि ! तू ही सत्य और गुणी प्रतिमा है, इस सर्वोपरि राजा की। **(च)** 1. रेखा + अंकित (आ + अ = आ) = रेखांकित 2. वन + आंचल (अ + आ = आ) वनांचल 3. शुभ + इच्छु (अ + इ = ए) = शुभेच्छु 4. नर + ईश (अ + ई = ए) = नरेश 5. अभि + शक (इ + अ = ए) = अभिषेक **(छ)** 1. पक्षी, पतंग, विहंग। 2. सरिता, तटिनी, आपगा। 3. जननी, माँ, अंबा। 4. पुष्प, सुमन, प्रसून। 5. शरीर, तन, काया। 6. समाप्त, खत्म 7. मिट्टी, माटी, रज 8. किनारा, पार 9. कपड़ा, पट, वसन। 10. मेघ, जलद, घन **(ज)** छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं करें। **क्रियाकलाप –** छात्र स्वयं करें।

अध्याय – 2 भारत धर्म-निरपेक्ष राज्य

मौखिक अभ्यास – 1. 26 जनवरी, 1950 को 2. धर्म निरपेक्षता के सिद्धांत से कलह शांत होते जा रहे है क्योंकि भारत में सभी भारतीय नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक अधिकार प्राप्त है। जनता में परस्पर सौहार्द और सद्भावनाएँ उत्पन्न हो गई है। **(क)** 1. धर्म के अबोध साम्राज्य से आशय धर्म तथा धार्मिक अन्धविश्वासों से है। पूर्व में व्यक्तिगत जीवन के अतिरिक्त भारत की राजनैतिक गतिविधियों पर भी धर्म का पूर्ण प्रभुत्व था। 2. धर्मनिरपेक्षता का सिंद्धान्त है कि धर्म किसी एक व्यक्ति की वस्तु नहीं है। इसमें किसी को हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं होना चाहिये। प्रत्येक व्यक्ति को यह स्वतन्त्रता होनी चाहिये कि वह चाहे जिस धर्म का अवलम्बन करे। 3. पाकिस्तान की धर्म सापेक्षता के कारण ही आज वहाँ के असंख्य नर-नारियों का भीषण संहार होते हुए भी बांग्लादेश का निर्माण हुआ। 4. संयुक्त मताधिकार प्रणाली के अन्तर्गत जनता द्वारा सामाजिक रूप से अपने प्रतिनिधि का निर्वाचन किया जाता है और वही व्यक्ति विजयी हो पाता है, जिसको सभी वर्गों और सम्प्रदायों के अधिकतम मत प्राप्त होते हैं। 5. इस कथन से आशय है कि भारत में प्रत्येक व्यक्ति को यह स्वतंत्रता प्राप्त है कि वह किसी भी धर्म का अवलम्बन करें और अपने अधिकारों का पूर्ण प्रयोग करें। इसलिये भारत को धर्म निरपेक्ष राज्य कहा गया है। **(ख)** 1. अ 2. ब 3. स 4. अ 5. ब **(ग)** 1. 26 जनवरी, 1950 2. धर्म निरपेक्ष 3. प्रोटेस्टेण्ट 4. निजी 5. दो शताब्दी **(घ)** 1. धर्म गुरुओं व सामन्तों का धर्म पर आधिपत्य था। इससे परेशान लोग परिवर्तन चाहते थे। समय बदला, व्यक्तिगत प्रभुत्व की प्रचण्ड अग्नि का स्थान प्रजातन्त्र की लहरों ने ग्रहण कर लिया। 2. फ्रांस और स्पेन के राजा कैथोलिक थे तो प्रजा भी कैथोलिक थी। इसलिए यथा राजा तथा प्रजा। **(ङ)** 1. ✗ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓ **(च)** 1. ब 2. स 3. अ 4. य 5. द **(छ)** 2. राष्ट्रीय 3. नैतिक 4. लोभी 5. घृणी 6. दैनिक 7. धार्मिक 8. कुलिश 9. भारतीय 10. स्वदेशी 11. सामाजिक 12. चिंतित **(ज)** 1. पद + अन्यास 2. प्रभ + उत्व 3. राज्य + अभिषेक 4. अनु + यायी 5. अधि + पत्य 6. धर्म + अवलम्बी 7. उत्तर + उत्तर 8. मत + अधिकार **(झ)** 1. युग – अर्थ - सैंकड़ों वर्षों का काल, वाक्य प्रयोग – युग बदलने पर संसार के प्रत्येक देश में कुछ परिवर्तन अवश्य सम्भावी होते है। 2. स्वतंत्रता – आज़ादी, वाक्य प्रयोग – 15 अगस्त, 1947 को हमारा देश अंग्रेजों की गुलामी से स्वतंत्र हुआ। 3. अवलम्बन – धारण करना वाक्य प्रयोग – प्रत्येक व्यक्ति को अपने मन चाहे धर्म का अवलम्बन करने का स्वतंत्र अधिकार है। 4. प्रभुत्व – शासन सत्ता, वाक्य प्रयोग – भारत की राजनैतिक गतिविधियों पर भी धर्म का पूर्ण प्रभुत्व था। 5. अनुयायी – मानने वाले, वाक्य प्रयोग – ईसाई धर्म को मानने वाले ईसा के अनुयायी कहलाते है। 6. पर्दापण – गुप्त रखना, वाक्य प्रयोग – दासियाँ अपने राजाओं की सूचना पर्दापण में रखती थी। 7. हस्तक्षेप – दखलंदाजी, वाक्य प्रयोग – राम गीता के हर मामले में हस्तक्षेप करता है। 8. विद्रोह – विरोध, वाक्य प्रयोग – भारतीयों ने अंग्रेजों का विद्रोह किया। 9. मतावलम्बी – मत के अनुसार, वाक्य प्रयोग – इंग्लैण्ड के राजा मतावलम्बी थे। 10. राजद्रोह – राजा का विद्रोह, वाक्य प्रयोग – जो राजा की बात नहीं मानता उसे राजद्रोह कहा जाता है। **(ञ)** 1. वैभिन्नय 2. भारतीय 3. कैथोलिक 4. राजनीति 5. धर्म-निरपेक्ष 6. उद्घोषणा 7. तत्परता 8. प्रचण्ड 9. धर्मावलम्बी 10. प्रलोभन **(ट)** 1. पिता-पुत्र 2. शोकाकुल 3. गिरहकट 4. नवग्रह-समूह 5. घुड़दौड़ 6. यज्ञशाला 7. पीताम्बर **क्रियाकलाप –** छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं करें।

अध्याय – 3 कपटी मित्र

मौखिक अभ्यास – 1. जामुन के फल का 2. मित्रता सदैव अपनी जैसी प्रकृति वाले के साथ ही करनी चाहिए। **(क)** 1. वानर का नाम रक्तमुख तथा मगर का नाम करालमुख था। 2. करालमुख नामक मगर प्रतिदिन समुद्र से निकलकर उस वृक्ष के नीचे आता और बालू पर बैठता था जिस वृक्ष पर रक्तमुख नामक वानर रहता था। वानर प्रतिदिन मगर को मीठे-मीठे जामुन खिलाया करता था। इस प्रकार दोनों में घनिष्ठ मित्रता हो गयी। 2. वानर ने कहा '' कि हमारे शास्त्रों में कहा गया है कि भोजन के समय जो व्यक्ति अपने घर आ जाए; उसको अतिथिदेव मानकर

स्वागत सत्कार किया जाना चाहिए। जिस घर से अतिथि निराश होकर लौट जाता है, उसके पितृगण और देवता विमुख हो जाया करते हैं।'' 4. करालमुख की पत्नी ने अपने पति के सामने रक्तमुख वानर के हृदय को खाने का विचार बताया। 5. करालमुख ने अपनी पत्नी को समझाने के लिये वानर को अपने भाई का दर्जा दिया और बार-बार पत्नी से कहता, '' तुम्हीं बताओ कि मैं उसे किस प्रकार मार सकता हूँ? वह वृक्ष पर रहता है। बड़ी चंचल प्रकृति का है। मैं धरती की बालू पर बैठा रहता हूँ। मैं पेड़ पर तो चढ़ नहीं सकता। फिर उसे किस प्रकार मारुँ ?'' 6. करालमुख ने रक्तमुख को अपनी उदासी का कारण बताते हुए कहा – '' तुम्हारी भाभी ने आज मुझे बहुत डाँटा-फटकारा है। कहने लगी कि भाई के समान तुम्हारा मित्र नित्यप्रति तुम्हें मीठे फल खिलाता है और फिर मेरे लिये भी भेजता है, उसका आज तक तुमने कोई उपकार नहीं किया। यहाँ तक कि कभी तुम उसे घर पर भी निमंत्रित नहीं कर सके। तुम्हारी इस कृतघ्नता का कोई प्रायश्चित नहीं है। आज तो तुम मेरे देवर को घर पर लेकर ही आना, नहीं तो मुझे जीवित न पाओगे। बस यही मेरी उदासी का कारण है। 7. करालमुख ने मार्ग में रक्तमुख को बताया कि वह उसे झूठ बोलकर वहाँ लाया हैं, क्योंकि उसकी पत्नी यह समझती है कि मीठे जामुन खाकर तुम्हारा हृदय भी उतना ही मीठा हो गया है, इसलिये वह तुम्हारा हृदय खाना चाहती है। 8. वानर ने जीवन बचाने के लिये एक युक्ति सोची और करालमुख से बोला, '' मित्र यदि ऐसी बात थी, तो तुमने मुझे तट पर ही क्यों न बता दिया, मैं जामुन के कोटर में रखे अपने हृदय को साथ लेकर आता। अपनी भाभी को अपना हृदय देते हुए मुझे प्रसन्नता होगी। बिना सारी बात बताए ही मुझे यहाँ ले आए।'' इस प्रकार वानर ने अपनी जान बचाई और वापिस तट पर पहुँच गया। 9. प्रस्तुत पाठ से हमें यह शिक्षा मिलती है, कि हमें मित्रता सदैव अपनी प्रकृति वाले के साथ ही करनी चाहिए। **(ख)** 1. ब 2. अ 3. ब **(ग)** 1. रक्तमुख 2. स्नेहमयी 3. कथा-वार्ता 4. अडिग **(घ)** 5. स्मरण 6. कृतघ्नता **(ङ)** 1. रक्तमुख ने करालमुख से 2. करालमुख ने अपनी पत्नी से 3. करालमुख ने अपनी पत्नी से 4. करालमुख ने रक्तमुख से 5. रक्तमुख ने करालमुख से 6. करालमुख ने रक्तमुख से 7. रक्तमुख ने करालमुख से **(च)** 1. ✗ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✗ **(छ)** 1. स 2. द 3. अ 4. ब **(ज)** 1. स्वागत – सत्कार करना- आदर करना, वाक्य प्रयोग – घर आये अतिथि का सदैव स्वागत-सत्कार करना चाहिए। 2. अतिथि -देव – मेहमान भगवान समान होते है। वाक्य-प्रयोग – शास्त्रों में कहा गया है कि भोजन के समय घर आए को अतिथि-देव मानकर भोजन कराना चाहिये। 3. विमुख होना – रूठ जाना, वाक्य-प्रयोग – जिस घर से अतिथि निराश होकर लौट जाता है, उसके पितृगण और देवता विमुख हो जाते है। 4. कथा- वार्ता – किस्से कहानियाँ बताना, वाक्य प्रयोग – मगर व वानर प्रतिदिन कथा-वार्ता करते थे। 5. प्रायश्चित करना – पछतावा होना । वाक्य-प्रयोग – राम ने गलती करने पर प्रायश्चित करने के लिये श्याम से माफी माँगी। 6. स्मरण करना – याद करना, वाक्य-प्रयोग – हमें नित्य अपना अभ्यास स्मरण करना चाहिये। **(झ)** 1. दोनों 2. वे 3. उसका 4. वह 5. तुम 6. तुम्हारी 7.जो, सो **(ञ)** छात्र स्वयं करें। **(ट)** 1. विशेषण, क्रिया 2. सर्वनाम, संज्ञा, क्रिया, विशेषण **क्रियाकलाप –** छात्र स्वयं करें।

अध्याय – 4 प्रदूषण और पर्यावरण

मौखिक अभ्यास – 1. पर्यावरण में विषैले तत्वों के समावेश से पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है। 2. जल प्रदूषण का मुख्य कारण किसानों द्वारा फसलों में प्रयोग किये जाने वाले कीटनाशकों और रासायनिक खादों से होता है। **(क)** 1. प्रदूषण :- जब पर्यावरण में निहित एक या अधिक तत्वों की मात्रा अपने निश्चित अनुपात से बढ़ जाती है या पर्यावरण में विषैले तत्वों का समावेश हो जाता है, तो वह पर्यावरण प्राणियों के जीवन के लिये घातक बन जाता है। पर्यावरण में होने वाले इस घातक परिवर्तन को ही प्रदूषण कहा जाता है। प्रदूषण मुख्यत: तीन प्रकार का होता है – वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण एवं ध्वनि प्रदूषण। 2. वायु प्रदूषण – वायुमण्डल में विभिन्न गैसों की मात्रा लगभग निश्चित रहती है और अधिकांशत: ऑक्सीजन और नाइट्रोजन ही होती है। औद्योगिक संस्थानों से निकलने वाली सल्फर डाई ऑक्साइड और हाइड्रोजन सल्फाइड गैसें वायुमण्डल में पहुँचकर पुन: वर्षा के जल के साथ घुलकर पृथ्वी पर पहुँचती है और गन्धक का अम्ल बनाती है, जो प्राणियों अन्य पदार्थों को काफी हानि पहुँचाता है। वायु प्रदूषकों में क्लोराइड का भी प्रमुख स्थान है। ये गैसीय पदार्थ एल्युमिनियम के कारखानों में सर्वाधिक मात्रा में पाये जाते हैं। पौधों पर इसका प्रभाव पत्तियों को नष्ट करने के रूप में होता है। साथ ही पारा, सीसा, आसेनिक आदि कार्बनिक यौगिक के कण भी वायु में रहते हैं, जिसका प्रभाव मनुष्य के स्वास्थ्य पर पड़ता है। 3. ध्वनि प्रदूषण :- महानगरों में अनेक प्रकार के वाहन, लाउडस्पीकर, बाजे एवं औद्योगिक संस्थानों की मशीनों के शोर ने ध्वनि प्रदूषण को जन्म दिया है। ध्वनि प्रदूषण से न केवल मनुष्य की श्रवणशक्ति का ह्रास होता है वरन् उसके मस्तिष्क पर भी इसका घातक प्रभाव पड़ता है। 4. प्रदूषण से बचने के लिए निम्नलिखित उपयों पर अमल करना आवश्यक हैं – (अ) वृक्षारोपण का कार्यक्रम तेजी से चलाया जाये और भारी संख्या में नये वृक्ष लगाये जाये। (ब) वनों के विनाश पर रोक लगायी जाए। (स) बस्ती व नगर के समस्त वर्जित पदार्थों के निष्कासन के लिये सुदूर स्थान पर समुचित व्यवस्था की जाये। (द) बस्ती व नगर में स्वच्छता व सफाई की ओर विशेष ध्यान दिया जाए। (य) पेयजल की शुद्धता की ओर विशेष ध्यान दिया जाये। (र) परमाणु विस्फोटों पर पूर्णत: नियंत्रण लगाया जाए। 5. सरकार ने प्रदूषण की समस्या के निराकरण के लिये अनेक उपाय किये हैं, केन्द्रीय जन स्वास्थ्य इंजीनियरी अनुसधान संस्थान के वैज्ञानिकों ने जल व वायु प्रदूषण को रोकने के लिए अनेक बहुमूल्य सुझाव दिये हैं, जिन पर तेजी के साथ अमल भी किया जा रहा है। कारखानों एवं खानों में प्रदूषण रोकने के उपायों की खोज में औद्योगिक विष विज्ञान संस्थान (लखनऊ) और राष्ट्रीय संस्थान (अहमदाबाद) विशेष रूप से प्रयत्नशील है। **(ख)** 1. अ 2. ब 3. अ 4. ब 5. स **(ग)** 1. पर्यावरण 2. विद्यमान 3. वायु, जल और ध्वनि 4. अनिवार्य 5. निराकरण **(घ)** छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं करें। **(ङ)** 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✗ **(च)** 1. ब 2. अ 3. द 4. स **(छ)** 1. प्रदूषण :- प्रदूषण से मनुष्य के स्वास्थ्य और उसके संसाधनों को हानि पहुँचती है। 2. पर्यावरण :- मनुष्य पर्यावरण की उपज हैं। 3. रेडियोधर्मिता :- नरौरा परमाणु बिजली घर में रेडियोधार्मिता के खतरों से बचने के लिये हर संभव उपाय किये गये है। 4. निराकरण :- हमारे देश की सरकार द्वारा प्रदूषण की समस्या के

निराकरण के लिए अनेक उपाय किये गए है। 5. स्वार्थी :- रवि स्वार्थी व्यक्ति है। 6. मूलभूत :- प्रजा को मूलभूत सुविधाएँ मिलनी चाहिए। 7. आबादी :- भारत की आबादी बढ़ती जा रही है। 8. विद्यमान :- हमारे अन्दर देशभक्ति की भावना विद्यमान है।**(ज)** 1. निर् 2. अनु 3. अ 4. परा 5. वि 6. अप 7. प्र 8. निर् **(झ)** 1. अनियमित 2. रेगिस्तान 3. जीवनदायी 4. वृक्षारोपण 5. प्रतिकूल **(ञ)** 1. मखमली घास पर चलने से थकावट भी दूर हो जाती है। 2. वृक्ष के काटने से मनुष्य एवं प्राणियों का जीवन भी खतरें में पड़ जाता है। 3. संतुलित पर्यावरण प्राणियों के जीवन के लिए घातक नहीं है। **(ट)** 1. पर् + आवरण 2. सम + आवेश 3. सर्व + अधिक 4. नि: + आकरण 5. अन्तर + राष्ट्रीय 6. तथा + अपि 7. उत् + यौगिक **क्रियाकलाप –** छात्र स्वयं करें।

अध्याय – 5 आनुवंशिकता

मौखिक अभ्यास – 1. पैतृकता के लक्षणों का संतान में आना ही अनुवांशिकता कहलाता है। 2. अनुवांशिकता की खोज ग्रेगर जॉन मेंडल ने की। **(क)** 1. पैतृकता के लक्षणों का संतान में आना ही आनुवांशिकता कहलाता हैं। 2. आनुवंशिकता की खोज की प्रेरणा ग्रेगर जोहन मेंडल को अपने पिता के साथ खेती-बाड़ी करते हुए आई। 3. जोहन मेंडल के पिता एक गरीब किसान थे। जॉन मेंडल के पिता ने परिवार के खर्चों को कम करके उसे चार वर्ष तक कॉलेज की शिक्षा दिलाई । 4. जॉन मेंडल ने आनुवांशिकता की खोज का प्रारंभ मटर के पौधे से किया। 5. जॉन मेंडल ने सेंट ग्रेगरी के सम्मान में ग्रेगरी नाम धारण किया। 6. मेंडल के सिद्धान्तों के अनुसार पौधे के प्रभावी व अप्रभावी लक्षण :- ग्रेगर जॉन मेंडल ने पीले बीजों की मटर को हरे बीजों की मटर के साथ संकरित किया। उसने देखा कि उनसे पैदा हुई पहली पीढ़ी के सब पौधों के बीज पीले थे। उससे अगली पीढ़ी के पौधों में तीन पीले और एक हरा था। यहाँ पीला 'प्रभावी' और हरा 'अप्रभावी लक्षण था। 7. जॉन मेंडल के कार्यों व उपलब्धियों को पहली बार विश्व के सामने तीन यूरोपीय वैज्ञानिकों ने प्रस्तुत किया तथा उसके परिणामस्वरुप मेंडल के सिद्धांत कृषकों के लिये बहुत ही उपयोगी सिद्ध हुए। 8. जॉन मेंडल की मृत्यु सन् 1884 में हुई। 9. ग्रेगर जॉन मेंडल की खोज से विश्व को कई लाभ प्राप्त हुए – जिनमें से मेंडल के सिद्धान्त कृषकों के लिए बहुत ही उपयोगी सिद्ध हुए। इसमें गेहूँ, मक्का और दूसरी फसलों की अच्छी किस्में तैयार की जा सकती है। स्वस्थ पशुओं का उत्पादन किया जा सकता है। **(ख)** 1. अ 2. ब 3. स 4. अ 5. स **(ग)** 1. आनुवांशिकता 2. ग्रेगर जॉन मेंडल 3. किसान 4. बगीचा 5. प्रभावी 6. पादरी **(घ)** 1. गोमती शर्मा ने अपनी पुत्री प्रिया से कहा। 2. अशोक ने गोमती शर्मा से कहा। 3. अशोक ने गोमती शर्मा से। 4. प्रिया ने अपनी माँ गोमती शर्मा से पूछा। 5. प्रिया ने अपनी माँ गोमती शर्मा से पूछा। **(ङ)** 1. ✗ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓ **(च)** 1. स 2. द 3. अ 4. य 5. ब **(छ)** 1. आनुवांशिकता – मधुमेह रोग आनुवांशिकता से भी होता है। 2. सोचमग्न – राहुल सोचमग्न बैठा है। 3. पैतृकता – रवि में पैतृकता के काफी लक्षण है। 4. प्रेरणा – हमें महापुरुषों को जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए। 5. अध्ययन – किताबों के अध्ययन से ज्ञान बढ़ता है। **(ज)** 1. व्याख्याता 2. अध्यापक 3. उपदेशक 4. आनुवांशिक 5. माली 6. अपरिवर्तनीय **(झ)**1. मंदवृद्धि 2. अपरिचित 3. सम 4. विपन्न 5. विलक्षण 6. मातृक 7. दु:खी 8. उपेक्षा 9. असमय 10. अनुचेष्टा **(ञ)** छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं करें। **(ट)** छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं करें। **क्रियाकलाप –** छात्र स्वयं करें।

अध्याय – 6 काबुलीवाला

मौखिक अभ्यास – 1. रहमत 2. हाँ 3. 5 वर्ष की 4. हाँ **(क)** 1. काबुलीवाला कंधे पर मेवों की झोली लटकाए, हाथ में अंगूर की पिटारी लिये किशमिश, बादाम बेचने आया करता था। 2. मिनी पाँच साल की छोटी-सी लड़की थी, जिससे घड़ीभर भी बोले बिना नहीं रहा जाता था। 3. जब मिनी काबुलीवाले को आवाज देकर चली गई, तो उसके पिता से उसे बुलवा लिया। काबुलीवाले ने झोली में से किशमिश और बादाम निकालकर मिनी को देना चाहा पर उसने कुछ नहीं लिया। डरकर वह अपने पिता के घुटनों से चिपट गई और इसी तरह मिनी और काबुलीवाले का परिचय हुआ। 4. सिपाहियों ने काबुलीवाले को पड़ोस में रहने वाले एक आदमी को छुरा मारने के अपराध में पकड़ा था। 5. जेल से आने पर रहमत ने लेखक से कहा- ''जरा बच्ची को नहीं देख सकता ?'' 6. मिनी को देखने के बाद रहमत गहरी साँस भरकर जमीन पर इसलिए बैठ गया, क्योंकि उसे एकाएक अपनी बेटी की याद आई कि उसकी बेटी भी इतने दिनों में बड़ी हो गई होगी। इन आठ वर्षों में उसका क्या हुआ, कौन जाने ! 7. मिनी के पिता ने रहमत को अपने देश उसकी बेटी से मिलने जाने के लिए कहा। **(ख)** 1. ब 2. ब 3. अ **(ग)** 1. काबुलीवाले, काबुलीवाले 2. किशमिश-बादाम 3. ससुराल 4. अपराध 5. अर्थ **(घ)** 1. मिनी ने अपने पिता से कहा। 2. रहमत ने मिनी से कहा। 3. रहमत काबुलीवाले ने मिनी के पिता से कहा। 4. मिनी के पिता ने रहमत से कहा। **(ङ)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓ **(च)** 1. ब 2. स 3. अ **(छ)** 1. क्रिया – निकाला, लौट आया 2. विशेषण – पुरानी, थोड़ा 3. भाववाचक संज्ञा – हँसी, भरी 4. व्यक्तिवाचक संज्ञा – काबुलीवाला, मिनी **(ज) क्रिया =** 1. बेचना 2. पाँच बरस 3. शोर करना 4. दहाड़ना 5. चले जाना 6. स्कूल जाना **कर्म =** 1. मेवा2. लड़की 3. शोर 4. जोर से 5. शोर 6. स्कूल **कर्त्ता =** 1.काबुलीवाला 2. मिनी 3. बच्चे 4. शेर 5. पिताजी 6. मिनी **(झ)** 1. गीता की बहिन सीता बोलने-चालने में बहुत सरल स्वभाव की है। 2 .एक वयस्क अपना अच्छा-भला खुद समझ सकता है। 3. राम ने कागज को चार बार उलट-पलट कर पढ़ा। 4. श्याम द्वारा कक्षा में ज्यामितिय चित्र टेढ़ा-मेढ़ा बनाया गया। 5. नशेड़ी व्यक्ति नशे के हाल में गिरता-पड़ता यहाँ आया। **(ञ)** 1. घड़ीभर = क्षणभर के लिए। प्रयोग- राम से घड़ीभर भी बोले बिना नहीं रहा जाता है। 2. परिचय = जान-पहचान। प्रयोग- मोहन के साथ घूमते-घूमते उसके मित्रों से राम का परिचय भी हो गया। 3. पिटारी = टोकरी। प्रयोग- राम की पिटारी में सदैव टोफियाँ रहती है। 4. झोली = गोद। प्रयोग- काबुलीवाले ने मिनी की झोली मेवों से भर दी। 5. सौदा = व्यापार। प्रयोग- सीता व गीता ने आपस में कपड़े खरीदने व बेचने का सौदा तय किया। 6. कालिख = लज्जित होना। प्रयोग- राम ने चोरी करके समाज के सामने अपने मुँह पर कालिख लगा ली। **(ट)** तत्सम- हृदय, मस्तक, धैर्य, काक, आश्चर्य, रात्रि, हस्ती, ग्राहक, क्षेत्र, काष्ठ, जोगी। तद्भव- बात, घर, हँसी, आठ, आठ हाथ **क्रियाकलाप –** छात्र स्वयं करें।

अध्याय – 7 दुर्गा-पूजा

मौखिक अभ्यास – 1. बंगाल की दुर्गापूजा महोत्सव विश्व-प्रसिद्ध हैं। 2. अश्विन मास (सितम्बर और अक्टूबर महीने में) 3. कार्तिक मास की अमावस्या (अक्टूबर या नवम्बर महीन में) 4. विजयादशमी **(क)** 1. शरद ऋतु का आगमन होते ही, हवाएँ ठण्डी और शुष्क हो जाती है। रातें अधिक लंबी और दिन छोटे हो जाते हैं। शरद ऋतु का आगमन अपने साथ दुर्गा-पूजा का त्यौहार लेकर आता है। 2. बंगालियों का सबसे बड़ा पर्व ''दुर्गा-पूजा'' है। 3. दशमी को अतिरिक्त ''विजयदशमी'' के नाम से भी जाना जाता है। 4. दुर्गा-पूजा के संबंध में एक धार्मिक कथा प्रचलित है कि एक बार देवताओं और असुरराज महिषासुर के बीच संग्राम हुआ, जो कि लगभग सौ वर्ष तक चलता रहा, अंतत: महिषासुर ने देवताओं को पराजित कर स्वर्ग पर अपना अधिकार कर लिया। तब सभी देवता ब्रह्मा जी के नेतृत्त्व में भगवान विष्णु के पास पहुँचे। भगवान विष्णु एवं शिव के तेज से एक ज्योति पुँज प्रकट हुआ, जिसे सभी देवताओं ने अपना पुण्य-तेज एवं अस्त्र-शस्त्र प्रदान किये। इस विराट ज्योतिपुँज को ही ''माँ दुर्गा'' कहकर पुकारा गया, जिसने अपने प्रताप से महिषासुर का वध किया। 5. दुर्गा-पूजा की पहले से ही सारी तैयारियाँ शुरू हो जाती है। बाजार तथा घर सभी दुल्हन की भांति सजे-सँवरे होते हैं। लोगों में हर्षोल्लास उमड़ पड़ता है। नौ दिनों तक दुर्गा-पूजा का उत्सव मनाया जाता है। मित्रों व संबंधियों के लिए सुंदर-सुंदर उपहार खरीदे जाते हैं। स्वादिष्ट पकवान खाए-खिलाए जाते हैं। दान-पुण्य भी खूब किया जाता है। 6. पंडाल में देवी दुर्गा के साथ ही लक्ष्मी एवं सरस्वती की मूर्तियाँ भी होती हैं। इसके अतिरिक्त शिव परिवार के सदस्यों जैसे गणेश एवं कार्तिकेय की भी पूजा-अर्चना होती है। 7. देवी दुर्गा, लक्ष्मी एवं सरस्वती की पूजा में संदेश यह छुपा हुआ है कि मानव को अपनी शक्ति, समृद्धि एवं ज्ञान का सदैव सकारात्मक उपयोग ही करना चाहिए। 8. मूर्ति को अधिक चमकदार बनाने के लिए लोग प्लास्टर ऑफ पेरिस, प्लास्टिक व अन्य तेज रसायनों का उपयोग करने लगे है, जिससे केवल दृष्टि-लाभ के कारण हमारे पर्यावरण के लिए संकट खड़ा हो गया है, क्योंकि जब पूजन समाप्त होने के बाद इन मूर्तियों को समुद्रों व नदियों में विसर्जित किया जाता है, तो उन स्थानों पर रहने वाले जीव इससे बुरी तरह से प्रभावित होते है। **(ख)** 1. स 2. स 3. स 4. ब **(ग)** 1. प्रस्तुत पंक्ति से लेखक का आशय यह है, कि शक्ति रूपी माँ दुर्गा, जिन्हें ''जगद्जननी'' अर्थात् संसार का निर्माण करने वाली भी कहा जाता है कि उपासना करने का शरद नवरात्रा का समय बहुत ही विशेष और मंगलकारी होता है। 2. इस पंक्ति से आशय यह है, कि जब महिषासुर का वध करने के लिए भगवान विष्णु एवं शिव के तेज से एक अवतार प्रकट हुआ, जिसे सभी देवताओं ने अपने अस्त्र-शस्त्र दिये थे। इसी अवतार रूपी ज्योति-पुंज को माँ दुर्गा का नाम दिया गया था। 3. पंक्ति से आशय है कि दुर्गा पूजा का महोत्सव शुरू होता है, तो उससे कई दिन पहले ही लोगों द्वारा अपने घरों एवं बाजारों को इस तरह सजाया जाता है, मानों किसी दुल्हन को सजाया गया हो। 4. पंक्ति से आशय यह है कि मानव को अपनी सभी शक्तियों का प्रयोग सकारात्मक तरीके से ही करना चाहिए। उनका प्रयोग कभी भी किसी के बुरे के लिये नहीं करना चाहिए। शक्ति के साथ-साथ मानव को समृद्धि, प्रसिद्धी एवं ज्ञान का भी सदैव अच्छे कार्यों के लिए प्रयोग करना चाहिए। 5. पंक्ति से आशय है कि आज के युग में लोगों ने दिखने में सुन्दर लगने के लिए हर चीज को ऐसा बनाना चाहा है, जिसमें कुछ रासायनिक पदार्थों का मिलन होने से वे चीजें हमें किसी भी रूप में नुकसान पहुँचाती है जैसे मूर्ति विसर्जन के पश्चात् रासायनिक पदार्थ पानी में मिलकर उन सभी जीवों को नुकसान पहुँचाते है, जो उसे पीते हैं। **(घ)** 1. दुर्गा-पूजा 2. बंगाल 3. विजयदशमी 4. माँ दुर्गा 5. संयुक्त 6. नौ 7. भेदों 8. कण-कण **(ङ)** 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗ 6. ✓ 7. ✓ **(च)** 1. दानव 2. दिन 3. अमंगल 4. अनास्था **(छ)** 1. नेतृत्व, नेतृत्वता 2. कवित्व, कवित्वता 3. महत्व, महत्ता 4. भ्रातृत्व, भ्रातृत्वता 5. सुंदरत्व, सुंदरता **(ज)** 1. हर्षोल्लास = ह + अ + र् + ष् + औ + ल् + ल् + आ + स् + अ 2. प्रसिद्ध = प् + र + स् + इ + द् + अ + ध् 3. ब्रह्म = ब् + र + ह् + अ + म् 4. समृद्धि = स् + अ + म् + ऋ + द् + इ + ध् 5. त्यौहार = त् + य् + औ + ह् + आ + र् + अ **(झ)** 1. पारिवारिक 2. सामाजिक 3. श्रमिक 4. मासिक 5. शाब्दिक 6. विशेषता 7. सांकेतिक 8. देहिक 9. स्वर्गीय 10. मौलिक **(ञ)** 1. नौ दिन तक पूजा हेतु नौकर से पंडाल लगवाये जाते है। 2. अमर अध्यापक से पढ़ता है। 3. मैं क्लर्क से पत्र लिखवाती हूँ। 4. कृष्णन् प्रिया के साथ बंगाल जाएगा। 5. रमा नौकर से नदी में कूड़ा डलवाती है। **(ट)** 1. ख 2. ख 3. ग 4. घ 5. घ **क्रियाकलाप –** छात्र स्वयं करें।

अध्याय – 8 प्रत्येक कार्य महत्त्वपूर्ण है

मौखिक अभ्यास – 1. समाज का निर्माण एक-एक व्यक्ति के सहयोग से होता है। 2. ''देखते नहीं हो, दीवार बना रहा हूँ।'' **(क)** 1. मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति के सहयोग से ही समाज का निर्माण होता है और उस समाज में ही हम सब रहते है। व्यक्ति अलग-अलग रहकर समाज का निर्माण नहीं कर सकता है, इसलिए मनुष्य को एक सामाजिक प्राणी कहा गया है। 2. प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में उच्च पद अथवा अधिक सुविधा सम्पन्न स्थान की ही अपेक्षा इसलिए रखता है, क्योंकि व्यक्तियों का यह मानना होता है, कि उच्च पद से ही हमें समाज में सम्मान मिलेगा। निम्न पद और निम्नवर्गीय महत्वहीन है। 3. यदि एक सफाई कर्मचारी अपने कार्य को हीन मानकर उदासीन हो जाए, तो हमारे आस-पास का परिवेश और मुहल्ला धीरे-धीरे सारा गंदगी के ढेर में बदल जाएगा। तब उस परिवेश की प्रदूषित वायु से कोई भी सुरक्षित नहीं रह पायेगा। 4. किसी भी व्यक्ति का वास्तविक सम्मान उसके द्वारा किये जाने वाले कार्य में ही निहित होता है। यदि हर व्यक्ति अपने छोटे से छोटे कार्य को इतना ही सम्मान देकर पूर्ण समर्पण के साथ करे तो केवल एक समाज क्या पूरा विश्व उस आदर्श के खाके में समा सकता है, जिसकी रूपरेखा अपने-अपने मस्तिष्क में हम सभी बनाते हैं। 5. महापुरुष द्वारा पूछे गये प्रश्न का तीसरे व्यक्ति ने जवाब दिया कि ''मैं एक बहुत सुंदर भवन की दीवार बना रहा हूँ, जो भविष्य में लोगों के लिए बहुत ही उपयोगी सिद्ध होगी।'' इस उत्तर में व्यक्ति के खुशी के भाव तथा अपने कार्य के प्रति लगन, उत्साह के भाव छुपे थे। **(ख)** 1. अ 2. ब 3. अ 4. स **(ग)** 1. सामाजिक 2. महत्त्वपूर्ण 3. समाज 4. सम्मान, विश्व 5. महत्त्वपूर्ण, सम्मानित **(घ)** 1. ✗ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✗ **(ङ)** 1. इस पंक्ति से आशय यह है कि जब सभी व्यक्ति आपस में मिलेंगे तभी एक समाज बनेगा। अर्थात् एक-एक व्यक्ति मिलकर ही समाज का निर्माण कर सकते हैं।

एक अकेले व्यक्ति से समाज नहीं बनता है। 2. इस पंक्ति से आशय यह है कि पेड़ जब हरा-भरा बनता है, तो उसमें सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य जड़ों का ही होता है। जड़ें ही पानी सोखकर पूरे वृक्ष को भोजन प्रदान करती है और जड़ों के इस प्रकार अदृश्य कार्यों से ही पेड़ की हरीतमा देखते बनती है और हरे-भरे पेड़ सबका मन मोह लेते है। **(च)** 1. स 2. द 3. ब 4. य 5. अ **(छ)** 1. हाथ धोना = खो देना। प्रयोग- खेल ही खेल में वह अपने प्राणों से हाथ धो बैठा। 2. सिर पर पड़ना = बिना बात की मुसीबत आना। प्रयोग- जब रामू ने चोरी की घटना सुनाई तो चोरी उसी के सिर पर पड़ गई। 3. चमत्कारिक परिवर्तन आना = बदलाव आना। प्रयोग- मोहन के विद्यालय बदलते ही उसमें इतना चमत्कारिक परिवर्तन आया कि वह प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुआ। 4. उलट-पुलट करना = काम बिगाड़ देना। प्रयोग- जब तुम्हारा काम करने का मन नहीं था तो सब उलट-पुलट क्यों किया? 5. आडंबर में पड़ना = अंधविश्वास में पड़ जाना। प्रयोग- गाँव के लोग आज तक भी आडंबर की दुनिया में जीते है। 6. खाका बनाना = ढाँचा- रूपरेखा तैयार करना। प्रयोग- राम अपनी बातें सुनाने के लिए खाका बना रहा था। **(ज)** 1. समाज + इक = सामाजिक 2. आवश्यक + ता = आवश्यकता 3. नीति + इक = नैतिक 4. शरीर + इक = शारीरिक 5. मानस + इक = मानसिक 6. देवी + इक = दैविक उपसर्ग- सम् आ मूल शब्द- समाज, आवश्यक, नीति, शरीर, मानस, देवी। प्रत्यय- इक, ता, इक, इक, इक, इक **(झ)** भाववाचक संज्ञा – शब्द परिश्रम, संतोष, मानव, प्रज्जवल, भला, पंजाब, बुद्धि, मूल, साहस, शब्द भाववाचक संज्ञा- परिश्रमी, संतोषी, प्रज्जवली, साहसी, शाब्दिक, विशेषण- मानवी, भलाई, पंजाबी, बुद्धि, मौलीय **(ञ)** 1. प्रत्यक्ष = सामने, समक्ष, सम्मुख 2. व्यक्ति = मानव, इंसान, आदमी 3. आडंबर = ढोंग, दिखावा, अंधविश्वास 4. श्रमिक = मजदूर, कामदार, कर्मी 5. खाका = ढ़ाँचा, नक्शा, रूपरेखा **(ट)** शिक्षित, प्रशिक्षित, सम्मानित, उपेक्षित, उचित **क्रियाकलाप –** छात्र स्वयं करें।

अध्याय – 9 ग्रामोत्थान

मौखिक अभ्यास – 1. भारत के गाँव प्राचीन सभ्यता और संस्कृति के प्रतीक है। 2. आज भी देश की 69% जनता गाँवों में रह रही है। **(क)** 1. प्राचीनकाल में गाँवों में निर्धनता, बेरोजगारी और भूखमरी अत्यधिक मात्रा में व्याप्त थी। जीवनयापन की स्वस्थ प्रणाली से ग्रामवासी अपरिचित थे। प्रतिवर्ष अनेक मनुष्यों की मृत्यु अकाल के कारण हो जाती थी। व्यक्तियों के मन में आगे बढ़ने की इच्छा भी नहीं होती थी। प्रेरणाओं की भी कमी थी। स्वच्छता और आर्थिक स्थिती के साथ-साथ ग्रामवासियों में शिक्षा की प्रबल समस्या थी। अन्धविश्वास और अशिक्षा का पूर्ण साम्राज्य था। 2. ग्रामीणों की दशा में परिवर्तन लाने की लिये गाँधीजी ने सन् 1937 में एक ग्राम सुधार विभाग स्थापित किया और प्रत्येक जिले में दस से लेकर पंद्रह तक ग्राम सुधार केन्द्रों की स्थापना की गई थी। किसानों की उन्नति के लिये एक विकास कमिश्नर भी नियुक्त किया गया था। 3. स्वाधीनता प्राप्ति के पश्चात् ग्रामीण विकास कार्यों को दो भागों में विभाजित किया गया था- प्रथम- विभागीय कार्यक्रम जो सरकार द्वारा बनाये जाते थे, दूसरे- जन कार्यक्रम जो जनता द्वारा बनाये जाते थे। 4. अग्रगामी विकास योजना- इस योजना की शुरुआत सन् 1948 में उत्तर प्रदेश की सरकार द्वारा की गई थी। इस योजना का मुख्य उद्देश्य ग्रामीणों को स्वालम्बी बनने की शिक्षा देना, आधुनिक यंत्रों से कृषि उपज को बढ़ाने की तकनीक का ज्ञान देना, पशु-पालन तथा स्वास्थ्य एवं समृद्धि के नियमों में दक्ष बनाना, प्रोढ़ों को शिक्षित करना आदि थे। 5. सामुदायिक योजनाओं के प्रमुख कार्य शिक्षा, समाज शिक्षा, कृषि, सिंचाई, पशुपालन, जनस्वास्थ्य, यातायात और कुटीर उद्योग-धन्धे आदि थे। 6. राष्ट्रीय सरकार ने कृषकों को सिंचाई की नई सुविधाएँ प्रदान की, जिनमें गाँव-गाँव में ट्यूबवैल लगवाये गये। कुओं, तालाबों और नहरों के अतिरिक्त नदियों तथा झीलों के भी उपयोग इसमें सम्मिलित कर लिए गए। 7. गाँवों के आर्थिक विकास के लिए, एक गाँव को दूसरे गाँव के निकट लाने के लिए सड़क बनाई जा रही है। ग्रामीण उद्योगों को पुन: विकसित किया जा रहा है। शिक्षा के प्रसार के लिए एक-एक मील पर प्राइमरी स्कूल, मिडिल स्कूल और प्रौढ़ पाठशालाओं की स्थापना की जा रही है। 8. शिक्षा के प्रसार के लिए एक-एक मील पर प्राइमरी स्कूल खोले गए है। मिडिल स्कूल और प्रौढ़ पाठशालाओं की स्थापना की जा रही है, जिससे ग्रामीण समाज शिक्षा, स्वास्थ्य रक्षा तथा स्वच्छता आदि के नियमों को समझ सकें। 9. ''भारतीय सरकार भारतीय नागरिकों के जीवन को उन्नत बनाने के लिए निरन्तर प्रयत्नशील हैं।'' क्योंकि भारत सरकार द्वारा समय-समय पर विभिन्न कार्यक्रम चलाए जा रहे है, योजनाएँ बनाई जा रही है, जिससे ग्रामीणों का विकास हो सके। उन्हें रोजगार के नए साधन मिल सके। **(ख)** 1. ब 2. अ 3. ब 4. स 5. अ **(ग)** 1. विशाल 2. आत्मा 3. अवलम्बित 4. पशु चिकित्सकों 5. अग्रगामी **(घ)** 1. उक्त पंक्ति से आशय यह है, कि भारत की अधिकतम जनसंख्या गाँवों में निवास करती है और वह आज भी अपने रूढ़िवादी तरीके से ही जीवन यापन कर रही है। इसलिए यदि गाँवों का विकास होगा तो भारत का विकास स्वत: ही होगा। 2. उक्त पंक्ति में शरीर शब्द राष्ट्र के लिए तथा आत्मा शब्द गाँवों के लिए प्रयुक्त किया गया है, अर्थात् आत्मा के स्वस्थ होने पर ही सम्पूर्ण शरीर में नवचेतना और नवजाग्रति उत्पन्न हो सकती है। इसलिए गाँवों को भारतवर्ष की आत्मा और राष्ट्र को उसके शरीर की संज्ञा दी गई है। गाँधीजी भी कहा करते थे, ''भारत का हृदय गाँवों में बसता है, गाँवों की उन्नति से ही भारत की उन्नति हो सकती है। गाँवों में ही सेवा और परिश्रम के अवतार किसान बसते हैं।'' **(ङ)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓ **(च)** 1. ब 2. अ 3. य 4. स 5. द **(छ)** 1. कलंक 2. अवनति 3. निम्न 4. नवीन 5. अलाभान्वित 6. दुर्गम 7. निराकार 8. कभी-कभी 9. अपर्याप्त 10. पुराना 11. प्रारम्भ 12. कुपरिणाम **(ज)** 1. अहनिश = अ: + इनिश 2. दुष्परिणाम = दु: + परिणाम 3. अज्ञानता = अ + ज्ञानता 4. सर्वांगीण = सर्व + आंगीण 5. अवलम्बित = अव् + लम्बित 6. द्रव्योपार्जन = द्रव्य + उपार्जन 7. पौर्वात्य = पौर् + वात्य 8. ग्रामोत्थान = ग्राम + उत्थान 9. लाभान्वित = लाभ + आन्वित 10. अग्रगामी = अग्र + गामी **(झ)** 1. सुजान, सुव्यवस्थित 2. अवशेष, अवनति 3. विशेष, विशाल 4. प्रयोग, प्रयत्न **(ञ)** 1. ग्रामीण 2. क्रांतिकारी 3. एकता 4. अध्ययनरत 5. अपमानित 6. घरेलू **(ट)** 1. समाज + इक = सामाजिक 2. नीति + इक = नैतिक 3. मानस + इक = मानसिक 4. देवी + इक = दैविक 5. आवश्यक + ता = आवश्यकता 6. शरीर + इक शारीरिक। उपसर्ग सम्, आ मूल शब्द- समाज, नीति, मानस, देवी, आवश्यक, शरीर। प्रत्यय- इक, इक, इक, इक, ता, इक **क्रियाकलाप –** छात्र स्वयं करें।

अध्याय – 10. उपभोक्ता सरंक्षण

मौखिक अभ्यास – 1. उपभोक्ता संरक्षण कानून वह कानून है, जिसके अन्तर्गत उपभाक्ताओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरुक करने के साथ-साथ उनके हितों की भी रक्षा की जाती है। 2. क्योंकि इन कानूनों से उपभोक्ता के हितों को संरक्षण मिलता है। **(क)** 1. रजनी एक उपभोक्ता थी और उसे गुस्सा इसलिए आ रहा था, क्योंकि उसने एक दुकानदार से अचार की शीशी खरीदी थी तथा वह अचार खराब निकला और दुकानदार ने उसे वापिस करने से इन्कार कर दिया तो रजनी को गुस्सा आ गया। 2. अधिकतर लोग छोटी-सी खरीदारी के लिये दुकानदार से बिल नहीं लेते है और आगे सामान में परेशानी आने पर पछताते है। 3. खरीदारी से पहले जागरूकता दिखाने से लाभ यह होगा कि दुकानदार न तो आपको उससे मिलते-जुलते नाम अथवा पहचान वाली वस्तु देकर ठग पाएँगे और न ही अधिक मूल्य वसूल कर सकेंगे। 4. गारन्टी कार्ड के कारण आप भविष्य में वस्तु की खराबी की स्थिति में उसे वापस कर सकते हैं। गारंटी कार्ड में उस वस्तु से जुड़ी जानकारियाँ, उसकी खरीद पर मिलने वाले लाभ व सुविधाएँ तथा उनकी अवधि अंकित होती है, जबकि वारंटी कार्ड में केवल उस उपकरण आदि का विवरण व सामान्य सुविधाओं के संबंध में जानकारी दी होती है। 5. दुकानदार के मुद्रित बिल से बचने का प्रयास करने के दो उद्देश्य हो सकते है एक- उस वस्तु की गुणवत्ता संदेहस्पद हो तथा दूसरा दुकानदार आयकर देने से बचना चाहता हो। 6. केन्द्रीय मानक ब्यूरों- मिलते-जुलते नाम अथवा लेबल वाली वस्तुएँ खरीदने अथवा प्रयोग करने से पहले उनके बारे में पूरी जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए। वस्तु की गुणवत्ता तथा स्तर का पता उसके मानक-चिह्नों से भी लग सकता है। यह मानक चिह्न ''केन्द्रीय मानक ब्यूरों''द्वारा उस वस्तु के स्तर को देखते हुए जारी किये जाते है। 7. उपभोक्ता सरंक्षण कानून के अन्तर्गत उपभोक्ताओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करने के साथ-साथ उनके हितों की रक्षा भी की जाती है। वर्तमान समय में इस कानून की उपयोगिता इस दृष्टि से भी बढ़ जाती है, कि अब भारतीय उपभोक्ता एवं भारतीय बाजार न केवल देशी वरन् विदेशी व्यापारियों के भी आकर्षण का केन्द्र बन चुके है। **(ख)** 1. ब 2. अ 3. स 4. अ 5. अ **(ग)** 1. प्रस्तुत पंक्ति से लेखक का आशय यह है, कि आज के समय में पैसा कमाने के चक्कर में व्यापारियों तथा दुकानदारों ने लूट मचा रखी है। इसके अलावा ऐसे दुकानदार मूल्य चुकाने के बाद भी वस्तुऐं सही रूप से नहीं देते है। 2. इस पंक्ति से आशय यह है कि वर्तमान समय के दुकानदारों का पेट कभी भी तृप्त नहीं होता है। उन्हें हमेशा ज्यादा का लालच होता है। वे ग्राहकों से मनचाहा पैसा वसूल करते है और ग्राहकों को संतुष्ट भी नहीं करते है। 3. प्रस्तुत पंक्ति से लेखक का आशय यह है, कि जब रजनी दुकानदार से बिना बिल का अचार खरीद कर ले गयी और जब उसने बिना जाँचे परखे उस अचार को मेहमानों के सामने परोस दिया तो वह अचार खराब निकला, क्योंकि दुकानदार ने उसे पुराना एवं खराब अचार बेचा था, जिससे उसे मेहमानों के सामने शर्मिन्दी उठानी पड़ी। 4. इस पंक्ति से आशय यह है, कि जब आप कहीं से भी कुछ भी सामान खरीदते है, तो उसका पक्का बिल जरूर लेना चाहिए, जिससे आगे कोई परेशानी न हो, क्योंकि जब हम खरीदारी करते है, तो वह केवल छोटी या बड़ी खरीदारी पर ही सीमित नहीं होती है, बल्कि वह हमारी कमाई का सदुपयोग है, जिस कमाई को हमने कड़ा परिश्रम करके कमाया है। 5. प्रस्तुत पंक्ति से आशय यह है, कि हमें खरीदारी के वक्त की सारी जागरूकता तथा जो भी मोल-भाव है, उसी में फंसे नहीं रहना चाहिए, बल्कि खरीदारी से पहले भी हमें थोड़ी जागरूकता दिखानी चाहिए और सामान को पूरी तरह से जाँच-परख कर ही खरीदना चाहिए। **(घ)** 1. दाढ़ी 2. पैकिंग 3. मानक-चिह्नों 4. उपभोक्ता 5. सरंक्षण **(ङ)** 1. ✗ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✗ **(च)** 1. अंधेर मचना = मनमानी होना, लूट-खसोट होना। प्रयोग- वर्तमान समय में कानून का भय समाप्त होने से बाजार में दुकानदारों ने अंधेर मचा रखी है। 2. सुरसा का मुँह होना = अधिकाधिक मात्रा होना। प्रयोग- बढ़ती जनसंख्या के इस दौर में मँहगाई सुरसा के मुँह की तरह बढ़ती जा रही है। 3. पेट में दाढ़ी होना = बात छुपाना। प्रयोग- लालची व स्वार्थी व्यक्ति के पेट में दाढ़ी होती है। 4. आसमान सिर पर उठाना = बेवजह शोर करना, ऊद्यम करना। प्रयोग- दुर्घटना में राम कै पैर में मामूली खरोंच आने पर उसने तो आसमान ही सर पर उठा लिया। 5. हाथ पर हाथ धरे बैठना = कुछ नहीं करना। प्रयोग- महेन्द्र बेरोजगार होते हुए भी हाथ पर हाथ धरे बैठा रहता है। **(छ)** 1. वार्षिक 2. संवैधानिक 3. वैज्ञानिक 4. सांसारिक 5. दैहिक 6. पारंपरिक 7. प्राकृतिक **(ज)** छात्र स्वयं करें। **(झ)** 1. सत्यवादी 2. प्रसिद्ध 3. सामाजिक 4. कर्त्तव्यपरायण 5. सर्वप्रिय **(ञ)** 1. राष्ट्रीय 2. वार्षिक 3. सामाजिक 4. सुखी 5. कुलिश 6. घृणित **(ट)** 1. अचरज 2. जोश 3. कार्य 4. अन्जान 5. अंधेरा 6. दिल 7. कान 8. खरीददार 9. बनिया 10. बात 11. गिरह 12. माथा

क्रियाकलाप – छात्र स्वयं करें।

अध्याय – 11. कर्मवीर

मौखिक अभ्यास – 1. अयोध्या सिंह उपाध्या 'हरिऔध' 2. इस कविता से प्रेरणा मिलती है कि वीर व्यक्ति कभी बुरी परिस्थिति को स्वयं पर हावी नहीं होने देते, बल्कि स्वयं उन पर हावी हो जाते है। **(क)** 1. संकट के समय वीर व्यक्ति कभी भी नहीं घबराते है। 2. कर्मवीर अपने बुरे समय को अच्छा तब ही बना पाते है, जब वे बड़ी-बड़ी बाधाओं से भी घबराते नहीं है और भाग्य के भरोसे नहीं रहते है तथा कठिन से कठिन काम के लिए भी कभी परेशान नहीं होते है। 3. कर्मवीर अपने दिल की बात मानते है। 4. कर्मवीर हमेशा काम करने में ही अपना समय बिताते है। वे कभी भी बेकार की बातों में अपना समय खराब नहीं करते है। 5. ''शेर का भी सामना'' इस पंक्ति से आशय यह है, कि कर्मवीर व्यक्ति किसी भी तरह से अपनी समस्या से उभरने के लिए शेर का सामना करने से भी नहीं घबराते है। अर्थात् वे काम पड़ने पर बड़ी से बड़ी समस्या को भी चुटकी में हल कर देते है। 6. कर्मवीर व्यक्ति जब छोटे-से-छोटा काम भी हाथ में लेता है तो उस कार्य की गुणवत्ता हीरे से कम नहीं आंकी जाती है, इसलिए कहा जाता है कि कर्मवीर व्यक्ति के हाथों में कोयला भी हीरा बन जाता है। 7. इस कविता के रचयिता श्री अयोध्या सिंह उपाध्याय ''हरिऔध'' हैं। 8. इस कविता से हमें यह प्रेरणा मिलती है, कि वीर व्यक्ति कभी भी बुरी परिस्थिति को स्वयं पर हावी नहीं होने देते, बल्कि स्वयं उन पर हावी हो जाते है। **(ख)** 1. अ 2. स 3. ब **(ग)** 1. कठिन हो किन्तु उकताते नहीं। 2. भीड़ में चंचल बने जो वीर 3. भी वह नहीं नाकाम रहता है कहीं। 4. कौन ऐसा काम है वे 5. छूते हुए दुर्गम पहाड़ों के शिखर 6. वे घने जंगल जहाँ रहता है तुम **(घ)** 1.

2. प्रस्तुत कविता से कवि का आशय यह है, कि कर्मवीर व्यक्ति के दिन एक बार में ही भले दिनों में बदल जाते हैं, इसलिए ये कर्मवीर हमें हमेशा फले-फूले मिलें अर्थात् देश की सेवा के लिए ये हमेशा अमर रहे, आगे बढ़ते रहे। 3. 4. इस पंक्ति में कवि यह बताना चाहते है, कि कर्मवीर व्यक्ति सदा अपने दिल की बातें ही मानते है, चाहे वे दुनियाभर की बातों को सुनते हो और ये व्यक्ति इस संसार में सदैव अपनी मदद स्वयं ही करते हैं। 5. 6. इस पंक्ति से आशय यह है, कि कर्मवीर व्यक्ति चाहे जितना भी पैदल चले ले, पर वे कभी भी थकते नहीं है। इसलिए कवि कहते है, कि ऐसी कौनसी गाँठ है जो ये कभी भी नहीं खोल पाते है और हमेशा देश-सेवा के लिए तत्पर रहते है। **(ङ)** 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ **(च)** 1. भाग्य भरोसे रहना = बिना मेहनत के फल पाने की उम्मीद करना। प्रयोग- आलसी व्यक्ति भाग्य भरोसे रहकर धनी बनने का सपना देखते रहते है। 2. समय गँवाना = समय का सदुपयोग नहीं करना। प्रयोग- मोहन ने दिनभर इधर-उधर समय गंवाकर पढ़ाई नहीं की। 3. आज कल करना = काम को टालना। प्रयोग = राम पढ़ाई करने में आज-कल करता रहता है। 4. जी चुराना = काम से बचना। प्रयोग- राम स्कूल के कार्य से जी चुराकर इधर-उधर घूमने में लगा हुआ है। 5. आसमान छूना = उन्नति करना। प्रयोग- राजू ने गत दो साल में व्यवसाय में अत्यधिक मेहनत कर आसमान छू लिया। 6. शेर का सामना – मुश्किल परिस्थितियों में भी डटे रहना। प्रयोग – दिनेश के ऊपर कितनी मुसीबतें आई पर फिर भी उसने उनका डटकर सामना किया इसी को कहते है शेर का सामना करना। 7. मुँह मोड़ना = किसी काम से दूर रहना। प्रयोग- जो परिश्रम से मुँह मोड़ता है, उसकी उन्नति कभी नहीं होती। 8. लोहे के चने चबाना = अत्यन्त कठिन काम करना। प्रयोग- नामी लुटेरों को पकड़वाकर नौजवान ने लोहे के चने चबाने का काम कर दिखाया। **(छ)** 1. गगन = आसमान, नभ, व्योम। 2. व्योम = आकाश, नभ, गगन, अम्बर। 3. बादल = पयोधर, मेघ, घन, जलद। 4. तम = अंधेरा, अंधकार, तिमिर। 5. धरती = भू, भूमि, धरा, पृथ्वी। 6. जगत = संसार, लोक, दुनिया, विश्व **(ज)** 1. निर्विहन = विघ्न 2. सुख = दुःख 3. सरल = कठिन 4. गंभीर = चंचल 5. आज = कल 6. असमय = समय 7. धरा = व्योम 8. सुगम = दुर्गम 9. कामयाब = नाकाम 10. समाप्त = आरंभ **(झ)** 1. व्योम = आकाश, नभ 2. शून्य = जीरो 3. काल = समय 4. सदा = सदैव, हमेशा 5. काम = कार्य, कर्म 6. जगत = संसार, विश्व **(ञ)** छात्र स्वयं करें। **क्रियाकलाप –** छात्र स्वयं करें।

अध्याय – 12. राखी का मूल्य

मौखिक अभ्यास – 1. राखी का पर्व स्नेह, हर्ष और उल्लास की पवित्रता का प्रतीक है। 2. नहीं, राखी का कोई मूल्य नहीं होता, वह तो अनमोल होती है। **(क)** 1. कर्मवती स्वर्गीय महाराणा साँगा की पत्नी थी। मेवाड़ पर बहादुरशाह के आक्रमण के समय उन्होंने अपने सरदारों से राखी के पवित्र त्यौहार के असीम मूल्य की चर्चा की। 2. गुजरात के बादशाह बहादुर शाह ने चित्तौड़ को घेर रखा था। 3. कर्मवती ने मेवाड़ की रक्षा के लिए हुमायूँ को राखी भेजने का उपाय सोचा। 4. हुमायूँ को राखी भेजने की बात सुनकर जवाहरबाई ने कर्मवती से कहा कि तुम एक मुगल को अपना भाई बनाओगी। 5. मुगल बादशाह हुमायूँ ने कर्मवती द्वारा भेजी राखी को स्वीकार किया और दूत के साथ कर्मवती के लिए संदेश भिजवाया कि- ''हुमायूँ तुम्हारी माँ के पेट से पैदा न हुआ तो क्या, वह तुम्हारे सगे भाई से भी बढ़कर है। मेवाड़ की इज्जत, मेरी इज्जत है।'' 6. हिंदूबेग और तातरखाँ कर्मवती की सहायता के लिए सहमत इसलिए नहीं थे, क्योंकि कर्मवती एक राजपूतानी थी और कर्मवती के पति महाराणा साँगा ने यह कसम खाई थी कि मुगलों को हिंदुस्तान से बाहर खदेड़े बगैर चित्तौड़ में कदम नहीं रखेंगे। 7. हुमायूँ ने कहा कि तुम सब एक ही परवरदिगार की औलाद हो। कुरान शरीफ में साफ लिखा है- ''हमने हर गिरोह के लिए इबादत का एक खास रास्ता मुकर्रर कर दिया है। जिस पर वह अमल करता है, इसलिए उस पर झगड़ा न करो।'' नेकी की राह तो उसकी राह है, जो खुदा पर सारी खुदादाद किताबों पर और सारे पैगंबरों पर ईमान लाता है, अपना प्यारा धन रिश्तेदारों, अपाहिजों, गरीबों, जियारत करने वालों, माँगने वालों की राह में और गुलामों को आजाद कराने में खर्च करता है, जो इस बात का पक्का है, जो डर और घबराहट, तंगी और मुसीबत के वक्त धीरज रखता है। ऐसे ही लोग है, जो बुराईयों से बचने वाले इंसान है। यही बात हिंदूओं के मजहव में भी कही गई है। फिर मजहब दोनों की दोस्ती के बीच में दीवार बन सकता है। इन्सान-इन्सान में दीवार बने तो वह मजहब नहीं कहला सकता। 8. ''राखी का मूल्य'' एकांकी से हमें यह शिक्षा मिलती है, कि मुसीबत के समय किसी का साथ देने के लिए मजहब को आड़े नहीं आने देना चाहिए। जिस प्रकार हुमायूँ ने रानी कर्मवती की राखी का मान रखते हुए, उसे स्वीकारा और उनकी मदद की, उसी प्रकार हमें भी जरूरत के समय भेदभाव मिटाकर एक-दूसरे का साथ देना चाहिए । **(ख)** 1. अ 2. ब 3. स 4. अ 5. अ **(ग)** 1. सभी लोग एक ही ईश्वर की संतान है। हिन्दु अवतार मानते है तो मुसलमान पैंगम्बर। परन्तु दोनों ने ही एक रास्ता दिखाया। 2. नेकी का रास्ता तो ईश्वर का रास्ता है। सभी धर्मो का वह एक ही रास्ता है जिसके द्वारा ईश्वर के द्वारा प्रदान ईमान आता है। 3. रानी कर्मवती बाघसिंह जी से कहती है कि हमने आपसे शत्रुता करके अपना सबकुछ खत्म कर लिया। हमने अपने ही हाथों अपना नाश कर लिया। **(घ)** 1. चित्तौड़ 2. श्रावणी 3. धागे 4. दूत 5. इज्जत 6. पैगंबर 7. इज्जत **(ङ)** 1. ✗ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✗ **(च)** 1. ब 2. अ 3. द 4. य 5. स **(छ)** खुदा, जख्मों, काफिलें, जहाँपनाह, खिदमत, तवारीख। **(ज)** 1. हँसते-हँसते प्राण देना = शहीद होना। प्रयोग- नौजवान देश की रक्षा के लिए हँसते-हँसते प्राण न्यौछावर कर देते है। 2. चढ़ाई करना = हमले की तैयारी करना। प्रयोग- मुगलों ने मेवाड़ पर चढ़ाई शुरु कर दी थी। 3. जादू का पिटारा = करामती चीज प्रयोग- रमेश ने मेले में अपना जादू का पिटरा खोल दिया। 4. खुश किस्मती = सौभाग्य प्रयोग- सुशीन की खुशकिस्ती ने उसे करोड़पति बना दिया। 5. प्रतिदान = दान के बदले दान। प्रयोग = राजा ने प्रतिदान में मिले राज्य को प्रतिदान स्वरूप रानी को भेंट कर दिया। **(झ)** 1. शासक 2. अन्तज्ञानी 3. आस्तिक 4. शहीद 5. धर्मावलम्बी **(ञ)** 1. परा + जय 2. सन् + कल्प 3. अन्तर + आत्मा 4. श्र + आवणी 5. अ + मान्य 6. प्र + अलेप 7. पैग् + अंबर 8. प्र + स्थान **(ट)** 1. आग 2. बराबर 3. कठिन 4. सावन 5. असंतुष्ट 6. बीमार **क्रियाकलाप –** छात्र स्वयं करें।

अध्याय – 13 नीति के दोहे

मौखिक अभ्यास – 1. जीवन में मीठी बोली बोलने से सारा जग अपना हो जाता है। 2. हाँ, सुख और दुःख दोनों में ही ईश्वर का नाम जपना चाहिए। **(क)** 1. किसी भी कार्य को बिना सोचे समझे करने से बाद में पछताना पड़ता है तथा काम बिगड़ने पर जग हँसाई भी होती है। 2. यदि व्यक्ति सुख में भी ईश्वर का स्मरण करेगा तो उसे दुःख का सामना नहीं करना पड़ेगा। 3. सच्चे साधु की पहचान उसका ज्ञान है। 4. तिनके की भी निंदा इसलिए नहीं करनी चाहिए, क्योंकि अगर छोटा-सा तिनका भी हमारी आँख में चला जाता है, तो वह बहुत दर्द देता है। 5. प्रेम के धागे में गाँठ पड़ने से आशय यह है, कि जब दो व्यक्तियों के रिश्ते के बीच किसी भी कारण से लड़ाई-झगड़े से दरार पड़ जाती है, तो वह रिश्ता पूर्व की भाँति विश्वास-प्रेम पूर्वक नहीं रहता है। वह धागा कच्चा हो जाता है और बार-बार टूटता रहता है। 6. मनुष्य यदि प्रेम के दो वचन मीठे बोलेगा तो वह अपने शत्रु को भी अपने वश में कर सकता है, क्योंकि इस संसार में प्रत्येक व्यक्ति प्रेम का ही भूखा होता है। 7. निंदक को पास में रखने से हमारी सारी बुराईयाँ दूर हो सकती है, क्योंकि जब बुराई करने वाला व्यक्ति आपके निकट ही रहेगा तो हम गलत कार्य नहीं कर सकेंगे। 8. प्रेम ऐसी चीज है, जो न खेतों में उत्पन्न की जाती है, और न ही किसी हाट में बेची जाती है। अगर आपस में प्रेम है, तो कोई उस प्रेम की खातिर अपना सिर भी आपको दे जायेगा, इसलिए प्रेम का जीवन में अत्यधिक महत्त्व माना गया है। 9. कवि अपने गुरु पर बलिहारी इसलिए जाता है, क्योंकि जब कवि के आगे दोनों गुरु और भगवान स्वयं खड़े है, तो वह किसे प्रथम शीश नवायें, पर वह सर्वप्रथम अपने गुरु को प्रणाम करता है, इसलिए कवि अपने गुरु पर बलिहारी जाता है, जिसने उसे गोविन्द से मिलवाया। 10. इस तन को विष की बेल इसलिए कहा गया है, क्योंकि मनुष्य में घृणा भाव तो रहता ही है और हमारे गुरु है, जो वो अमृत की खान है, जो इस विष को अमृत बनाने का निरन्तर प्रयास करते है। **(ख)** 1. धागा प्रेम का, मत तोरयो 2. फिर ना जुरै, जुरै गांठ परि जाय 3. विष की बेलरी, गुरु अमृत की खान 4. दिए जो गुरु मिलै, तो भी सस्ता जान 5. नींपजै, प्रेम न हाटि बिकाइ 6. राजा परजा जेहि रुचै, सीस देह **(ग)** 1. प्रस्तुत दोहे में कवि यह कहना चाहते है, कि सामने गुरु व गोविन्द दोनों खड़े है। मैं किसे पहले प्रणाम करूँ। मैं अपने गुरु पर बलिहारी जाता हूँ कि उन्होंने मुझे गोविन्द से मिलवाया है। अर्थात् हमारे गुरु ने हमें इतना ज्ञान दिया है, कि हम गोविन्द से मिल पाये है। 2. इस दोहे में कवि यह कहना चाहते है, कि हमें कभी भी साधु की जाति नहीं पूछनी चाहिए, हमें केवल उसका ज्ञान पूछना चाहिए, क्योंकि साधु की कोई जाति नहीं होती। साधु केवल ज्ञान से ही बनता है तथा साधु वह है, जो अपने ज्ञान से म्यान में पड़ी तलवार का भी मौल कर सकता है। 3. इस दोहे में कवि कहना चाहते है, कि हमें तिनके की भी निन्दा नहीं करनी चाहिए, जो केवल एक छोटा-सा कण होता है, क्योंकि अगर वह छोटा-सा तिनका कभी उड़कर हमारी आँख में चला जाता है, तो वह बहुत दर्द देता है। अर्थात् हमें कभी-भी किसी की निन्दा नहीं करनी चाहिए चाहे वह छोटे-से-छोटा प्राणी ही क्यों न हो। **(घ)** 1. जो सुख में सुमिरन करै, तो दुख काहे होय। 2. यह तन विष की बेलरी, गुरु अमृत की खान। 3. सीस दिए जो गुरु मिलै, तो भी सस्ता जान। 4. प्रेम न खेतो, नीपजैं, प्रेम न हरि बिकाइ। 5. निंदक नेड़े राखिए, आंगणि कुटि बंधाइ। **(च)** 1. अपना 2. ज्ञान 3. कभी 4. जुड़े 5. निर्मल 6. स्वभाव 7. प्रजा 8. शीश 9. शरीर **(छ)** 1. निंदक नेड़े राखिए ('न' वर्ण की आवृत्ति) 2. कागा काको न हरै ('क' वर्ण की आवृत्ति) **(छ)** 1. तोड़ो 2. पूर्ण समर्पण 3. बेल 4. कभी 5. बहुत 6. तलवार रखने का आवरण 7. उत्पन्न होना 8. स्वभाव **(झ)** 1. आलोकित 2. प्रकाशित 3. सम्मानित 4. अनुशासित 5. आनंदित **(ञ)** 1. पास रखने 2. मीठी 3. खूब 4. अपने से 5. मेरे लिए **क्रियाकलाप –** छात्र स्वयं करें।

अध्याय – 14 एकता में बल

मौखिक अभ्यास – 1. एकता में ताकत बसती है। 2. चमन का निर्माण कई फूलों के मिलने से होता है। **(क)** 1. पंछी ने अकेली एक बूँद को पी लिया। 2. अकेली बूँद को पूरब से चलने वाली हवा उड़ा ले गयी। 3. करोड़ों बूँदों के एक साथ होकर लहराने में उनमें सागर के जैसी ताकत आई। 4. चमन फूल-फूल से खिलता है। 5. घर-घर से बस्ती दिखाई देती है। 6. एकता में ताकत है। **(ख)** 1. अ 2. ब 3. स 4. अ **(ग)** 1. प्रस्तुत पंक्ति से आशय यह है कि जब वह बूँद अकेली थी तो उसे हवा उड़ा ले गई, मिट्टी ने उसे सूखा दिया अर्थात् एक अकेले प्राणी का सभी व्यक्ति नुकसान कर सकते है, जबकि एकता में ऐसा नहीं हो सकता है। 2. इस पंक्ति से आशय है कि एक सागर भी बूँद-बूँद से मिलकर बनता है, उसमें भी कई बूँदें मिलकर सागर बनाती है और कई फूलों के मिलने से ही चमन अर्थात् फुलवारी का निर्माण होता है। 3. इस पंक्ति से अभिप्राय यह है कि जब सब लोग आपस में मिलते है, तो घर-घर में बस्ती बन जाती है और एकता में ही ताकत बसती है, अर्थात् एक अकेला व्यक्ति कुछ नहीं कर सकता है। जब सभी लोग मिल-जुल एकता के साथ काम करेंगे तब ही कुछ होगा। **(घ)** पानी की एक बूँद टपकी, टप! बेचारी अकेली बूँद, पंछी आया, उसे पी गया। पुरवैया आयी, उसे उड़ा ले गयी, आँगन की माटी ने उसे सुखा दिया। फिर एक साथ गिरी दूसरी, तीसरी, चौथी बूँद, बूँद-बूँद करके तालाब भर गया। करोड़ों बूँदें एक होकर लहरायीं, उनमें सागर की सी ताकत आयीं। पंछी उसे पी न सका, पुरवैया उड़ा न सकी, माटी आँगन की सुखा न सकी। **(ङ)** 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ **(च)** 1. सप्ताह 2. पाक्षिक 3. माह 4. वर्ष **(छ)** 1. दिन = दिवस (प्रयोग – आज रविवार का दिन है।), दीन = गरीब (प्रयोग – रामू एक बहुत दीन आदमी है।) 2. बुरा = गलत, बेकार (प्रयोग – तुमने झुठ बोलकर बहुत बुरा काम किया है।), बूरा = एक मीठी वस्तु (चीनी को पीसकर बूरा बनाई जाती है।) 3. समान = बराबर (सरंपच ने दोनों भाईयो को जायदाद समान भागों में बॉट दी।), सामान = वस्तु (दादाजी सामान लेने के लिए बाजार गये है।) 4. उदार = नरम (किशोर बहुत उदार दिल का इंसान है।), उधार = कर्ज (बिरजू ने अपनी बेटी की शादी करने के लिए जंमीदार से कुछ रुपये उधार लिये।) **(ज)** 1. बूँदी 2. मोतिया 3. सुनहरा पंछी 4. चमकीला 5. दैनिक 6. दीनता **(झ)** 1. पानी = जल, प्रयोग- जीने के लिए पानी महत्त्वपूर्ण है। 2. सागर = समुद्र, प्रयोग- बूँद-बूँद से सागर भरता है। 3. पुरवैया = पूरब से चलने वाली हवा/पवन, प्रयोग- पुरवैया आई और बूँद को उड़ा ले गई। 4. पंछी = पक्षी, प्रयोग- पक्षियों का चहचहाना बहुत ही सुरीला होता है। 5. चमन = बाग, प्रयोग = फूलों के झुरमुठ से चमन बनता है। 6. फूल = पुष्प, प्रयोग = फूल-फूल से फुलवारी खिलती है। **क्रियाकलाप –** छात्र स्वयं करें।

कक्षा - 7

अध्याय 1. सरस्वती वंदना

मौखिक अभ्यास – 1. माँ सरस्वती पदम आसन पर विराजित है। 2. माँ सरस्वती श्वेत (सफेद) रंग के वस्त्र धारण करती है। **(क)** 1. प्रस्तुत कविता में बालक माँ सरस्वती की वन्दना कर रहे है। 2. माँ सरस्वती पदम आसन अर्थात् कमल के फूल के आसन पर विराजमान है। 3. अन्तिम पंक्तियों में बालक लोकहित की कामना करते हुए उज्जवल जीवन का वरदान माँग रहे है। 4. माँ सरस्वती के हाथों में वीणा और पुस्तक सुशोभित है। 5. माँ सरस्वती की सवारी हंस है। **(ख)** 1. ज्ञान के अमृत कलश से, छल-छलाए ज्योति निर्झर। 2. छोड़ संशय मुक्त हो मन, छूट जाए स्वार्थ चिन्तन। 3. लोकहित की काना हो, कर्म में ढ़ल जाये जीवन। **(ग)** 1. बच्चे माँ सरस्वती से प्रार्थना करते है कि हमारे मन में सबकी भलाई की भावना हो और लोकहित की इच्छा हो। 2. माँ सरस्वती आपके ज्ञान के अमृत रुपी कलश से ज्ञान ज्योति रुपी झरना बहता रहे। 3. हम ज्ञान को प्राप्त करके सभी भय से अपने मन को मुक्त करके अपने स्वार्थ को भी छोड़ दे। **(घ)** 1. तामसी 2. ज्ञानी 3. अमृतरूपी 4. मुक्ति 5. प्रेमपूर्वक 6. शुभदायी **(ङ)** 1. शारदा, वाणी, वीणापाणि, भारती। 2. गला, ग्रीवा 3. आँख, लोचन, नेत्र, चक्षु। 4. रास्ता, राह, मार्ग। 5. सुरसरि, त्रिपथगा, जाह्नवी, भागीरथी। 6. माता, जननी, अंबा, अम्मा। 7. संसार, जग, विश्व, दुनिया। **(च)** 1. आसन = अ् + आ + स् + अ + न् + अ 2. वीणा = व + ई + ण् + आ 3. चिन्तन = च् + इ + न् + त् + अ + न् + अ 4. प्रवाहित = प् + र् + अ + व् + आ + ह् + इ + त् + अ 5. भावना = भ् + आ + ब् + अ + न् + आ 6. जीवन = ज + ई + व् + अ + न् + अ 7. कृपाकर = क् + ऋ + प् + आ + क् + अ + र् + अ **(छ)** 1. पुस्तकें 2. वीणाएँ 3. बहुकलश 4. बहुनयन 5. बहुपथ 6. हृदय 7. नदियाँ 8. महीनें 9. रातें 10. फलों **क्रियाकलाप –** छात्र स्वयं करें।

अध्याय 2. लालच का फल

मौखिक अभ्यास – 1. मछुआरे को एक दिन मछली के पुकारने की आवाज सुनाई पड़ी। 2. मछुआरे ने पहली बार मछली से अच्छा घर माँगा। **(क)** 1. मछुआरा दिनभर मछली पकड़ता था और मछुआरी घर के अन्य कामों में व्यस्त रहती थी। अत्यधिक कठिन परिश्रम के उपरान्त वे दोनों रात में खाने के लिए कुछ कमा पाते थे। इस प्रकार वे दोनों अपना जीवन यापन कर रहे थे। 2. मछुआरे ने नीचे बैठकर छोटी मछली को लताओं से बाहर निकाला और उसे पानी में पहुँचा दिया। इस प्रकार मछुआरे ने छोटी मछली को बचाकर उस पर उपकार किया। 3. मछुआरा अपनी पत्नी के कहने पर बार-बार मछली से माँगता रहा। 4. मछुआरे ने अंत में मछली से मछुआरन् को रानी बनाने के लिये कहा। 5. अन्त में मछली मछुआरे से नाराज इसलिये हो गयी क्योंकि राजकीय वैभव मिलने के बाद भी मछुआरे ने मछुआरन् की कोई और इच्छा मछली के सामने प्रकट की। 6. मछली ने नाराज होकर मछुआरे को दिये सभी वरदान वापिस ले लिये और उसे उसकी पुरानी झोंपड़ी में ही रहने को कहा। 7. इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें लालच नहीं करना चाहिए, जो भी कुछ हमारे पास है, उसी में हमें सन्तुष्ट रहना चाहिये। क्योंकि लालच का फल कड़वा होता है। **(ख)** 1. ब 2. स 3. स 4. ब **(ग)** 1. मछुआरा, मछुआरन् 2. छोटी मछली 3. आटे की गोलियाँ 4. निबुद्धि 5. लालच 6. मछली, दिव्य-शक्ति 7. इच्छाएँ 8. लालच **(घ)** 1. ✗ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓ 6. ✓ **(ङ)** 1. मछुआरा, मछली 2. गडढे, मछली 3. बरतन, खूब, पानी 4. मित्रता 5. राजा, महल, बाग, नौकर-चाकर 6. विद्यार्थी, पुस्तकालय, पुस्तक 7. आम, मिठास **(च)** छात्र स्वयं करें। **(छ)** 1. मछुआरन् 2. देवी 3. रानी 4. पत्नी 5. नौकरानी 6. मोरनी 7. शुद्राणी 8. दादी 9. चुहिया 10. अध्यापिका **(ज)** रूढ़ शब्द - घर, तट, इधर, दादा, नौकर, मानव यौगिक शब्द - पुकारकर, देवालय, जीवनयापन, अत्यधिक, आनन्द योग रूढ़ शब्द - नीलकंठ। **क्रियाकलाप –** छात्र स्वयं करें।

अध्याय 3. विज्ञान को समर्पित महामानव

मौखिक अभ्यास – 1. एल्बर्ट आइन्सटीन को 2. आइन्सटीन नियम **(क)** 1. सर आइन्सटीन का जन्म 14 मार्च, 1876 को जर्मनी के उल्म नामक स्थान पर हुआ था। 2. आइन्सटीन को शिक्षा प्राप्ति हेतु स्विट्जरलैंड इसलिये भेजा गया क्योंकि वे ऐसे स्कूल में पढ़ना चाहते थे जहाँ के अध्यापक योग्य हों, उनके सभी प्रश्नों का उत्तर देने में समर्थ हो और जहाँ उन्हें झूठा आरोप लगाकर डाँटा-फटकारा न जाए। 3. शिक्षा समाप्त करने के पश्चात् उन्होंने कई जगह अध्यापन कार्य किया। लेकिन कोई भी स्थान उनके विचारों के अनुकूल न होने के कारण उन्होंने स्विट्जरलैंड के एक पेटेंट ऑफिस में नौकरी कर ली। 4. आइन्सटीन का विवाह सन् 1903 में मिलेवा मैरिक नामक एक छात्रा से हुआ। 5. परमाणु बम द्रव्यमान और ऊर्जा की समतुल्यता ($E = Mc^2$) के आधार पर बनाया गया। सन् 1945 में द्वितीय विश्व युद्ध में परमाणु बम का प्रयोग जापान के हिरोशिमा और नागासाकी जैसे सदियों से बसने वाले नगरों को क्षणभर में खंडर बनाने में किया गया। 6. आइन्सटीन के तीन सिद्धांत - जब पोटेशियम रेगंस्टन आदि जैसी धातुओं पर प्रकाश पड़ता है तो इन धातुओं से इलेक्ट्रॉन निकलते हैं इस प्रभाव को फोटो इलैक्ट्रिक प्रभाव कहते है। प्रकाश किरणों के रूप में चलता है, जिसे फोटोन कहते है। सर आइन्सटीन ने सापेक्षिकता का सिद्धांत भी प्रस्तुत किया। 7. सर आइन्सटीन की मृत्यु विज्ञान की सेवा करते हुए 19 अप्रैल, 1955 को अमेरिका में नींद की अवस्था में ही हो गयी। 8. आइन्सटीन का मस्तिष्क प्रिन्स्टन अस्पताल (अमेरिका) में सुरक्षित रखा हुआ है तथा आज भी उस प्रकाण्क विद्वान की विद्वता का रहस्य समझने के लिए वैज्ञानिक सर खपा रहे है। **(ख)** 1. ब 2. ब 3. अ 4. ब **(ग)** 1. जर्मनी, उल्म 2. स्विट्जरलैंड, ज्यूरिख 3. पी. एच. डी. 4. जर्नल थ्योरी ऑफ रिलेटिविटी 5. सामान्य व्यक्ति 6. प्रिन्स्टन अस्पताल **(घ)** 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗ 6. ✗ 7. ✓ **(ङ)** तत्सम शब्द - धरती, क्षेत्र, बर्बाद, साँप, वायु, अवस्था तद्भव शब्द - उम्र, गृह, आग, रात्रि, नींद देशज - जगह, बेटा, खटखटाना, थैला विदेशी - पियानो, स्कूल, हॉस्पिटल, नोट बुक **(च)** 1. गणितज्ञ 2. विश्वप्रसिद्ध 3. अमर 4. जिज्ञासु 5. नागरिक 6. अध्यापक 7. वैज्ञानिक **(छ)** 1. अ 2. वि 3. प्र 4. सर्व 5. प्र 6. अनु 7. सन् 8. सम् 9. सु 10. हर 11. बे 12. सर **(ज)** छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं करें। **क्रियाकलाप –** छात्र स्वयं करें।

अध्याय 4. रेशमी टाई

मौखिक अभ्यास – 1. नवीन चंद एक बीमा कम्पनी के एजेंट है। 2. सुधा एक स्वयं सेविका है। 3. नवीन चंद सुधा के खद्दर का एक थान चुरा लेता है। **(क)** 1. रेशमी टाई एकांकी में कुल चार पात्र है, जिनमें- नवीन चंद एक बीमा कम्पनी के एजेंट है। लाली नवीन चंद की पत्नी है।

सुधा एक स्वयं सेविका है तथा चंदन नवीन चंद का नौकर है। 2. नवीन को दुकानदार गलती से एक टाई ज्यादा दे देता है, पर नवीन उसे लौटाना नहीं चाहता है और लीला उसे वह टाई वापिस लौटाने को कहती है, किन्तु नवीन इस सब में दुकानदार की गलती बता टाई को नहीं लौटाने का निश्चय करता है। यही सब बाते मुफ्त टाई को लेकर नवीन और लीला के बीच होती है। 3. नवीन ने सुधा के बाहर जाने पर चुपके से उसके गट्ठर में से एक थान निकाल लिया। 4. नवीन छल-कपट की प्रवृत्ति का तथा सुधा सीधी, सरल, स्वाभिमानी प्रवृत्ति के मनुष्य है। 5. सुधा नवीन को तीन तरह के थान दिखाती हैं- (अ) गांधी आश्रम, अहमदाबाद का, आठ रुपये मीटर (ख) मेरठ का दस रुपया मीटर (स) पीली भीत का बारह रुपये मीटर। 6. सुधा के बाहर जाने पर नवीन ने चुपके से गट्ठर में से एक थान छुपा लिया था और लीला ने वह चोरी का थान देखकर नवीन की गलती छुपाने के लिये सुधा को थान के रुपये दे दिये। इस प्रकार लीला ने सुधा से थान खरीदा। 7. इस एकांकी का मूल भाव यही है कि छोटे-पन में पड़ी कोई भी बुरी आदत बड़े होने पर नहीं जाती है। **(ख)** 1. स 2. ब 3. अ 4. स 5. ब **(ग)** 1. चाय 2. कार्ल मार्क्स 3. कार्ल मार्क्स 4. छोटे-पन 5. दुर्गुणों **(घ)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✗ 5. ✓ **(ङ)** 1. सुसज्जित 2. विशाल 3. सुन्दर 4. चार मीटर 5. नीला 6. लंबा **(च)** 1. जा 2. टहल 3. मिल 4. उतर 5. चिढ़ 6. गा 7. खोद 8. दे 9. पढ़ 10. भूल **(छ)** 1. भूतकाल 2. भविष्य काल 3. वर्तमान काल 4. भूतकाल 5. भविष्य काल 6. वर्तमान काल 7. भूतकाल **(ज)** 1. अर्ध विराम 2. उद्धरण चिह्न 3. पूर्ण विराम 4. लाघव चिह्न 5. प्रश्नवाचक चिह्न 6. विस्मयादि बोधक 7. कोष्ठक 8. आदेश चिह्न 9. अल्प विराम **क्रियाकलाप–** छात्र स्वयं करें।

अध्याय 5. मानसरोवर की यात्रा

मौखिक अभ्यास – 1. चीन की सीमा में। 2. भगवान शिव का **(क)** 1. लेखक के यात्रा के प्रति भाव कुछ इस प्रकार थे- लेखक का मानना था कि यात्रा जीवन को नई उपलब्धियों से भर देती है। यह सम्पूर्ण जीवन की एक यात्रा ही है। यात्रा हमारे जीवन को नई दिशा देती है, यदि मन में उत्साह, जिज्ञासा और संवेदना हो, पैरों में स्फूर्ति हो तो यात्रा जैसा आनन्द और कहीं नहीं मिल सकता। 2. मानसरोवर की यात्रा के लिए लेखक को बहुत-सी तैयारियाँ करनी पड़ी। शारीरिक रूप से सर्वथा उपर्युक्त पाने पर यात्रा की स्वीकृति मिलने के पश्चात् दो-तीन दिन में लेखक ने विदेशी मुद्रा, वीजा, प्रवेश-पत्र आदि का प्रबन्ध कर लिया था। 3. लेखक बागेश्वर, तवाघाट, चीन-सीमा पर स्थित लिप्पू दर्रे, तकलाकोट होते हुए मानसरोवर पहुँचा। 4. लेखक ने जब चीन की सीमा में प्रवेश लिया तो उसके मन में विचार उठने लगे- चीन की सीमा! मानसरोवर हमारा पवित्र तीर्थ! कैलाशपति हमारे आदि देव ! और कैलाश शिव की तपस्या भूमि। जिसकी साक्षी पुराण दे रहे हैं, कालिदास का साहित्य दे रहा है, इतिहास दे रहा है। आज वही तीर्थस्थान चीन की सीमा में। यह सब सोचकर लेखक का मन कड़वा हो गया। 5. तीर्थयात्रियों को अपने रुपयों के बदले चीनी-युआन इसलिये लेने पड़े क्योंकि चीन में हमारा सिक्का व रुपया नहीं चलता है। चीन की मुद्रा युआन है। तीर्थयात्रियों ने रुपयों के बदले अमेरिकी डॉलर लिये थे। उन्हीं अमेरिकी डालरों के बदले में उन्होंने चीनी युआन प्राप्त किये। 6. मानसरोवर में हंसों को देखकर लेखक का मन स्तब्ध हो गया, क्योंकि वे ऐसे लग रहे थे जैसे नीले सागर में मोती तैर रहे हो। 7. लेखक के यात्री दल में दिल्ली, महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु, पंजाब, गुजरात, बंगाल, बिहार, हरियाणा लगभग सभी प्रदेशों के यात्री थे। सभी में एक अनुपम भावनात्मक एकता थी। इसीलिये लेखक की यात्रा वसुधैव कुटुम्बकम की भावना से ओत-प्रोत थी। 8. तीर्थस्थान जगत के कोलाहल से दूर निर्जन और एकांत, चारों ओर नंगे सूखे पहाड़, साँय साँय करती हुई शरीर कपाने वाली तेज हवा, चारों दिशाओं में विस्तृत रूप से फैला हुआ स्थान था। लेखक को वहाँ जाकर अटूट शान्ति की प्राप्ति हुई तथा मुक्ति के साक्षात् दर्शन हुए। **(ख)** 1. स 2. अ 3. स 4. ब **(ग)** 1. राम मनोहर लोहिया 2. बागेश्वर 3. 17, 500 फीट 4. चीनी-युआन 5. ही दिगमबर शिव 6. वसुधैव कुटुम्बकम **(घ)** 1. ✓ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓ **(ङ)** छात्र स्वयं करें। **(च)** 1. सम् + पूर्ण (व्यंजन संधि) 2. उत् + साह (व्यंजन संधि) 3. जिग + आशा (स्वर संधि) 4. पंच + अक्षरी (स्वर संधि) 5. मंत्र + आलय (व्यंजन संधि) 6. स्वर्ग + आरोहण (स्वर संधि) 7. दिक् + अम्बर (व्यंजन संधि) 8. आनन्द + उदित (स्वर संधि) 9. दुर् + गम (व्यंजन संधि) 10. सुर + अभ्य (स्वर संधि) 11. हिम + आच्छदित (स्वर संधि) 12. दुर् + लभ (व्यंजन संधि) **(छ)** 1. चन्द्र जैसा लोक (कर्मधारय तत्पुरुष समास) 2. सात दिनों का समूह (द्विगु समास) 3. पैदल यात्रा (अव्ययी भाव समास) 4. सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त (अव्ययी भाव समास) 5. नीले है कंठ जिसके अर्थात् भगवान शिव (बहुब्रीहि समास) 6 से 10 तक छात्र स्वयं करें। **(ज)** 1. वापस 2. दृश्य 3. कल्याण 4. मुग्ध 5. पर्वत 6. श्रेष्ठ 7. परमात्मा 8. वर्ष **(झ)** 1. टूटुओं (गुणवाचक विशेषण) 2. चार (संख्यावाचक विशेषण) 3. थोड़ा-सा (परिमाणवाचक विशेषण) 4. नीला (गुणवाचक विशेषण) 5. दो किलो (परिमाणवाचक विशेषण) 6. दो लीटर (परिमाणवाचक विशेषण) 7. दूसरा (संख्यावाचक विशेषण) **क्रियाकलाप –** छात्र स्वयं करें।

अध्याय 6. भारत रत्न सुभाष

मौखिक अभ्यास – 1. नेताजी सुभाष चन्द्र बोस का नारा – ''तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दुँगा।'' था। 2. नहीं 3. नेताजी गाँधीजी की 'अस्पष्ट नीति' से रुष्ट थे। **(क)** 1. नेताजी ने माँ काली के मन्दिर में चाकू से अपनी अँगुली काटी और खून की बूँदें टपकाते हुए अपनी माताजी से बोले कि माँ देवी की रक्त के सिंदूर से पूजा करों। 2. नेताजी का छात्रों के प्रति दृष्टिकोंण था कि छात्रों को पूर्ण मनोभोग से शिक्षा ग्रहण करते हुए अपने जीवन का लक्ष्य, देश सेवाग्रह होना चाहिए। तथा समयानुकुल स्थिति को देखकर छात्रों को अपनी मानसिकता में परिर्वन करना चाहिए। 3. नेताजी देश में ऐसे अध्यापक चाहते थे, जिनके मस्तिष्क में ज्ञान की गरिमा, हाथों में फैलाद और गति में भूचाल हो। 4. आज का छात्र विदेशी वस्तुओं और संस्कृति के प्रति ललचाई दृष्टि से तथा स्वयं को हेय समझने लगा है, जो सुभाष की आत्मा को दुःख देने के लिए काफी है, क्योंकि उन्होंने विदेशी नौकरी को जो उस समय की सर्वश्रेष्ठ स्तर की होती थी, को ठुकरा दिया था। 5. वे चाहते थे कि देश की प्रतिभा का योगदान देश के लिए ही हो, तभी हम उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि दे सकते हैं और उनके त्याग तथा बलिदान को सार्थक कर सकते है। **(ख)** 1. स 2. अ 3. स 4. ब 5. स **(ग)** 1. साहसी 2. सत्य अहिंसा 3. आजाद हिंद फौज 4. राष्ट्रीय विद्यापीठ 5. विदेशी नौकरी 6. मेधावीपन **(घ)** 1. ✗ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗ **(ङ)** 1. उत्तरावस्था 2. उत्तमावस्था 3. मूलावस्था 4. उत्तमावस्था 5. उत्तमावस्था

6. उत्तमावस्था 7. मूलावस्था 8. उत्तमावस्था 9. मूलावस्था 10. उत्तमावस्था **(च)** 1. भाववाचक संज्ञा 2. भाववाचक संज्ञा 3. व्यक्तिवाचक संज्ञा 4. समूहवाचक संज्ञा 5. व्यक्तिवाचक संज्ञा 6. द्रव्यवाचक संज्ञा 7. समूहवाचक संज्ञा 8. व्यक्ति वाचक संज्ञा 9. समूहवाचक संज्ञा 10. भाववाचक संज्ञा **(छ)** विशेषण – स्वतंत्र, साहसी, बहुतदूर, कुशाग्रबुद्धि, भर्ती नष्ट करना विशेष्य – मातृभूमि, नेताजी, घर, नेताजी की, बाल-सैनिकों, ब्रिटिश ट्रैकों **क्रियाकलाप –** छात्र स्वयं करें।

अध्याय 7. सन्त कबीर दास

मौखिक अभ्यास – 1. कबीर ज्ञानमार्ग शाखा के कवि थे। 2. कबीर के अनुसार आदमी अपने अच्छे कर्मो से ही बड़ा बनता है। 3. कबीर दासजी ने रामानंद के 'राम-राम' उच्चारण को गुरुमंत्र मान लिया। **(क)** 1. कबीर के जन्म के संबंध में एक जनश्रुति अत्यधिक प्रचलित है, कहा जाता है, कि विधवा ब्राह्मणी की सेवा में प्रसन्न होकर स्वामी रामानन्द ने उनको पुत्रवती होने का आशीर्वाद दिया। लोकलज्जा के भय से वह उस बालक को काशी के लहरतारा नामक तालाब के किनारे रख आई। और वह बालक एक मुसलमान दंपति को मिला और उन्होंने उसका नाम 'कबीर' रखा। 2. कबीर का पालन-पोषण काशी के एक मुसलमान दंपति नीरू और नीमा ने किया, जो एक जुलाहे का काम करते थे। 3. कबीर का विवाह लोई नामक स्त्री से हुआ तथा दोनों पति-पत्नि मिलकर कपड़ा बुनते और संतोषपूर्वक अपना जीवन व्यतीत करते थे। 4. कबीर के गुरु स्वामी रामानंद जी थे। तथा स्वामी रामानंद जी को अपना गुरु बनाने के लिए एक दिन कबीर बिल्कुल अंधेरे में गंगा के घाट पर पहुँचे और सीढ़ियों पर जाकर लेट गये। उसी समय रामानंद उन्हीं सीढ़ियों से उतरे, वे कबीर से टकराये तभी रामानंद के मुँह से राम-राम निकला। कबीरदास जी ने रामानंद जी के राम-राम के उच्चारण को गुरु मंत्र ही मान लिया और उसी दिन से रामानंद जी ने कबीर को अपना शिष्य बना लिया। 5. कबीर जी की कविताओं का संग्रह बीजक कहलाता है। बीजक के तीन अंग है – सखी, सबद, रमैनी साखी में दोहे है। सबद में गेयपद संग्रहित है तथा रैमनी में चौपाई-छन्द है। 6. कबीर के राम निराकार, निर्गुण ब्रह्म है, जो मन में निवास करते है। ऐसे राम को अपने मन में ढूँढ़ना होगा। 7. कबीर सच्चा ईश्वर भक्त उसे कहते है, जो ईश्वर के प्रति मन में प्रेम रखता है। तथा जो सच्चा आचरण करता है। 8. कबीरदास के अनुसार दया, परोपकार, सब ईश्वरीय गुण है। 9. कबीर जी की पत्नी का नाम लोई था। 10. कबीर जी की मृत्यु सवंत् 1559 में मगहर में हुई। **(ख)** 1. स 2. स 3. अ 4. ब **(ग)** 1. निर्भीक, मस्त, घुम्मकड़ी 2. पढ़े-लिखे 3. एकता 4. गुरु-मंत्रों 5.सत्संग 6. निराकार, निर्गुण 7. सच्चा आचरण 8. समाज, ज्ञान-मार्गी **(घ)** 1. ✓ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✗ 5. ✓ 6. ✓ 7. ✓ 8. ✓ 9. ✗ 10. ✗ **(ङ)** 1. प्रस्तुत पद्य में कबीर दास जी कहना चाहते है, कि मैनें कभी भी कागज़ छुआ तक नहीं हैं, और ना ही कभी कलम हाथ में उठाई है अर्थात् मैंने कभी भी किताबी ज्ञान नहीं लिया है और न ही मेरे पास कोई लिखित ज्ञान है। 2. इस पद्य से कबीर जी का आशय यह है, कि कबीर जी ईश्वर को राम कहते है, लेकिन उनका राम अवतारी पुरुष अथवा पुत्र राम नहीं है। उनके अनुसार राम नाम का रहस्य ही कोई दूसरा है। **(च)** 1. अर्कमक क्रिया 2. द्विकर्मक क्रिया 3. सकर्मक क्रिया 4. द्विकर्मक क्रिया 5. अकर्मक क्रिया 6. द्विकर्मक क्रिया। **(छ)** क्रिया-विशेषण – बहुत, सच्चा, निर्भीकतापूर्वक, धीरे से । प्रकार – परिमाणवाचक क्रि. वि., रीतिवाचक क्रि.वि., रीतिवाचक क्रि.वि.,रीतिवाचक क्रि.वि.,रीतिवाचक क्रि.वि., कालवाचक क्रि.वि., कालवाचक क्रि.वि. **(झ)**1.जातीय 2. नैतिक 3.मासिक 4. कार्मिक 5. किताबी 6. वैवाहिक 7. दैनिक 8. जंगली 9. परोपकारी 10. दयनीय **(झ)**1. घुमक्कड़ = सदैव घूमने वाला 2. निर्भीक = जिसे भय न हो। 3. अमर = जो कभी मरता नहीं 4. निरक्षर = जो पढ़ा-लिखा न हो। 5. अंधविश्वास = रूढ़िवादी परम्परा में विश्वास करना। 6. नवजात = हाल ही में जन्माजातक 7. परोपकारी = दूसरों का भला करने वाला। 8. दम्पत्ति = विवाहित स्त्री व पुरुष का जोड़ा 9. सार्थक = सही अर्थ देने वाला। 10. कर्मठ = कर्म में विश्वास रखने वाला। **क्रियाकलाप –** छात्र स्वयं करें।

अध्याय 8. हार की जीत

मौखिक अभ्यास – 1. हार की जीत हृदय परिवर्तन की कहानी है। 2. बाबा भारती के घोड़े का नाम सुल्तान था। 3. खड़गसिंह उस इलाके का प्रसिद्ध डाकू था। **(क)** 1. लेखक ने बाबा भारती के घोड़े की तुलना और खेतों से की है, जिस प्रकार माँ को अपने बेटे और किसान को अपने लहलहाते खेतों को देखकर आनन्द आता है, उसी प्रकार बाबा भारती को भी अपना घोड़ा देखकर आनन्द की अनुभूति होती थी। 2. बाबा भारती शहर से बाहर मन्दिर में इसलिए रहते थे, क्योंकि उन्हें शहर के जीवन से नफरत थी। 3. सुल्तान को देखकर खड़गसिंह के मन में विचार आया कि ऐसा घोड़ा तो मेरे पास होना चाहिए था। यह फकीर इस घोड़े का क्या करेगा ? 4. बाबा भारती की रातों की नींद इसलिए उड़ गई थी, क्योंकि वे खड़गसिंह की उस बात से डर गये थे, जब उसने कहा था कि बाबा, मैं यह घोड़ा आपसे छीन लूँगा। 5. खड़गसिंह ने बाबा भारती से छल करके घोड़ा चुराया। जब बाबा भारती सुल्तान की पीठ पर सवार होकर घूमने जा रहे थे, तो खड़गसिंह ने एक अपाहिज का वेश बनाकर बाबा भारती से मदद माँगी और मदद मिलने के बाद धोखे से घोड़ा ले भागा। 6. खड़गसिंह सोचता था कैसे ऊँचे विचार हैं, कैसा पवित्र भाव हैं। उन्हें इस घोड़े से प्रेम था, इसे देखकर उनका मुख फूल की तरह खिल जाता था। कहते थे, ''इसके बिना मैं रह न सकूँगा।'' इसकी रखवाली में वे कई रोज सोए नहीं। भजन-भक्ति कर रखवाली करते रहे। परंतु आज उनके मुख पर दुःख की रेखा दिखाई पड़ती थी। उन्हें केवल यह ख्याल था कि कहीं लोग दिन-दुःखियों पर विश्वास करना न छोड़े दें। ऐसा मनुष्य, मनुष्य नहीं देवता है। इन बातों का अर्थ समझते ही वह घोड़े को वापिस छोड़ आया। 7. बाबा भारती द्वारा की गई प्रार्थना में एक रहस्य छुपा था, वे नहीं चाहते थे कि खड़गसिंह द्वारा की गई हरकत (घटना) का किसी को भी न पता चलें, क्योंकि यदि लोगों को इस घटना का पता लग गया तो वे किसी दीन-दुःखी पर विश्वास न करेगें।'' 8. इस कहानी में बाबा भारती के विश्वास की जीत और खड़गसिंह के हठ की हार होती है। इस कहानी में बाबा भारती की एक प्रार्थना से खड़गसिंह का हृदय परिर्वतन हो गया था। **(ख)** 1. स 2. अ 3. अ 4. अ **(ग)**1. सुल्तान 2. डाकू 3. एक छोटे से मंदिर से 4. धार्मिक प्रवृत्ति 5.एक अपाहिज को 6. देवता **(घ)**1. ✗ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✗ 5. ✗ **(ङ)** 1. उसी प्रकार बाबा भारती को अपना घोड़ा देखकर आनन्द की अनुभूति होती थी। 2. जब तक बाबा भारती सुल्तान की पीठ पर बैठकर आठ-दस मील की यात्रा नही कर लेते थे तब तक उन्हें सुकून नहीं आता था। 3. लोगो को यदि इस घटना का पता लग गया तो वे किसी दीन-दुखी पर विश्वास न करेंगे। **(च)** सहायक क्रिया – है।, हो।, थे।, थे।, थे। थे।, था।, घुसे। पूर्वकालिक क्रिया – मन आना, नाचना, जीवन यापना करना,

बैठकर, सुनकर, खिलना, दौड़कर **(छ)**1. सामान्य भविष्य काल 2. सम्भाव्य भविष्य काल 3. हेतु-हेतुमद भविष्य काल 4. सम्भाव्य भविष्य काल 5. सम्भाव्य भविष्य काल 6. हेतु-हेतुमद भविष्य काल। **(ज)** छात्र स्वयं करें। **(झ)** 1. बाबा भारती = व्यक्तिवाचक संज्ञा, इंसान जातिवाचक संज्ञा 2. साधु बाबा = व्यक्तिवाचक संज्ञा, सुल्तान = व्यक्तिवाचक संज्ञा 3. बाबा भारती = व्यक्तिवाचक संज्ञा, गाँव = समूहवाचक, मंदिर = व्यक्तिवाचक 4. खड़गसिंह = व्यक्तिवाचक संज्ञा, काँपना = भाववाचक संज्ञा 5. गाँव = समूहवाचक संज्ञा, कुत्ते = व्यक्तिवाचक संज्ञा। **क्रियाकलाप –** छात्र स्वयं करें।

अध्याय 9. चाचा नेहरू का पत्र

मौखिक अभ्यास – 1. चाचा नेहरू का जन्मदिन बाल दिवस के रुप में मनाया जाता है। 2. चाचा नेहरू का पूरा नाम पण्डित जवाहर लाल नेहरू है। **(क)** 1. बड़े लोगों को ऊँची सुन्दर पहाड़ियों की बर्फ से ढ़की हुई चोटियों की सुन्दर दुनिया की ओर, सुन्दर खिले हुए फूल, लहलहाते हुए खेत, फूल और फलों से लदे हुए वृक्ष, चमकते हुए सितारे, हमारे आस-पास की प्राकृतिक सुन्दरता आदि की ओर देखने का समय नहीं मिलता है। 2. नेहरू जी बच्चों से हमारे आस-पास की प्राकृतिक सुन्दरता, लहलहाते हरे-भरे खेत, चमकते सितारे आदि का आनन्द लेने के लिए कहते है, कि क्या किसी फूल को उसके नाम से पहचान सकते हो ? आनन्द लेना सीखों। 3. नेहरू जी के अनुसार यदि हम पक्षियों और प्रकृति के साथ प्यार से और ममता से व्यवहार करेंगें, तो हम समझ जाएगें। कि मित्रता करना कितना आसान है। 4. नेहरू जी बच्चों को धर्म, जाति, पथ, वर्ण, दल, प्रान्त, भाषा, रीति-रिवाज जैसी दीवारों एवं दायरों से दूर रखना चाहते है। 5. चाचा नेहरू ने जापानी बच्चों के लिए भारतीय बच्चों की तरफ से एक हाथी भेजा और उसे जल-मार्ग से भेजा। 6. नेहरू जी ने गाँधीजी के निम्न उपदेशों के बारे में बताया है – (अ) सबके साथ दोस्ती करो। (ब) किसी से झगड़ों नहीं। (स) किसी से ईर्ष्या मत करो। (द) मिलनसार बनो, मिल-जुलकर देश की सेवा करो, सहकारिता से काम करो। (य) किसी से डरो नहीं। (र) सदैव न्याय का पक्ष लो। 7. नेहरूजी के मतानुसार हर एक नागरिक अपने व देश के लिए यदि थोड़ा-सा भी काम करेगा, तो भारत उन्नति के शिखर पर पहुँचेगा। **(ख)** 1. स 2. ब 3. अ 4. ब **(ग)**1. राम, कृष्ण, बुद्ध, गाँधी 2. न्याय 3. बापू 4. एक से 5. विभिन्न 6. मैसूर 7. सुख। **(घ)** 1. ✗ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓ 6. ✓ **(ङ)** 1. प्रस्तुत पंक्ति से आशय है, कि जितने भी बड़ी उम्र के लोग होते है, वे अपने ही तौर-तरीकों से अपनी एक नयी दुनिया बना लेते है, और ना ही उस दुनिया में सुखद को बाहर निकालना चाहते और न ही उसे बदलना। वे उस काल्पनिक दुनिया से बाहर आने से भी डरते है। 2. पंक्ति में चाचा नेहरू जी कहना चाहते है, कि यदि हमें हमारे देश के लिए कुछ करना है, तो सभी को हाथ बटाना होगा। प्रत्येक नागरिक यदि थोड़ा-सा भी काम करेगा तो भारत उन्नति के शिखर पर पहुँचेगा। इसीलिए देश सुखी रहेगा तो सबको सुख मिलेगा। 3. इस पंक्ति से आशय यह है कि दुनिया में प्रत्येक बच्चा एक-सा है, उनके सभी के मन एक से है। सबके मन में प्रेम भाव है। इसीलिए नेहरू जी कहते है, कि सभी बच्चे एक से है। **(च)** 1. मिश्रित वाक्य 2. मिश्रित वाक्य 3. संयुक्त वाक्य 4. मिश्रित वाक्य 5. साधारण वाक्य 6. मिश्रित वाक्य 7. संयुक्त वाक्य। **(छ)** 1. बड़े लोगों के समान नेहरू जी बच्चों को उपदेश देना नहीं चाहते। 2. नेहरू जी ऊँचे बर्फ से ढ़के पहाड़ों की चोटियों की बातें करेंगें। 3. नेहरू जी ने जापानी बच्चों के लिए एक हाथी भेजा। 4. बच्चे सभी स्थान के एक-से होते है। 5. महात्मा गाँधी हमारे राष्ट्रपिता थे। 6. वह धीमे स्वर में बोला। **(ज)** 1. दुनिया = संसार 2. हाथी = गज 3. पहाड़ = पर्वत 4. फूल = पुष्प 5. वृक्ष - पेड़ 6. मित्र = सखा **(झ)** 1. उपदेश = उपदेशों 2. पहाड़ी = पहाड़ियाँ 3. चोटी = चोटियाँ 4. फल = फलों 5. आँख = आँखें 6. सितारा = सितारें 7. आदमी = आदमियों 8. बच्चा = बच्चे 9. भारतीय = भारतीयों 10. महापुरुष = महापुरुषों। **क्रियाकलाप –** छात्र स्वयं करें।

अध्याय 10. माँ कह एक कहानी

मौखिक अभ्यास – 1. माँ राहुल को कहानी कह रही थी। 2. हाँ, मारने वाले से बचाने वाला श्रेष्ठ होता है। **(क)** 1. यह कहानी एक पक्षी, शिकारी, न्यायकर्ता, रक्षक आदि से संबंधित है। 2. राहुल कहानी सुनने वाला लड़का था। 3. बाण एक शिकारी ने, हंस को मारा था। 4. घायल पक्षी को राहुल के पिता ने उठाया और उसे बचाकर एक नया जन्म दिया। 5. कहानी के अन्त में माँ ने राहुल से पूछा कि, तुम निर्णय करो कि न्याय किसका पक्ष लेता है ? 6.राहुल ने पक्षी को बचाने वाले के पक्ष में न्याय किया, क्योंकि मारने वाले से बचाने वाला बड़ा होता है। 7. मारने वाले से बचाने वाला इसलिए श्रेष्ठ होता है, क्योंकि बचाने वाला, मारने वाले व्यक्ति के द्वारा किये गए अपराध को बखान करने के बदले उस घायल को बचा उसे बचाता है, इसलिए मारने वाले से बचाने वाला श्रेष्ठ होता है। **(ख)** छात्र स्वयं करें। **(ग)** 1. इस पंक्ति से आशय यह है, कि शिकारी ने घायल पक्षी माँगा, किन्तु राहुल के पिता उस पक्षी के रक्षक थे, तब उस व्यक्ति ने जो खगभक्षी अर्थात् पक्षियों को खाने वाला था, उसने जिद्द की घायल पक्षी को देने की, किन्तु राहुल के पिता ने उसे नहीं दिया। 2. प्रस्तुत पंक्ति से आशय यह है, कि जब पक्षी को लेकर सक्ष्यी और निर्दयी दोनों व्यक्तियों में आग्रह होने लगा, तो दोनों ही अपने-अपने पक्ष को लेकर आग्रह करने लगें, तब बात न्यायालय में पहुँची और सभी ने बात सुनी और समझी। 3. इस पंक्ति से आशय यह है, कि जब कोई व्यक्ति किसी भी पक्षी को मारता है, जिसका कोई अपराध ही नहीं है, तब कोई भी अन्य व्यक्ति उसे उबारता क्यों नहीं है तथा साथ ही रक्षा करने वाले के स्थान पर मारने वाले का ही पक्ष लिया जाता है, इसीलिए न्याय भी दया का दानी है। 4. इस पंक्ति में राहुल की माँ सम्पूर्ण कहानी सुनाकर उससे कहती है, कि राहुल तू निर्णय कर इसका कि न्याय किसका पक्ष लेता है, रक्षक का या फिर भक्षक का ? **(घ)** 1. भ्रमण = हमें सदैव प्रात:काल भ्रमण के लिए जाना चाहिए ? 2. आखेटक = जंगल में एक आखेटक (शिकारी) ने निर्दोष पक्षी को शिकार बना लिया। 3. विवाद = आज कल रक्षक व भक्षक के लिए बहुत विवाद होते है। 4. न्यायालय = न्यायालय ही ऐसा स्थान है, जहाँ केवल सच्चाई का साथ दिया जाता है, और सही न्याय किया जाता है। 5. निर्णय = न्यायालय में दिया गया निर्णय सर्वोपरि होता है। 6. निरपराध = शिकारियों द्वारा निरपराध पक्षियों को मारा जाता है। 7. दया = आहत पक्षियों पर कोई दया नहीं करता है। **(ङ)** 1. तात = मात् 2. सुरभि = निर्वति 3. उभय = एकल 4. आहत = अनाहत 5. पक्ष = विपक्ष 6. करूणा = निर्दय 7. कोमल = कठोर 8. जन्म = मृत्यु 9. व्यापक =सीमित 10. निरपराध = अपराध 11. दया = क्रोध 12. न्याय = अन्याय **(च)** छात्र स्वयं करें। **(छ)** छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं करें। **क्रियाकलाप –** छात्र स्वयं करें।

अध्याय 11. विश्वासघात

मौखिक अभ्यास – 1. इस एकांकी में वाजिद अली एक नबाव है। 2. तेजसिंह शेरसिंह का बेटा है। **(क)** 1. वाजिद अली के पास विशाल सेना होने के पश्चात् भी वह वीर सिंह को हरा नहीं सका, क्योंकि वीर सिंह का एक-एक सैनिक वाजिद अली के बीस सैनिकों को एक-साथ मार सकता है। 2. अन्त में वाजिद अली ने वीर सिंह के बड़े भाई शेर सिंह के साथ मिलकर धोखे से वीर सिंह को हराया। 3. तेजसिंह ने अपने पिता की आज्ञा मानने से इंकार इसलिए कर दिया क्योंकि तेजसिंह के पिता शेरसिंह देशद्रोही और कायर था। उसने वीर सिंह को धोखे से हराया था। 4. राजपूत स्त्रियाँ जौहर प्रथा का पालन आग में कूदकर करती थी, जिससे वे शत्रुओं के हाथ में न पड़े। 5. वाजिद अली द्वारा रामगढ़ का राज्य जाने पर तेजसिंह उसे ठुकराते हुए बोला कि यह किला मैं अपनी तलवार से प्राप्त करूँगा। आपकी मेहरबानी से नहीं। सिंह कभी मरा शिकार नहीं खाता। वह हमेशा अपने बल से प्राप्त किया शिकार खाता हैं। 6. शेरसिंह को वाजिद अली ने सारी उम्र कैद में रखने की सजा सुनाई, क्योंकि शेरसिंह कायर और देशद्रोही था। वह किसी के भी साथ धोखा कर सकता है। **(ख)** 1. ब 2. ब 3. अ **(ग)** 1. वीरसिंह 2. किले, मुख्यद्वार 3. अधिक योग्य 4. जौहर प्रथा 5. राजपूत जाति 6. किले, निर्दोष वीरों 7. सिंह **(घ)** 1. ✓ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓ 6. ✓ **(ङ)** 1. मीर खाँ ने, वाजिद अली से। 2. शेरसिंह ने, वाजिद अली से। 3. वाजिद अली ने, शेर सिंह से। 4. तेज सिंह ने, वाजिर अली से। **(च)** 1. ओह ! 2. अहा! 3. ओह! 4. हाँ-हाँ! 5. अरे! 6. शाबांस! 7. ओहो! **(छ) अरबी शब्द –** 1. गुस्ताखी - शरारत 2. पैगाम - समाचार 3. इनायत - मेहरबानी 4. फतह - जीत 5. अहसानमंद - उपकार के लिए कृतज्ञ 6. इज्जत - मान 7. गुनाह - अपराध **फारसी शब्द –** 1. नफरत - घृणा 2. खुफिया - गुप्त 3. सलाम - अभिवादन 4. खिलाफ - विरुद्ध **(ज)** 1. पत्नी = किसी की भी विवाहिता। स्त्री = कोई भी स्त्री। 2. अस्त्र = फेंक कर मारने वाला हथियार। शस्त्र = हाथ में पकड़ कर चलाया जाने वाला हथियार। 3. आनन्द = आत्मा की अनुभूति। उल्लास = खुशी से नाच उठना। 4. मित्र = विपत्ति में साथ देने वाला। सखा = हमेशा प्रेमपूर्वक साथ देने वाला। **क्रियाकलाप –** छात्र स्वयं करे।

अध्याय 12. पृथ्वी की उत्पति

मौखिक अभ्यास – 1. विश्व में लगभग 1000 मिलियन आकाश गंगाएँ है। 2. पृथ्वी के विशिष्ट गुण है – (अ) गुरुत्वाकर्षण 2. चुम्बकत्व। **(क)** 1. हमारी पृथ्वी की उत्पति भारी पदार्थों से हुई है, जो सूर्य की अपेक्षा कई लाख गुना अधिक ताप रखते हैं, क्योंकि उच्च ताप द्वारा भारी पदार्थों की उत्पत्ति होती है। 2. विश्व की समस्त रचना एक गुरुत्वाकर्षण बल के अधीन है। सब शक्तियों का जनक शून्य है, जो कि विश्व में व्याप्त है। शून्य से ही समस्त विश्व में गुरुत्त्व आकर्षण शक्ति उत्पन्न होती है। 3. हमारी आकाश गंगा के किनारे पर हमारा सौर-परिवार स्थित है। आकाश गंगा के मध्य में भारी पदार्थों का जमाव है, जिसके चारों और चुम्बकीय क्षेत्र है, जो कि भारी पदार्थों द्वारा पैदा होता है। इन चुम्बकीय क्षेत्रों द्वारा गुरुत्व शक्ति का निर्माण हुआ। गुरत्त्व आकर्षण शक्ति से गैसीय भंवरों का निर्माण हुआ। 4. रेडियों धर्मी तत्त्वों की सक्रियता के कारण जब ग्रहों का पदार्थ इससे अलग हुआ तथा तब लावे की तरह उबलता हुआ था। यानि पृथ्वी व अन्य ग्रह अपनी संरचना के समय कम या अधिक तरल अवस्था में थे। जो पदार्थ इस चक्र के मध्य रह गया, वह सूर्य के रूप में है। जिसके चारों ओर ग्रह चक्कर काटते हैं। 5. रेडियों धर्मी तत्त्वों की सक्रियता के कारण जब ग्रहों का पदार्थ इससे अलग हुआ और यह पदार्थ चक्र के मध्य से अलग हुआ तो एक ग्रह का पदार्थ दूसरे ग्रह पर रह जाने के कारण उपग्रहों की रचना हुई, क्योंकि हर ग्रह द्वारा अपने पदार्थ को अपने पास जाने के लिए खिचांव शक्ति उत्पन्न करता है। पृथ्वी का एकमात्र उपग्रह ''चन्द्रमा'' हैं। 6. पुच्छल तारें में गैसीयता अधिक होती है, इसका सूर्य के प्रति अधिक आकर्षण होता है। जबकि क्षुद्र ग्रह पर बर्फ भी पायी जा सकती है, ये संख्या में अनेक हो सकते हैं। 7. पृथ्वी के आन्तरिक भाग के दो खण्ड हैं – एक ऊपरी आवरण और दूसरा केन्द्रीय कोड/ऊपरी आवरण दो हजार आठ सौ अस्सी किलोमीटर मोटा है और इस आवरण का ऊपरी स्तर केवल 32 किमी. मोटा है। इसी ऊपर स्तर पर हम लोग रहते हैं। 8. पृथ्वी से हमें खनिज सम्पदा,अन्न, फल-फूल, साग-सब्जी, पत्थर आदि प्राप्त होते है, इसलिए पृथ्वी को धरित्री या धरती भी कहा जाता है। पृथ्वी से हमें विविध प्रकार की उपयोगी व मूल्यवान वस्तुएँ प्राप्त होती है तथा सोना, चाँदी जैसे रत्नों की खाने भी है, इसलिए पृथ्वी को रत्नगंधा भी कहा जाता है। **(ख)** 1. अ 2. ब 3. स 4. स **(ग)** 1. भारी पदार्थों 2. हाइड्रोजन, हीलियम 3. 1000 मिलियन 4. गुरुत्वाकर्षण बल के 5. शून्य 6. सौर-परिवार 7. चुम्बकत्व **(घ)** 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓ 6. ✓ 7. ✓ **(ङ)** 1. और = संयोजक समुच्चबोधक अव्यय 2. इसलिए = विभाजक समुच्चबोधक अव्यय 3. और = संयोजक समुच्चबोधक अव्यय 4. और = समुच्चबोधक अव्यय 5. किन्तु = विभाजक समुच्चबोधक अव्यय **(च)** छात्र स्वयं करें। **(छ)** छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं करें। **(ज)** 1. व्यक्तिवाचक संज्ञा = पृथ्वी, तारा, माता, सूर्य, गंगा, चन्द्रमा 2. जाति-वाचक संज्ञा = संसार, परिवार, मनुष्य, फूल 3. भाववाचक संज्ञा = मिठास **क्रियाकलाप –** छात्र स्वयं करें।

अध्याय 13. शिक्षा एवं खेल-कूद

मौखिक अभ्यास – 1. प्राचीनकाल में शिष्य गुरुओं के आश्रम में सभी कार्य करते थे। जैसे – कृर्षि कार्य, गायों की सेवा, लकड़ी लाना इत्यादि। 2. 'तन स्वस्थ तो मन स्वस्थ' इसका अर्थ है – स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन का वास होता है। **(क)** 1. प्राचीन काल में शिक्षा का उद्देश्य केवल मोक्ष प्राप्त करना ही नहीं, वरन् शारीरिक दृष्टि से भी पुष्ट होना था। 2. लोकाक्ति 'पहला सुख निरोगी काया' से आशय यह है, कि सबसे पहले स्वास्थ्य है, और यह स्वास्थ्य हमें व्यायाम एवं खेलकूद से प्राप्त होता है। व्यायाम व खेलकूद शिक्षा के साथ ही जुड़ा होना चाहिए। 3. संकुचित अर्थ में शिक्षा से तात्पर्य केवल मानसिक विकास से ही नहीं वरन् शारीरिक चारित्रिक आध्यात्मिक और मानसिक विकास के लिए खेलकूद और व्यायाम का विशेष महत्त्व है। खेलकूद से ही शरीर में स्फूर्ति उत्पन्न होती हैं, रक्त संचार ठीक प्रकार से होता है और प्रत्येक अंग पुष्ट होता है। इस प्रकार स्वस्थ बालक पुस्तकीय ज्ञान ग्रहण करने की अधिक क्षमता रखता है। 4. बालक के नैतिक विकास में भी शिक्षा व खेल-कूद का मिश्रण आवश्यक है। इससे मन में धैर्य व साहस का विकास होता है। विद्यार्थी में भ्रातृत्व व सद्भाव की भावना उत्पन्न होती है। 5. आधुनिक शिक्षा शास्त्रियों ने कार्य और खेल में समन्वय स्थापित किया है। बालकों

का शिक्षण कार्य यदि खेल पद्धति से किया जाता है तब बालक उसमें अत्यधिक रूचि लेते हैं। इसे 'खेल पद्धति द्वारा शिक्षा' कहा जाता है। 6. जीवन में सदैव प्रसन्न रहने हेतु एक मात्र तरीका यह है कि, काम के समय मन लगाकर काम करो और खेलने के समय मन लगाकर खेलों। **(ख)** 1. अ 2. स 3. अ 4. अ **(ग)** 1.जन्मजात 2. विद्याध्ययन, शारीरिक पुष्टि 3. आधार शिला 4. स्वस्थ शरीर 5. व्यायाम 6. उचित शिक्षा। **(घ)** 1. ✗ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓ 6. ✓ **(ङ)** 1. एवं = संयोजक समानाधिकरण समुच्चय बोधक 2. और = संयोजक समानाधिकरण समुच्चय बोधक 3. लेकिन = विरोध सूचक समुच्चय बोधक 4. तथा = संयोजक समुच्चय बोधक 5. फलतः = परिणाम सूचक समुच्चय बोधक **(च)** 2. अर्थ = आर्थिक, अर्थहीन 3. इतिहास = ऐतिहासिक 4. परिवार = पारिवारिक 5. केन्द्र = क्रेन्द्रिय 6. देश = देशीय, देशी 7. दुख = दुःखी 8. संसार = सांसारिक **(छ) विशेषण शब्द –** 1. स्वस्थ 2. दुर्बल 3. सर्वोच्च4. सभी गुण 5. समन्वय **क्रिया शब्द –** चलाना, शिकार होना खेल-खेल में जीवन-निर्वाह स्थापित करना **(ज)** 1. करण कारक, संबंध कारक 2. संबंध कारक 3. कर्त्ता कारक, कर्म कारक 4. करण कारक 5. अपादान कारक 6. अधिकरण कारक **क्रियाकलाप –** छात्र स्वयं करें।

अध्याय 14. गिल्लू

मौखिक अभ्यास – 1. गिलहरी जीव 2. गिल्लू की आँखे काँच के मनके की तरह थी। **(क)** 1. गिल्लू गिलहरी का छोटा-सा बच्चा था। लेखिका को सोनजूही की कली को देखकर उसकी याद इसलिए आई क्योंकि वह इस लता की सघन हरीतिमा में छिपकर बैठता था और फिर लेखिका के निकट पहुँचते ही कंधे पर कूदकर से चौका देता था। 2. गिल्लू गमले और दीवार की संधि में छिपा-हुआ था। वह घोंसले से गिरने के कारण कौओं से बचने के लिए छुप गया था और वहीं से लेखिका ने गिल्लू को प्राप्त किया। 3. वह स्वयं ही हिलाकर अपने घर में झूलता और अपनी काँच के मनकी आँखों से कमरे के भीतर और खिड़की से बाहर न जाने क्या देखता-समझता रहता था, परन्तु उसकी समझदारी और कार्यकलाप पर सबको आश्चर्य होता था। 4. बसन्त ऋतु में लेखिका ने कील निकालकर जाली का एक कोना खोल दिया और इस मार्ग से गिल्लू ने बाहर आने-जाने लगा। इस लेखिका ने गिल्लू को स्वतंत्र किया। 5. स्वतंत्र होने पर गिल्लू लेखिका के बाहर जाने पर वह भी खिड़की के रास्ते बाहर चला जाता था और दिनभर गिलहरियों के झुण्ड का नेता बनता, हर डाल पर उछल-कूद करता और ठीक चार बजे खिड़की से भीतर आकर झूले में झूलने लगता था। 6. लेखिका की अस्वस्थता में गिल्लू खाने की चीजें नीचे फेंक देता था या लेखिका के सिरहाने आकर बैठ जाता था। 7. सोनजूही लता के नीचे गिल्लू की समाधि बनाई गई है, क्योंकि लघुगात का किसी वासन्ती दिन, जुही के पीलाभ छोटे फूल में खिल जाने का विश्वास लेखिका को सन्तोष देता है। **(ख)** 1. स 2. अ 3. ब 4. अ **(ग)** 1.पितरपक्ष 2. काकद्राय 3. पेंसिलिन 4. एक लम्बे लिफाफे 5. मुक्ति की साँस 6. कुत्ते व बिल्लियों **(ग)** 1. ✗ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓ 6. ✓ **(ङ)** 1. इस पंक्ति में लेखिका यह कहना चाहती है, कि जब उसके जीवन में गिल्लू का प्रवेश नहीं हुआ था, तब वह सोनजूही में पीली कली लगी है, तो लेखिका को अचानक ही गिल्लू की याद आ गई जो एक गिलहरी हरीतिमा में छिपकर बैठा करता था। 2. छात्र स्वयं करें। 3. छात्र स्वयं करें। 4. इस पंक्ति से लेखिका का आशय यह है, कि हमारे पूर्वज जो अब इस दुनिया में नहीं है, वे इस पृथ्वी पर न तो गरूड़ रूप में आ सकते है, न ही मोर के रूप में और न ही हंस के रूप में आ सकते है। वे केवल कौए के रूप में ही आ सकते है। उन्हें पितरपक्ष में हमसे कुछ पाने के लिए काक बनकर ही अवतीर्ण होना पड़ता है। **(च)** 1. मेरे = निजवाचक सर्वनाम, मुझे = पुरुषवाचक सर्वनाम 2. उसे = पुरुषवाचक, मैं = पुरुषवाचक सर्वनाम 3. मैं पुरुषवाचक, उसे = पुरुषवाचक सर्वनाम 4. मैं = पुरुषवाचक, उसे = पुरुषवाचक सर्वनाम 5. मुझे = पुरुषवाचक, उसमें = पुरुषवाचक सर्वनाम **(छ)**1. क्योंकि = विभाजक समुच्चय बोधक अव्यय 2. परन्तु = विभाजक समुच्चय बोधक अव्यय 3. ताकि = विभाजक समुच्चय बोधक अव्यय 4. कि = विभाजक समुच्चय बोधक अव्यय 5. है कि = विभाजक समुच्चय बोधक अव्यय **(ज)**1. मरणासन्न = मरण + आसन्न = दीर्घ स्वर संधि 2. बचपन = बच + पन = व्यंजन संधि 3. पीलाभ = पी + लाभ व्यंजन संधि 4. मुक्ति + म + उक्ति = व्यंजन संधि 5. चंचल = चं + अचल = स्वर संधि 6. प्रयुक्त = प्र + युक्त = व्यंजन संधि 7. हरीतिमा = हरी + इतिमा = स्वर संधि 8. सम्मानित = सम् + आनित = स्वर संधि 9. प्रियजन = प्रिय + जन = व्यंजन संधि 10. स्वर्णिम = स्व् + अर्णिम = स्वर संधि। **क्रियाकलाप –** छात्र स्वंय करे।

अध्याय 15. आओ धरा को स्वर्ग बना दें

मौखिक अभ्यास – 1. कवि धरा को स्वर्ग बनाना चाहता है। 2. विश्व में अराजक नीतियाँ फैली हुई है। **(क)** 1. बालक पृथ्वी को स्वर्ग के समान सुन्दर बनाना चाहते है। 2. बालक सुखी समाज हेतु विश्व में फैली अनेक बुरीतियाँ जैसे– धार्मिक घमण्ड, सत्ता, अंहकार, वेश-भूषा, भाषा, भावना आदि के भेद को मिटाना चाहते हैं। 3. अधूरे स्वप्न पूर्ण करने के लिए बालक चाहते है, कि मूक नागपति फिर जागकर वीरता के गीत गायें, मनुष्य के नयन खुले और त्रिवेणी फिर से बहायें, सूरदास व मीरा के भजन फिर से सुनाई दें, गीता के कर्म सभी के मुख पर हो तथा सभी मोह गया छोड़े दें। 4. बालक मनुज में समता का भाव संगठन कर एकता की शक्ति से उत्पन्न कर रहे है। 5. भारत, केशव, शिवा, राणा तथा राम जैसे पुरुषों के आगमन से ज्ञान का सूरज क्षितिज पर उगेगा। **(ख)** छात्र स्वयं करें। **(ग)** 1. प्रस्तुत पंक्ति से कवि का आशय है, कि हम हमारी पृथ्वी को सुन्दर बनाने के लिए आर्यों जैसे वशंधर होते हुए भी नहीं जागे और वेष-भूषा, भाषा-बोलचाल, भावना के भेद करते रहे और पृथ्वी को सुन्दर न बना पायें। 2. कवि कहना चाहते है, कि अगर फिर से धरती पर सूरदास और मीरा के भजनों की झंकार होने लग जाये तथा गीता के सभी कर्म सभी को मुख पर हो और मोह-माया चली जाये, तो हम पृथ्वी को स्वर्ग-सा सुन्दर बना सकते है। 3. इस पंक्ति से आशय यह है, कि पृथ्वी के लिए बालक सभी मनुष्यों में समता का भाव उत्पन्न करना चाहते है। इसके लिए वे बालक कहते है, कि विश्व से कह दो, कि हम संगठन दिखला रहे है और एकता की शक्ति से सभी मनुष्यों में समानता का भाव उत्पन्न कर रहे हैं। 4. प्रस्तुत पंक्ति से कवि कहना चाहते है, कि यदि मूक नागपति फिर से सजग होकर वीरता के गीत गायें और मनुष्यों के नयनखोल त्रिवेणी (गंगा, यमुना, सरस्वती) फिर से बहायें, तो हमारे अधूरे स्वप्न भी पूरे हो जायेगें। **(घ)** 1. त्रिवेणी = तीन

नदियों का संगम 2. सूर 3. स्वर्ग 4. धार्मिक = धर्म को करने वाला 5. क्षितिज = आकाश का आखिरी छोर 6. भूतल = भूमि के अंदर का भाग 7. उपकारी = उपकार करने लगा 8. पक्षिक = 15 दिन का पखवाड़ा 9. अमूल्य = किसकी कीमत का अंदाजा न लगाया जा सके। 10. त्रासदी = बड़ी विपदा **(ङ)** 1. धरा = पृथ्वी, भूमि, वसुधा। 2. नयन = आँख, लोचन, चक्षु। 3. समाज = कुटुम्ब, प्रजा। 4. त्रिवेणी = संगम 5. स्वपन = सपना, 6. विश्व = संसार, जगख लोक। 7. सूरज = दिनेश, दिनकर, रवि, भानु 8. गुरु = आचार्य, अध्यापक, शिक्षक। **(च)** 1. भावना = हमारे मन जीवों के प्रति सदैव प्रेम की भावना होनी चाहिए। 2. विश्व = सम्पूर्ण विश्व में अराजक नितियाँ फैली हुई हैं। 3. एकता = एकता में ही शक्ति होती हैं। 4. ज्ञान = शिक्षा ही मनुष्य का सर्वोच्च ज्ञान है। 5. वीरता = वीर सैनिकों के लिए वीरता के गीत गाये जाते हैं। 6. भू-तल में लगभग 70% जल है। **(छ)** 1. धर्म = धार्मिक 2. समाज = सामाजिक 3. नीति = नैतिक 4. भूत = भौतिक 5. अर्थ = आर्थिक 6. भूगोल = भौगोलिक **क्रियाकलाप –** छात्र स्वयं करें।

कक्षा - 8

अध्याय 1. उठो धरा के अमर सपूतों

मौखिक अभ्यास – 1. कवि धरा के अमर सपूतों को नया निर्माण करने के लिए कह रहा है। 2. धरती का हर बालक धरा का अमर सपूत है। **(क)** 1. ''धरा के अमर सपूतों'' से कवि का अभिप्राय पृथ्वी के बच्चों से है। जो नया निर्माण कर नव विधियों से नवयुग का आह्वान करेंगे। 2. ''नया निर्माण'' के द्वारा कवि यह समझाना चाहता है कि देश के जवान उठे, बढ़े और आगे आए और मातृभूमि पर मर-मिटने के लिये सभी को प्रेरित करे। 3. प्रस्तुत कविता में नया प्रातः, नयी किरन, नयी उमंग, नयी आस, नयी मुस्कान से कवि यह भाव प्रकट करना चाहता है, कि धरा के अमर सपूत नयी उमंग लाकर सभी में नई मुस्कान भर दे और पुनः नया निर्माण कर युग-युग के मुरझे मनों में नयी मुस्कान भरें। 4. ''अमर सपूतों'' से कवि द्वारा विभिन्न अपेक्षाएँ की गई है, जैसे- वे नयी आस, नयी उमंग से सभी के मुरझे मन में नई मुस्कान भरे तथा शत-शत दीपक जला कर नवयुग का आह्वान करें। 5. कवि ने नवयुग का आह्वान करने के लिये अमर सपूतों को अपनी कविता की पंक्तियों में कहा है कि- सरस्वती का पावन मंदिर, शुभ सम्पत्ति तुम्हारी है। तुमसे से हर बालक इसका रक्षक और पुजारी है। शत-शत दीपक जला ज्ञान के नवयुग का आह्वान करो। **(ख)** 1. अ 2. ब 3. स 4. ब **(ग)** छात्र स्वयं करें। **(घ)** 1. पंक्ति में कवि यह कहना चाहता है कि प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में नयी स्फूर्ति, नया जोश, नयी उमंग एवं प्राण भरो। प्रस्तुत पंक्ति के द्वारा कवि ने देश अमर सपूतों को देश के प्रत्येक व्यक्ति में नया जीवन भरने की कामना की है। 2. प्रस्तुत पंक्ति में कवि कहना चाहता है कि देश के अमर सपूत आज के इस नवीन युग में नवीन युग की वीणा में नया राग और नया गान भरे, जिससे जन-जन का उद्धार हो। 3. प्रस्तुत पंक्ति में कवि यह कहना चाहता है, कि सुरीली, नवीन व नूतन, मंगलमय, मंगलगान करने वाली ध्वनियों से जग के सभी उद्यानों को गुंजित करो। 4. प्रस्तुत पंक्ति से कवि का आशय यह है कि प्रत्येक व्यक्ति को ज्ञान दो अर्थात् सभी को शिक्षित करो और नवयुग का आह्वान करो। 5. पंक्ति में कवि कहना चाहता है कि इस पृथ्वी के बच्चों उठो और अपने नये ज्ञान, उमंग से पुनः नवयुग का नया निर्माण करो। **(ङ)** 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ **(च)** 1. सुपुत्र 2. भंवरे 3. श्वास 4. किरण 5. अश्रु 6. नूतन **(छ)** 1. अचरज 2. उछाह 3. अजान 4. ऊँचा 5. सौ-सौ 6. नया **(ज)** 1. प्राण 2. पुजारी 3. मंडराते 4. मुस्काया 5. ज्ञान 6. करो 7. भ्रमर 8. गान **(झ)** छात्र स्वयं करें। **(ञ)** 1. युग-युग 2. डाल-डाल 3. कली-कली 4. फूल-फूल **(ट)** 1. ज्योति = रोशनी, उजाला 2. विहग = पक्षी, खग 3. नूतन = नया, नवीन 4. उद्यान = बगीचा, बाग 5. आह्वान = आमंत्रित करना, बुलाना। **क्रियाकलाप –** छात्र स्वयं करें।

अध्याय 2. मुंशी प्रेमचंद

मौखिक अभ्यास – 1. प्रेमचंद की विमाता बहुत कटु और रुखे स्वभाव की स्त्री थी। 2. प्रेमचंद को पढ़ने के लिए बनारस जाना पड़ता था। **(क)** 1. प्रेमचंद का जन्म सन् 1880 ई. में बनारस के पास लमही नामक गाँव में हुआ था। इनका बचपन का नाम धनपतराय था। 2. प्रेमचंद के पिता का नाम मुंशी अजायब लाल था। 3. प्रेमचंद राष्ट्रभक्त, ईमानदार, गरीबों के प्रति हमदर्दी और सच्चे साहित्यिक के रूप में विख्यात रहे है। इसी बात से पता चलता है कि उनका जीवन एक आदर्श जीव रहा है। 4. प्रेमचंद ने सन् 1899 में चुनार के स्कूल में 18 रु. महीने पर अध्यापन कार्य किया। उसके पश्चात् उन्होंने बहराइच के सरकारी स्कूल में सहायक अध्यापक के रूप में कार्य किया। इसके पश्चात् प्रशिक्षण प्राप्त कर वे इलाहाबाद के मॉडल स्कूल में प्रधानाध्यापक नियुक्त हुये। इस प्रकार प्रेमचंद ने कई जगह नौकरी की, किन्तु उनकी पेचिश की बीमारी ने उन्हें कहीं टिकने न दिया। 5. प्रेमचंद की कहानियों की एक पुस्तक ''सोजे वतन'' जब्त कर ली गई, क्योंकि अंग्रेजी सरकार को उसमें देश प्रेम की बू आती थी। 6. प्रेमचंद के हृदय में स्वाभिमान दर्शाने वाली घटना है- एक रोज कलेक्टर साहब ने मास्टर साहब को आवाज देकर इशारे से बुलाया और कहा- ''मैं रोजाना इस वक्त टहलने आया करता हूँ, आप मुझे सलाम करने के लिए कभी नहीं आते।'' मास्टर साहब ने जवाब दिया- ''मैं अपने काम में मशगूल रहता हूँ। यह मेरी कोई ड्यूटी नहीं कि हर किसी को जो सड़क से गुजर रहा हो, चाहे हुकूमत का अफसर ही क्यों न हो, सलाम करता फिरुँ।''इस घटना से पता चलता है, कि प्रेमचंद के हृदय में स्वाभिमान के साथ-साथ विदेशी शासन के विरुद्ध कितनी घृणा भरी हुई थी। 7. पहले उर्दू में ये ''नवाबराय'' के नाम से लिखते थे और बाद में उन्होंने हिन्दी में ''प्रेमचंद के नाम से लिखना शूरु किया। इन्होंने 15 उपन्यास और लगभग 300 कहनियाँ लिखी। 8. प्रेमचंद के प्रसिद्ध उपन्यास गोदान, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कार्यभूमि, सेवासदन और निर्मला है तथा इनकी प्रसिद्ध कहानियों में कुसुम और उद्धार, सवा सेर गेहूँ, सौभाग्य के कोड़े, दूध का दाम, डामुल का कैदी, कानूनी कुमार आदि प्रमुख है। 9. प्रेमचंद ने अपनी कहानियों में दहेज प्रथा, विधवा विवाह, बंधुआ मजदूरी, नशाबंदी, जातिवाद, हरिजनों का शोषण, परिवार नियोजन, मृतक मौतों पर फिजूल खर्ची, कारखानों में मालिक मजदूर संबंध, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार आदि समस्याओं को उजागर किया है।10. मुंशी प्रेमचंद के व्यक्तित्व में राष्ट्रभक्ति, ईमानदारी तथा गरीबों के प्रति हमदर्दी जैसे गुण थे। 11. प्रेमचंद जी ने सन् 1919 में अंग्रेजी, फारसी और इतिहास विषय से बी.ए. की उपाधि प्राप्त की थी। 12. प्रेमचंद जी के सभी उपन्यास व कहानियाँ देश की किसी न किसी बहुत गहरी समस्या से जुड़ी होती है। जैसे उनकी कहानियों में समाज में व्याप्त रूढ़िवादी समस्याएँ-

दहेज प्रथा, विधवा विवाह, जातिवाद आदि से संबंधित विषय जुड़े होते है। 13. प्रेमचंद जी के उपन्यासों ''नवाबराय'' नाम से व ''उर्दू'' भाषा में लिखते थे। 14. मुंशी प्रेमचंद जी का देहान्त 8 अक्टूबर, 1936 को हुआ। 15. उनकी ''कुसुम और उद्धार'' नामक कहानी के अन्तर्गत दहेज प्रथा की कुरूपता का वर्णन किया गया है।16. ''मास्टर साहब'' वाक्य मुंशी प्रेमचंद जी के लिये प्रयोग किया गया है। **(ख)** 1. अ 2. अ 3. ब 4. स **(ग)** 1. इस पंक्ति का आशय यह है कि जब पिता ने अधेड़ उम्र में दूसरी शादी की और प्रेमचंद जी का विवाह पंद्रह वर्ष की उम्र में ही करा दिया था, तो वे अपने आप को तो संभालने लायक थे नहीं और उनका विवाह करा उन पर जिम्मेदारियाँ डाल दी थी। 2. इस पंक्ति से आशय है कि प्रेमचंद्र जी का जीवन सीधा एवं समतल मैदान जैसा है, जिसमें कहीं-कहीं दुःख, समस्या रूपी गढढ़े तो बन गये है, पर ऊँच-नीच, छल-कपट, बेईमानी का कोई स्थान नहीं है। 3. उक्त पंक्ति में प्रेमचंद जी कहना चाहते है कि हम कोई किसी के नौकर थोड़े ही है, जो रास्ते चलते किसी भी व्यक्ति को सलाम करें। हमारा भी कुछ स्वाभिमान है। 4. प्रस्तुत पंक्ति में प्रेमचंद ने व्यक्त किया है, कि जब घर में उनका मन नहीं लगता था, तो वे खेतों में चले जाया करते थे और वहाँ वनों के बीच अपना समय व्यतीत किया करते थे। **(घ)** 1. धनपत राय था। 2. सन् 1880 में हुआ। 3. सन् 1936 में हुआ। 4. नवाबराय था। 5. सन् 1919 में पास किया। **(ङ)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✗ 6. ✓ 7. ✗ 8. ✗ 9. ✗ **(च)** 1. सलाम करना- नमस्ते करना। हमें अपने से बड़ों को नित्य प्रति सलाम (नमस्कार) करना चाहिये। 2. गड्ढे में गिरना- 3. रास आना- अनुकूल होना राम को नये शहर का वातावरण रास आ गया था। 4. आखिरी बात- **(छ)** 1. झगड़ालू 2. पुख्ता 3. दूसरा 4. आदर्श 5. सात 6. बड़े 7. पाँच 8. महान् **(ज)** छात्र स्वयं करें। **(झ)**1. विश्वास जमाना 2. मित्रता निभाना 3. श्रेष्ठ बनना 4. गुलछरें उड़ाना **(ञ)** 1. विद्वता 2. प्रतीक्षा 3. प्रविष्ट 4. आर्शीवाद 5. उच्चायुक्त 6. निच्छलता। **क्रियाकलाप** – छात्र स्वयं करें।

अध्याय 3. बहुमूल्य खजाना

मौखिक अभ्यास – 1. निर्धन व्यक्ति के बीवी बच्चे घास-फूस की झोंपड़ी में रहते थे। 2. ''देख तेरे पास आँखे है, हाथ है, पैर है और तू इन्हें किसी भी मूल्य पर देना नहीं चाहता। **(क)** 1. माणक एक मुनी थे। 2. उनके पास आश्रम में एक आगन्तुक आया बोला- ''महाराज, मैं बहुत निर्धन हूँ। घर में खाने के लिये कुछ भी नहीं है। कोई ऐसा उपाय बताइए कि मेरी निर्धनता दूर हो जाए।'' 3. निर्धन व्यक्ति की बात सुनकर मुनि बोले कि कोई काम-धंधा शुरू कर दो। बिना कुछ किये निर्वाह कैसे होगा ? 4. मुनि ने निर्धन व्यक्ति से सर्वप्रथम उसकी दोनों आँखें और फिर उसके दोनों हाथ तत्पश्चात् दोनों पाँव मांगे। 5. नहीं, मुनि वास्तव में निर्धन व्यक्ति के अंग नहीं बिकवाना चाहते थे। उन्होंने निर्धन व्यक्ति से ऐसे प्रश्न इसलिये किये, क्योंकि वो निर्धन व्यक्ति को उसके शरीर रूपी अमूल्य धन का उपयोग करने की शिक्षा दे रहे थे। 6. इस पाठ से हमें यह शिक्षा मिलती है, कि हमें कभी भी किसी भी कार्य/चीज के लिये किसी पर भी निर्भर नहीं होना चाहिए। अपनी स्वयं की मेहनत से आजीविका कमानी चाहिए और निर्धनता को दूर करना चाहिए। **(ख)** 1. ब 2. ब 3. स **(ग)** 1. निर्धन व्यक्ति ने मुनि से। 2. मुनि ने निर्धन व्यक्ति से 3. मुनि ने निर्धन व्यक्ति से। 4. निर्धन व्यक्ति ने मुनि से। 5. मुनि ने निर्धन व्यक्ति से। **(घ)** 1. मुनि के इस प्रश्न के उत्तर में निर्धन व्यक्ति बोला-''महाराज! कुछ भी नहीं!'' 2. निर्धन व्यक्ति बोला कि- ''प्रभु बिना पूंजी के कोई धंधा भी कैसे आरंभ करूँ ?'' 3. मुनि के आँखें माँगने पर निर्धन व्यक्ति ने उत्तर दिया- ''फिर मैं देखूँगा कैसे ? नहीं प्रभु, आँखें तो मैं किसी भी कीमत पर नहीं दे सकता।'' 4. मुनि ने जब हाथ माँगे तो निर्धन बोला-''यह कैसे हो सकता है ? हाथ में देने के बाद में कुछ भी नहीं कर सकूँगा। महाराज! नहीं, मुझे यह बात भी स्वीकार नहीं।'' 5. मुनि के पाँव माँगने पर निर्धन बोला- ''दीनबंधु आप मेरी परीक्षा ले रहे हैं ? पाँव देने के बाद में चलूँगा कैसे ? नहीं, नहीं यह नहीं हो सकता।'' **(ङ)** 1. ✓ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓ **(च)** 1. मूल्यवान 2. खुश 3. खत्म 4. ले 5. धनी 6. अपर्याप्त **(छ) ह्रस्व-** अपने, दिन, यदि, देख, दिलवा, कुछ, गिर। **दीर्घ-** तभी, पूछा, और, नहीं, तभी, फूस। **(ज)** 1. उत्तर- जवाब (एक दिशा) वाक्य प्रयोग- अध्यापक ने छात्र से जवाब मांगा कि वह किस दिशा में बैठा है ? 2. हल- निष्कर्ष (खेतों में जोतने वाला हल) वाक्य प्रयोग- किसान ने यह निष्कर्ष निकाला कि वह अब अपने खेतों को हल से जोतेगा ? 3. बड़ा - बड़ा (सांभर बड़ा) वाक्य प्रयोग- मुम्बई शहर के बड़े-बड़े सांभर बड़े बहुत मशहूर है। 4. पास – निकट (उत्तीर्ण) वाक्य प्रयोग – सोहन साल भर खूब अध्ययन किया अब परीक्षा में उत्तीर्ण होने के निकट ही है। 5. बाहर – खुली जगह (खुशियाँ) वाक्य प्रयोग – आँगन के बाहर खुली जगह में घुमने से बहुत खुशी होती है। 6. आम – फल (साधारण) – अमरूद एक फल है परन्तु उसके बीज साधारण नहीं है। **(झ)** 1. ईसा मसीह 2. गुरुनानक 3. विवेकानन्द 4. महात्मा गाँधी 5. गौतम बुद्ध 6. तिलक 7. कृष्ण **(ञ)** 1. बच्चों से खेला नहीं जाता। 2. सीता से गाया नहीं जाता। 3. महेश से मारा नहीं जाता। 4. शीला से खाना पकाया नहीं जाता। 5. बुढ़िया से चला नहीं जाता। 6. दर्द के कारण गोपाल से बोला नहीं जाता। **क्रियाकलाप** – छात्र स्वयं करें।

अध्याय 4. बहिन निवेदिता

मौखिक अभ्यास – 1. मारगेट स्वामी विवेकानन्द के व्यक्तित्व व वचनों से प्रभावित होकर भारत आई। 2. निवेदिता के अन्तिम शब्द थे – 'मेरे जीवन की यह भटकती हुई नाव डूबना चाहती है। लेकिन मुझे उज्जवल भविष्य की किरणें दिखाई दे रहीं है।' **(क)** 1. निवेदिता का बचपन का नाम मारगेट था। 2. 17 वर्ष की आयु में निवेदिता ने एक विद्यालय में शिक्षिका की नौकरी की थी। 3. निवेदिता को अपने पिताजी से गरीबों के प्रति सहानुभूति की शिक्षा तथा माता से विनम्रता के गुण प्राप्त हुए। 4. स्वामी विवेकानंद के प्रश्न के उत्तर में निवेदिता ने कहा- ''वह मैं हूँ।'' 5. निवेदिता (मारगेट) के भारत आने पर स्वामीजी सर्वप्रथम उन्हें मठ ले गए और विधिवत पूजा की, मारगेट को विधि समझाई और आशीर्वाद दिया तथा उसी दिन उसका नाम बदलकर ''निवेदिता'' रख दिया। 6. कोलकाता में प्लेग की बीमारी फैलने पर निवेदिता ने ऐसे समय में लोगों का जीवन बचाने का संकल्प कर लिया और वह रोगियों की सेवा में जुट गई। उन्होंने गंदी नालियों तथा संडासों की सफाई करना प्रारम्भ की। उनके इस सेवा कार्य को देखकर अन्य महिलाएं भी उनकी सहायता करने दौड़ पड़ी। 7. निवेदिता के पिता का नाम- सैम्युअल तथा माता का नाम मेरी हैमिल्टन था। 8. स्वामी विवेकानन्द जी से निवेदिता का परिचय उसकी सहेली इजावेल ने कराया।

9. स्वामी जी के इन शब्दों- ''केवल ईश्वर ही सत्य है, हर धर्म ईश्वर तक पहुँचने का प्रमुख मार्ग है।''से निवेदिता अधिक प्रभावित हुई और देश की सेवा के लिए अपना जीवन न्यौछावर कर दिया। 10. निवेदिता 28 जनवरी, 1898 को भारत पहुँची। 11. कोलकाता में भयानक प्लेग की बीमारी सन् 1899 में फैली थी। 12. स्वामी जी ने मरणासन्न के दौरान निवेदिता से कहा- ''महानतम आत्मा मुझे बुला रही है। मैं मृत्यु का आलिंगन करने के लिये अपने आपको तैयार कर रहा हूँ।'' 13. 13 अक्टूबर की सुबह निवेदिता के जीवन के डूबने की बात कही थी। **(ख)** 1. स 2. ब 3. ब **(ग)** 1. इस पंक्ति में लेखक यह कहना चाहता है कि पाश्चात्य अर्थात् विदेशी संस्कृति को मानने वाली निवेदिता भी भारतीय संस्कृति में लीन होकर समाज सेवा में जुट गई थी। उसने अपनी संस्कृति को त्याग ईश्वर की प्राप्ति के लिये पूर्ण रूप से भारतीय संस्कृति को अपना लिया था। 2. यह पंक्ति लेखक द्वारा निवेदिता के लिये कही गई है। इस पंक्ति से लेखक का आशय यह है कि वह महिला अर्थात् निवेदिता जो स्वयं गौरी थी अर्थात् भारत की स्वतंत्रता के लिये लड़ने के लिये अंग्रेजों के बीच वह खुद विदेशी महिला थी, जो भारत के लिये लड़ रही थी, वह अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्षरत हो लड़ रही थी। **(घ)** 1. मारगेट के पिता के मित्र जो प्रख्यात धर्मगुरु थे, ने मारगेट को संबोधित करते हुए कहा। 2. स्वामी विवेकानन्द ने मारगेट से। **(ङ)** 1. आयरिश दंपती 2. मारगेट का जन्म 3. सन् 1893 में शिकागों में हुआ। 4. सन् 1899 में कोलकाता में फैली। 5. स्वामी विवेकानन्द ने महासमाधि ली। **(च)** 1. तथा 2. ताकि 3. बल्कि 4. परंतु 5. और **(छ)** छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं करें। **(ज)** अतुलनीय, पूर्वजों, असीमित, परीपूर्ण, इच्छुक, आयोजक, सहानुभूति, परिवर्तित, प्रख्यात **(झ)** छात्र स्वयं करें। **(ञ)** 1. अनन्य - एक ही में आस्था रखने वाला। वाक्य प्रयोग - हनुमान जी श्रीराम के अनन्य भक्त हैं। 2. नियुक्त- तय करना, किसी पद के लिये चुनना। राम को समिति का अध्यक्ष नियुक्त किया गया। 3. पाश्चात्य- पश्चिमी। आज के युग में नौजवानों पर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव बढ़ता जा रहा है। 4. मरणासन्न- मरने के निकट। स्वामी विवेकानन्द ने मरणासन्न की स्थिति में निवेदिता को अपनी बात कही। 5. न्यौछावर- बलिदान। देश के वीर जवान देश के लिए अपना सर्वस्थ न्यौछावर कर देते है। 6. प्रख्यात- प्रसिद्ध। मारगेट के पिता के एक मित्र थे, जो प्रख्यात धर्मगुरु थे। **(ट)** छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं करें। **(ठ)** 1. अनुयायी 2. सुखदायी 3. जानलेवा 4. बेसहारा 5. पड़ोसी 6. अनेक। **क्रियाकलाप –** छात्र स्वयं करें।

अध्याय 5. विनय

मौखिक अभ्यास – 1. जिस विनय में वीरता नहीं होती उसको कायरता कहते हैं। 2. नहीं, क्योंकि अपने ही मुँह से अपनी प्रशंसा करने से प्रतिष्ठा नहीं मिलती। **(क)** 1. विनय का अर्थ है, नम्रता और नम्रता का अर्थ है, स्वभाव की कोमलता। विनयशील व्यक्ति के गुणों में, हृदय में अभिमान न होना, वाणी में मिठास और सच्चाई होना, दिल में छिछोरापन तथा कुटिलता न होना, आता है। 2. विनय के मन में आने से उसके (मनुष्य के) सभी दोषों पर पर्दा पड़ जाता है। 3. दुष्टों पर भी विनीत भाव से शासन किया जा सकता है। आहिस्ता-आहिस्ता उन्हें भी विनय का पाठ पढ़ाया जा सकता है। विनयी मनुष्य को दुष्टों पर शासन करने के लिये शान्त भाव से रास्ते पर चलना चाहिये। सभी लोगों से सरल और नरम वचन बोलने चाहिये। 4. पेड़, पौधे और सभी विनम्र इसीलिए है, क्योंकि जब पेड़ फलों के बोझ से लद जाता है, तब अपना मस्तक नीचे की ओर झुका लेता है। जब कोई लता फूलों के भार से सजती है, तब ऊपर से नीचे लटक जाती है। जल से भरे मेघ भी पृथ्वी तक लटके हुए नजर आते हैं। 5. विनयशील व्यक्ति को सब लोग प्यार की दृष्टि से देखते हैं। विनयी बनने से मनुष्य में पात्रता (योग्यता) आ जाती है। 6. विनम्रशील व्यक्ति के पाँच लक्षण- विनयी मनुष्य शान्त भाव से रास्ते पर चलते है। विनम्र व्यक्ति सभी लोगों से सरल और नरम वचन बोलते है। गुरुजनों का आदर करना। अपने से बड़ों से अदब का बर्ताव करना। विनयी मनुष्य बेखटक कहीं भी पहुँच जाते है। 7. विद्या से बुद्धि बढ़ती है। 8. गन्धवों के राजा चित्ररथ थे। **(ख)** 1. ब 2. अ 3. अ **(ग)** 1. इस पंक्ति से आशय यह है कि विनम्रता के गुणों का जब तक किसी मनुष्य में समावेश नहीं होता है, तब तक सभी व्यक्ति उसे परेशान करते रहते है। वह व्यक्ति सभी की आँखों में खटकता रहता है। 2. इस पंक्ति से आशय यह है कि एक विनम्र व्यक्ति अपने विनम्रशील आचरण से एक दुष्ट व्यक्ति को भी अपने वश में कर सकता है। 3. यदि विनम्रशील व्यक्ति में वीरता के गुण नहीं है, तो वह व्यक्ति कायर कहलाता है। अर्थात् डरपोक बनकर आप विनयी नहीं बन सकते। विनयी होने का मतलब यह नहीं कि आप डरपोक बने, किसी के अपमान को सहे। इस सब के विरुद्ध लड़ना ही विनम्रशील है। 4 से 7 छात्र स्वयं करें। **(घ)** 1. नम्रता 2. स्वभाव की कोमलता 3. विनय 4. विनयी 5. प्रतिष्ठा 6. विनय 7. शीतल 8. भाव **(ङ)** 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗ 6. ✓ 7. ✗ 8. ✗ **(च)** 1. मुँह लटकाना- नाराज होना। प्रयोग- माँ ने जब बच्चों को डाँटा तो उनका मुँह लटक गया। 2. डींग हाँकना- झूठी बढ़ाई करना। प्रयोग- राम सदैव अपनी सम्पत्ति को लेकर डींगे हाँकता रहता है। 3. कलेजा मुँह को आना- घबरा जाना। प्रयोग- अचानक प्लेग फैलने से जनता का कलेजा मुँह को आ गया। 4. खून-पसीना एक करना- बहुत मेहनत करना। प्रयोग- किसानों ने खेत की जुताई में अपना खून-पसीना एक कर दिया। 5. पानी-पानी होना- अत्यन्त लज्जित होना। प्रयोग- अपनी अविनम्र हरकत को देख मोहन पानी-पानी हो गया। **(छ)** 1. नम्रता 2. शीतलता 3. वीरता 4. निर्भयता 5. कोमलता 6. कुटिलता 7. कायरता 8. प्रसन्नता **(ज)** 1. बुद्धिमान 2. विनयशील 3. पराक्रमी 4. क्रोधी/क्रूर 5. प्रौढ़वान 6. लड़ाकू। **(झ)** 1. इतना पानी बरसे कि नदी, तालाब सब भर जाए। 2. आप तो विनम्र है, साथ ही उसे भी विनम्रता के गुण सिखाइए। 3. हमें इसलिए पढ़ना चाहिए ताकि हमारी बुद्धि का विकास हो सके। 4. यद्यपि यह व्यक्ति विनम्र है तथापि यह कायर नहीं है। 5. जब राजा आयेगें तब प्रजा स्वत: ही शान्त हो जायेगी। **(ञ)** छात्र स्वयं करें। **क्रियाकलाप –** छात्र स्वयं करें।

अध्याय 6. भक्ति पदावली

मौखिक अभ्यास – 1. मीराबाई का जन्म राजस्थान में हुआ था। 2. मीराबाई ने अपने पति की मृत्यु के पश्चात् भगवान श्रीकृष्ण को अपना पति मानकर भक्ति की? **(क)** 1. भगवान् श्री कृष्ण के नंदलाल यानि बाल गोपाल वाले रूप को मीरा अपनी आँखों में बसाना चाहती हैं। 2. प्रेम की लता को मीरा द्वारा आँसुओं से सींचा गया। 3. प्रेमलता से मीरा को आनन्द अर्थात् खुशी रूपी फल प्राप्त हुआ। 4. मीरा को नाम रतन धन अर्थात खुशी भक्ति रूपी अनमोल धन प्राप्त हो गया। 5. मीरा के

नाम धन का न तो कोई चोर चुरा सकता है, ना हीं कोई उसे खर्च कर सकता है बल्कि ये धन तो दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही है। 6. प्रथम पद के आधार पर श्रीकृष्ण के रूप सौदंर्य का वर्णन श्रीकृष्ण ने मोर पंख वाला मुकुट धारण किया हुआ है। उनके सुधा-रस रूपी मुख पर मुरली विराजित है, जिससे केवल मीठे रस ही निकलते है। 7. मीरा नन्दलाल अर्थात् भगवान श्री कृष्ण को अपने नैनों में बसाना चाहती है। 8. मीरा संसार से लोक-लज्जा खोकर भगवान् श्री कृष्ण को अपना पति मानती है। 9. मीराजी भक्ति रूपी नाम रतनधन की प्राप्ति की बात करती है। 10. असुवन जल 'सींचि-सींचि' तात्पर्य यह है, कि मीरा जी अपने आँसुओं से श्रीकृष्ण के लिए प्रेम की बेल को सींच-सींच कर बड़ा किया है। 11. मीरा जी की कविताओं में राजस्थानी और गुजराती भाषाओं का मिश्रण हैं। **(ख)** छात्र स्वयं करें। **(ग)** 1.प्रस्तुति पंक्ति से आशय यह है कि मीराजी प्रभु श्रीकृष्ण की भक्ति में इतनी मगन है कि वह संतों के लिए भी सुखराई है और भक्त गाय के बछड़े के समान गोपाल है। 2. प्रस्तुत पंक्ति से आशय यह है, कि मीरा जी ने कृष्ण की भक्ति में लीन होकर सब मोह-माया तथा अपना परिवार तथा कुल को भी छोड़ दिया था और उन्होंने इसके लिए किसी की कोई परवाह भी नहीं की, क्योंकि वो श्रीकृष्ण के प्रेम-रस में लीन थी। 3. प्रस्तुत पंक्ति से आशय यह है कि मीरा ने श्रीकृष्ण की शक्ति में दिन-रात अपने आँसुओं से प्रेम की बेल को सींचती और जब ये प्रेम की बेल सींच-सींच कर बड़ी हो गई है, तो अब वह आनन्द फल तो देगी ही। 4. प्रस्तुत पंक्ति से आशय यह है कि मीरा जी ने श्रीकृष्ण की भक्ति को इस तरह अपनाया था कि वे सम्पूर्ण समाज से भी निष्कासित हो गई और वे बोलती थी कि मेरे प्रभु आपने मुझे जो भी दिया जैसा भी दिया, उसे मैंने स्वीकार किया है। 5. प्रस्तुत पंक्ति से आशय यह है कि मीरा जी अपने दोहों में व्यक्त करती है, कि मैंने श्रीकृष्ण की भक्ति को पाकर जन्म-जन्म की पूँजी पा ली है, चाहे मुझे उसके लिए जग में सब कुछ खोना ही पड़ा हो। **(घ)** छात्र स्वयं करें। **(ङ)** छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं करें। **(च)** 1.आनंद 2. हर्ष 3. जश्न 4. अमोल 5. अरूण 6. नुपुण 7. शब्द 8. किरण **(छ)** 1. अधर-सुधा = शहद के समान होंठ 2. कटि-तट 3. प्रेम-बेलि = प्रेम रूपी (संबंध कारक) 4. मकराकृति = मकर के जैसी आकृति। **(ज)** 1. मोर मुकुट मकराकृत कुडंल ('म' वर्ण की आवृति) 2. कहा करिहै कोई ('क' वर्ण की आवृति) 3. लोकजाज खोई ('ल' वर्ण की आवृति) **(झ)** 1.मूर्ति 2. विशाल 3. आँसू 4. साँवलि 5. शोभित 6. जन्म

क्रियाकलाप – छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं करें।

अध्याय 7. जीवन में हास्य-विनोद का महत्त्व

मौखिक अभ्यास – 1. जीवन में हास्य दुखों की अचूक औषधि है। 2. गाँधी जी ने हास्य विनोद के विषय में कहा है कि यदि मुझमें विनोद का भाव न होता तो मैंने बहुत पहले आत्महत्या कर ली होती। **(क)** 1. हास्य विनोद के अभाव में जिदंगी केवल कराहों का सिलसिला, आहों का जलजला, दर्द की दास्तान बनकर रह जाता है। 2. हास्य विनोद के पाँच लाभ :- हास्य विनोद चुम्बक की भाँति सफलता को अपनी ओर खींच लेता है। हास्य विनोद से जीवन के तनाव को कम किया जा सकता है। हास्य विनोद से मित्र भी आसानी से बनाये जा सकते है। हास्य विनोद वाले भाव का व्यक्ति दीर्घायु होता है। सामाजिक जीवन में हास्य विनोद से मधुरता आती है। 3. व्यक्ति के जीवन की सफलता के अनेक रहस्यों में से एक रहस्य हसँमुख स्वभाव होना भी है। किसी साक्षात्कार में वह व्यक्ति आसानी से चुन लिया जाता है, जिसके होंठो पर मुस्कान की दूधियाँ रेखाएँ अठखेलियाँ करती रहती है। पाश्चात्य देशों में बिना मुस्कराहट के अभिवादन अशिष्टता की निशानी मानी जाती है। 4. सुप्रसिद्ध जापनी कवि नामूची ने भगवान् से वरदान में यह माँगा था कि जब मेरे जीवन की सारी हरियाली सूख गई हो, अर्थात् मेरी सांसे रुकने वाली हो; जब चिड़ियों की चहचहाट भी बन्द हो गई तथा आकाश का सारा क्रोध मेरे भाग्य में बसने वाला हो, तब हे भगवान्! तुम मुझ पर इतनी कृपा करना कि मेरे होठों पर हंसी की लकीर खिंच जायें अर्थात् मेरे अन्तिम समय में भी मैं मुस्कुराता हुआ ही मृत्यु को प्राप्त करूँ। 5. भाषा और भाषण का भूषण है, विनोद। जिस व्यक्ति के भाषण में हास्य-विनोद का पुट होता है, उससे लोग सर्वाधिक प्रभावित होते हैं और उसकी तकदीर देर तक सुनने के बाद भी उकतो नहीं । 6. हास्य-विनोद को मर्यादित और समयानुकूल बनाना इसलिए आवश्यक है क्योंकि यदि हास्य अमर्यादित हो जाएगा, तो वह दूसरों को कष्ट पहुँचाएगाँ। हास्य विनोद का उपयोग मनोविनोद के लिए होना चाहिए। न कि दूसरों को घायल करने के लिए इसे तलवार बनाना चाहिए। तथा हास्य विनोद के लिए समय और स्थान का भी ध्यान रखना आवश्यक है, अन्यथा वे उपहास का पात्र बनते है। विनोद चाहे कितना भी प्रिय और इष्ट क्यों न हों तो भी उसके मूल्य या महत्त्व की एक निर्दिष्ट सीमा होनी चाहिए। 7. विनोदप्रिय मनुष्य ही भाग्यशाली होता है। 8. हँसमुख चेहरा ऐसा आइना है, जिसमें परमात्मा हरक्षण दिखाई पड़ता है। 9. जेल में पशु ही मनुष्य के ऊपर शासन करता है। यह वाक्य विनोबा जी ने कहा है। 10. हास्य लेखक जी. पी. श्रीवास्तव ने हास्य के बारे में लिखा है '' बुराई रूपी पापों के लिए इससे बढ़कर कोई दूसरा गंगाजल नहीं है। यह वह हथियार है, जो बड़े-बड़ों का भिजाज चुटकियों में ठीक कर देता है। यह वह कोड़ा है, जो मनुष्य को सीधी राह से बहकने नहीं देता। मनुष्य ही नहीं, धर्म और समाज को भी सुधारने वाला अगर कोई है तो यही है।'' **(ख)** 1. ब 2. ब 3. अ 4. अ 5. अ **(ग)** 1. इस पंक्ति से लेखक का आशय है, कि कविता से केवल मन को तृप्ति मिलती है। कविता मन का भाव होती है किन्तु विनोद से रोम-रोम खिल उठता है। मनुष्य में हास्य विनोद होने से उसका जीवन प्रफुल्लित हो जाता है। 2. प्रस्तुत पंक्ति हास्य और उल्लास का नाम ही जवानी है, से लेखक का आशय यह है, कि जीवन में यदि हास्य और उमंग होगा तो एक नयी जवानी आ जायेगी अर्थात् जीने के मायने ही बदल जायेगें। 3. इस पंक्ति से लेखक का आशय यह है कि जब कोई विक्रेता अपने हँसमुख स्वभाव से एक ग्राहक को कोई चीज़ दिखाता है, तो वह ग्राहक उस चीज़ को अपने मन से नहीं बल्कि विक्रेता के स्वभाव के कारण ही खरीद लेता है, और इस प्रकार विक्रेता अपने हँसमुख स्वभाव से ही ग्राहक को सामान खरीदने पर मजबूर कर देता है, और ग्राहक हँसी-खुशी विक्रेता की चाही रकम उसे देने को राजी हो जाता है, जो रकम एक जेबकतरे की कैंची से नहीं निकलती वह विक्रेता अपने स्वभाव से निकलवा लेता है। 4. इस पंक्ति से आशय यह है, कि हास्य-विनोद को एक प्रकार का पौष्टिक तत्व माना गया है, जिसकी हमारे शरीर और मस्तिष्क को अत्यन्त आवश्यकता है। हास्य-विनोद ऐसा पौष्टिक आहार है, जो हमारे शरीर और मस्तिष्क को शक्ति प्रदान करता है। **(घ)** 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓ **(ङ)** 1. हास्य

= हास्यास्पद 2. विनोद= विनोदप्रिय 3. उल्लास = उल्लासित 4. प्रवृत्ति = प्रवृत्ति = प्रवत्तिशील 5. ऊष्मा = ऊष्मित 6. शक्ति = शक्तिशाली 7. अनुभूति = अनुभूतिपूर्ण 8. भावना = भावनात्मक 9. जिंदादिली = जिंदादिल 10. सफलता = सफलतापूर्ण **(च)** 1. आहों का जलजला = 2. दर्द की दास्तान 3. चिंताओं का पुलिंदा 4. दुग्ध-धवल 5. चाँदनी 6. कराहों का सिलसिला 7. मकर ध्वज की सी ऊष्मा 8. अवसाद की काली रेखा 9. मुस्कान की दुधिया रेखा 10. उदासी की छटा = 11. हँसी का एक झोंक = **(छ)** छात्र स्वयं करें। **(ज)**1. प्रभावशाली 2. शक्तिशाली 3. बलशाली 4. परिणामशाली 5. परिवर्तनशाली 6. विघटनशाली **(झ)** छात्र स्वयं करें। **क्रियाकलाप** – छात्र स्वयं करें।

अध्याय 8. सच्ची वीरता

मौखिक अभ्यास – 1. जब हम वीरों की कहानियाँ सुनते है तब हमारे अंदर भी वीरता की लहरें उठती है। 2. सत्य की सदा विजय होती है। **(क)** 1. सच्चे वीर पुरुष धीर, गंभीर और आज़ाद होते है। उनके मन की गंभीरता और शांति समुद्र की तरह विशाल और गहरी तथा आकाश की तरह स्थिर और अचल होती है। सच्चे वीर अपने प्रेम के जोर से लोगों के दिलों को सदा के लिए बाँध देते है। वीर पुरुष का शरीर कुदरत की समस्त ताकतों का भंडार है। 2. सत्वगुण के समुद्र में जिनका अंत:करण निमग्न हो गया, वे ही महात्मा, साधु और वीर हैं। वे लोग अपने क्षुद्र जीवन का परित्याग कर ऐसा ईश्वरीय जीवन पाते हैं कि उनके लिए संसार के सभी अगम्य मार्ग साफ हो जाते हैं। आकाश उनके ऊपर बालों का छाता लगाता है। प्रकृति उनके मनोहर माथे पर राजतिलक लगाती है। हमारे मन के राज में ही साधु पुरुष है। 3. गरजने वाले बादलों की संज्ञा कायर पुरुष तथा बरसने वाले बादलों की संज्ञा वीर पुरुष को दी गई है। वीर पुरुष यह समझता है कि मनुष्य का जीवन जरा-सी चीज़ है, वह सिर्फ एक बार के लिए काफी है। मानों बंदूक में वे केवल एक गोली है। उसे एक बार ही प्रयोग किया जा सकता है। जबकि कायर पुरुष इसको बड़ा ही कीमती और कभी न टूटने वाला हथियार समझते हैं। हर घड़ी आगे बढ़कर और यह दिखाकर कि हम बड़े हैं, वे फिर पीछे इसलिए हट जाते हैं कि उनका अनमोल जीवन किसी और अधिक बड़े काम के लिए बच जाए। इसलिए कहा गया है, गरजने वाले बादल ऐसे ही चले जाते हैं, परंतु बरसने वाले बादल जरा-सी देर में मूसलाधार वर्षा कर जाते हैं। 4. वीर पुरुष की तुलना भगवान् सूर्य से करते हुए कहा गया है कि वीर पुरुष का शरीर कुदरत की समस्त ताकतों का भंडार है। कुदरत का यह केन्द्र हिल नहीं सकता। सूर्य का चक्कर हिल जाए, तो हिल जाए, परंतु वीर के दिल में जो देवी केंद्र है, वह अचल है 5. यह पाठ हमें यह संदेश देता है, कि हमें सदैव वीर पुरुषों की तरह डटकर बुराई का सामना करना चाहिए और लड़ना चाहिए, न कि कायर पुरुषों की तरह डर कर भाग जाना चाहिए। **(ख)** 1. अ 2. ब 3. स 4. अ 5. अ **(ग)** 1. यह वाक्य एक बादशाह ने, एक बागी गुलाम से उनकी बातचीत के दौरान कहे। 2. यह वाक्य नेपोलियन ने अपनी फौज से तब कहा, जब फौज को आल्प्स के पहाड़ों पर चढ़ना असंभव लगा। 3. यह वाक्य मंसूर ने अपनी मौज में आकर बादशाह से कहा। **(घ)** छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं करें। **(ङ)** 1. गंभीर, आजाद 2. दाहड़ 3. अटक 4. वीरता 5. जीत 6. कारखाने **(च)** 1. दुर्जन 2. पुण्य 3. सुख 4. अनादर 5. दुःख 6. चोटी 7. विपक्ष **(छ)** 1.मानव = मानवता 2. पशु = पशुता 3.वीर = वीरता 4. मित्र = मित्रता 5. बालक = बालकपन 6. मनुष्य = मनुष्यता 7. महाजन = महाजनता **(ज)** छात्र स्वयं करें। **(झ)** 1. स्थायी 2. सत्यवादी 3. धार्मिक 4. प्रगतिशील 5. समान 6. असंभव 7. निर्भीक 8. पदयात्री 9. मांसाहारी 10. नास्तिक **(ञ)** प्रत्यय = ता = मित्रता, मानवता, दानवता, रचियता। ई = लिखाई, पढ़ाई, कमाई, भलाई। उपसर्ग = वि = विज्ञान, विदेश, विभाग, विहार। उपसर्ग वि = विज्ञान, विदेश, विभाग, विहार । सु = सुयोग, सुगम, सुलभ, सुमन। प्र = प्रकाश, प्रसार, प्रगति, प्रबल। **क्रियाकलाप** – छात्र स्वयं करें।

अध्याय 9. नर हो, न निराश करो मन को

मौखिक अभ्यास – 1. मैथलीशरण गुप्त 2. मनुष्य के जीवन के दो पहलू – एक आत्मा और एक निराशा है। **(क)** 1. 'नर हो, न निराश करो मन को' कविता में प्रमुख रूप से नर को यह प्रेरणा दी गई है, कि अपने मन को उदास न करके उन चीजों को अवलोकन करो और उपयोग करो, जो विधाता द्वारा प्रदान की गई है। समय का उपयोग करो और कुछ काम करों। 2. मनुष्य का जन्म इस संसार में कुछ काम करने, नाम करने के लिए हुआ है। 3. मनुष्य को अखिलेश्वर का सहारा लेना चाहिए और अपना रास्ता स्वयं ही चुनना चाहिए। 4. जल की विशेषता हमेशा शुद्ध रहना है। अग्नि की विशेषता बेराके, स्वच्छंता है। वायु की विशेषता सदा कृतिशील रहना है, पृथ्वी की विशेषता सदा धैर्यवान रहना है तथा आकाश की विशेषता हमेशा पवित्र; निर्मल साफ रहना है। इन सभी विशेषताओं का मानव जीवन में समोवश किया जा सकता है। 5. मरने के पश्चात् भी मान का गान रहना चाहिए। 6. मनुष्य को किसी भी धन को अलम्य इसलिए नहीं समझना चाहिए, क्योंकि किसी भी चीज़ को मेहनत और लगन से प्राप्त किया जा सकता है, पर विधाता द्वारा दिया हुआ वांछित धन रूपी हाथ इत्यादि प्राप्त नहीं किया जा सकता है। **(ख)** छात्र स्वयं करें। **(ग)** 1. अखिलेश्वर है अवलम्बन को। 2. जल तुल्य निरन्तर शुद्ध रहो, प्रबलानल ज्यों अनिरुद्ध रहो। 3. प्रभु ने तुमकों कर दान किये, सब वांछित वस्तु विधान किये। तुम प्राप्त करो उनको व अहो, फिर है किसका वह दोष कहो ? 4. किस गौरव के तुम योग्य नहीं, कब कौन तुम्हें सुखभोग्य नहीं ? 5. निज गौरव का नित ज्ञान रहे, ''हम भी कुछ हैं'' यह ध्यान रहे, सब जाप अभी, पर मान रहे, मरणोत्तर गुंजित गान रहे। 6. सब हैं जिसके अपने घर के। फिर दुर्लभ क्या उसके जन को ? **(घ)** 1.प्रस्तुत पंक्ति से कवि 'मैथिलीशरण गुप्त जी का आशय यह है कि नर को निराश न होकर अपना पथ अर्थात् रास्ता स्वयं ही चुनना चाहिए और वह रास्ता उसे अच्छाई और प्रतिभा की ओर ले जाने वाला होगा। 2. इस पंक्ति से आशय यह है कि नर को। मनुष्य को हमेशा अपने गौरव का ध्यान रहना चाहिए और उसके मन में स्वयं के लिए यह भावना हमेशा रहनी चाहिए कि ''हम भी कुछ हैं' जिससे उसे मारने के बाद भी याद रखा जाएं। 3. पंक्ति का आशय यह है कि श्रम ही ऐसा विधि है, जिससे सारे सुख प्राप्त किये जा, सकते है। मनुष्य को आशा करने से तब तक कुछ नहीं मिल सकता है, जब तक वह उसे पाने के लिए सम्पूर्ण श्रम नहीं करेंगा। 4. पंक्ति से कवि का आशय यह है कि प्रभु ने मनुष्य को हाथ दान किये है, और उसके साथ ही सभी वांछित वस्तुएँ भी प्रदान की, फिर भी मनुष्य निराश क्यों है ? **(ङ)**1. ✗ 2. ✓

3. ✓ 4. ✓ 5. ✓ **(च)** 1. सदुपाय = उपाय 2. प्रशस्त = प्रभावी 3. अखिलेश्वर = ईश्वर 4. अवलम्बन = सहारा 5. जलतुल्य = जल के समान 6. अवनीतलवत् = धरा, भूमि 7. स्वत्व = स्वतंत्रता 8. अमरत्व = अमर तत्व 9. मरणोत्तर = मरने के बाद 10. निरन्तर = लगातार **(छ)** 1. ज्ञान = ध्यान 2. भेद= खेद 3. धन = मन 4. उद्यम = धिक् 5. विधि = निधि 6. भोग्य = योग्य 7. सपना = अपना 8. सुयोग = सदुपाय **(ज)**1. जल = पानी, नीर, वारि 2. अग्नि = आग, अनक, पावक, 3. वायु = हवा, पवन, समीर 4. पृथ्वी = धरा, भूमि, धरातल 5. आकाश = गगन, अंबर, नभ 6. संसार = दुनिया, जग, **(झ)**1. सुयोग = अच्छा योग (काल), अच्छा अवसर = हमेशा इस पल का इंतजार रहता है, कि कही सुयोग हमारे हाथ से निकल न जायें। 2. अवलम्बन = सहारा 3. सत्कृतिशील = सदा चलने वाला = हमें हमेशा पवन की तरह सत्कृतिशील होना चाहिए। 4. अनिरुद्ध = बेरोक, स्वच्छंद = हमेशा आग की तरह अनिरुद्ध बनने का संदेश कवि ने दिया है। 5. अखिलेश्वर = ईश्वर, सबका स्वामी = जिसका कोई नहीं उसका सहारा अखिलेश्वर है। **(ञ)** 1. सँभलो 2. स्वयं 3.कहाँ 4. गुंजित 5. वांछित 6.यहाँ 7. हूँ 8. करुँ। **क्रियाकलाप –** छात्र स्वयं करें।

अध्याय 10. कर्ण और कुंती

मौखिक अभ्यास – 1. कुंती ने कर्ण को बचपन में लोक लाजवश छोड़ दिया था। 2. सूत स्त्री राधा ने कर्ण को पाला। **(क)** 1.कुंती पांडु की पत्नी और पाँच पाण्डवों की माँ थी। 2. कुंती के पाँच पुत्र थे। 3. कर्ण ने कुंती की बात इसलिए नहीं मानी क्योंकि वह दुर्योधन को दिये वचन के कारण मजबूर था। 4. कुंती युद्ध स्थल पर संध्या के समय कर्ण के पास उससे अपने पाँचों पुत्रों की भिक्षा मांगने और यह बताने आई थी कि कर्ण ही उसका सबसे बड़ा पुत्र है। 5. कर्ण ने कुंती को वचन दिया कि आप इसी तरह पाँच पुत्रों की माता रहेंगी। मैं अर्जुन के अतिरिक्त अन्य किसी पांडव को कोई हानि नहीं पहुँचाऊँगा। मैं या अर्जुन दोनों में से आपका एक पुत्र रहेगा। क्योंकि हम दोनों का युद्ध अवश्य होगा और इसमें किसी एक की मृत्यु भी अवश्य होगी। **(ख)** 1. यह वाक्य कर्ण ने कुंती से कहे थे। 2. कुंती ने कर्ण से। 3. कर्ण ने कुंती से । 4. कर्ण ने कुंती से। 5. कर्ण ने कुंती से। **(ग)** 1. भाग्यवती 2. सूतपुत्र 3. दुर्वासा 4. सूर्य 5. भिक्षा 6. सेनापति **(घ)** 1. कोठा = कोठी 2. ढोल = ढ़ोली 3. नांव = नवैया 4. साँप = सपेरा 5. आँत = आँतेला 6. खाज = खाजी 7. लोटा = लुटिया 8. खाट = खटिया 9. घर = घरेलू 10. पुस्तक = पुस्तकीय **(ङ)** 1. अकथनीय 2. सायंकाल 3. पुराना 4. अघटनीय 5. अघटित 6. तद्भव शब्द 7. अज्ञेय 8. अनन्यकारी **(च)**1. देवि = कर्ण - देवि! मैं आपकी बात समझा नहीं। 2. पुत्र = कुंती - तुम मेरे ज्येष्ठ पुत्र हो। 3. भाइयों = सोहन- भाइयों! 4. सीते = सीते! इस रेखा को न उल्लांघना 5. बालिके = महापुरुष - बालिके ! ये कलश हमें दे दो। 6. भाई = गीता - भाई! मुझे यह किताब चाहिये। **(छ)** 1. निम्न - निम्नतर - निम्नतम 2. लघु - लघुतर-लघुतम 3.कठिन - कठिनतर - कठिनतम 4. वृहद - वृहदतर - वृहदतर - वृहदतम 5. श्रेष्ठ - श्रेष्ठतर - श्रेष्ठतम 6. बलिष्ठ - बलिष्ठतर- बलिष्ठतम 7. वरिष्ठ - वरिष्ठतम **(ज)**1. सहर्ष = स + हर्ष 2.समूल = स + मूल 3. सादर = स + आदर 4. सानद = स + आनंद **(झ)**1. काश आज बारिश न होती। 2. काश वह वापस हो गई होती। 3. काश तुम्हारे पिताजी यहाँ होते। 4. काश वह दुर्घटना न होती। 5. काश वह गाड़ी मिलती। **(ञ)** 1. आजीवन = सम्पूर्ण जीवन 2. बेखटक = बिना रोक-टोक के 3. पहले पहल = सबसे पहले 4. अनुरूप = इसके समान 5. भरपेट = पेटभर के 6. प्रतिदिन 7. हाथों हाथ = साथ की साथ 8. प्रत्येक = हर एक 9. प्रतिवर्ष - प्रत्येक वर्ष 10. यथाविधि = विधि के अनुसार। **क्रियाकलाप –** छात्र स्वयं करें।

अध्याय 11. पिता का पत्र पुत्र के नाम

मौखिक अभ्यास – 1. गाँधी जी ने अपने पुत्र को पत्र 25 मार्च 1909 को लिखा। 2. गाँधी जी ने यह पत्र प्रिटोरिया जेल में रहते हुए लिखा। **(क)** 1. यह पत्र पिता मोहन दास करम चंद गाँधी जी ने अपने पुत्र मणिलाल गांधी को लिखा है। 2. लेखक ने अपने को पुत्र ही पत्र लिखना इसलिए पसंद किया, क्योंकि पढ़ने के समय लेखक को अपने पुत्र का ही ध्यान उन्हें बराबर रहता था। 3. शिक्षा के विषय में गाँधी जी के विचार थे कि अक्षर ज्ञान ही शिक्षा नहीं है। सच्ची शिक्षा तो चरित्र निर्माण और कर्त्तव्य का बोध है। 4. अमीरी की तुलना में गरीबी अधिक सुखद इसलिए है, क्योंकि गरीब किसान व्यक्ति खेत में घास और गड्ढे में पूरा समय देता है और इसी प्रकार अपना सम्पूर्ण जीवन-निर्वाह करते है। इसलिए गरीबी को अमीरी से अधिक सुखद माना गया है। 5. गाँधीजी की तीन बातें हैं – अपनी आत्मा का, अपने आप का और ईश्वर का सच्चा ज्ञान प्राप्त करो। 6. गाँधीजी ने अपने पुत्र को काम की बहुत-सी हिदायतें दी थी, जिनमें मुख्य रूप से उन्होंने उसे शिक्षा को अक्षर ज्ञान की जगह चरित्र निर्माण और कर्त्तव्य का बोध बताया। अपनी आत्मा का, अपने आप का और ईश्वर का सच्चा ज्ञान प्राप्त करना महत्त्वपूर्ण बताया। गरीबी को अमीरी की तुलना में अधिक सुखद बताया है। **(ख)** 1. अ 2. अ 3. स 4. ब 5. स **(ग)** 1.गाँधीजी के अनुसार केवल अक्षर ज्ञान ही सारा ज्ञान नहीं है। बल्कि उनका मानना है कि अक्षर ज्ञान के साथ-साथ हमें बाहरी ज्ञान भी होना चाहिए, जो हमें कर्त्तव्य और चरित्र निर्माण की राह पर ले जाता है। अक्षर ज्ञान केवल किताबी ज्ञान है, जो सम्पूर्ण शिक्षा नहीं है। 2. गाँधीजी के अनुसार मौज-मस्ती मनुष्य को एक निश्चित आयु तक ही करनी चाहिए। केवल बारह वर्ष तक के आयु के बच्चों को ही मौजमस्ती शोभा देती है। बारह वर्ष से अधिक होने के बाद तो बच्चों में जिम्मेदारी और कर्त्तव्य का भाव आ जाना चाहिए। 3. गाँधीजी कहते है, कि हमें सभी कार्य आराम से समय से सोच-विचारकर, समझकर, शांत मन से करने चाहिए। कभी भी काम की अधिकता को देखकर घबराना नहीं और यदि हम सभी सद्गुणों को प्राप्त करने की चेष्टा करेगें, तो वे हमारे लिए बहुत उपयोगी और मूल्यवान प्रमाणित होंगे। **(घ)** 1. अधिकार 2. 'बा' 3. अक्षर ज्ञान 4. ब्रह्मचर्य 5. समाप्त **(ङ)** 1. ✗ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✗ 5. ✓ **(च)** 1. मेरे, तुम 2. वे 3. मैं, तुम्हें **(छ)** 1. संप्रदाय + इक = संप्रदायिक 2. समाज + इक = सामाजिक 3. धर्म + इक = धार्मिक 4. व्यस्त + व्यतता 5. भारत + इय = भारतीय **(ज) व्यक्तिवाचक संज्ञा –** मिस्टर रीच, रामदास, देवदास, मणिलाल गांधी, मोहनदास **जातिवाचक संज्ञा –** माँ, बच्चा, किसान, पिता, दूध **(झ)** 1. वीर + उचित = वीरोचित 2. नरोत्तम = नर + उत्तम 3. गंगोदक = गंग + उदक 4. धर्मोपदेश = धर्म + उपदेश 5. महोत्सव = महा + उत्सव 6. ग्रामोद्धार = ग्राम + उद्धार। **(ञ)** 1. अमर 2. अजर 3. अधर्म 4. अजय 5. अश्वेत **क्रियाकलाप –** छात्र स्वयं करें।

अध्याय 12. ममता

मौखिक अभ्यास – 1. ममता ब्राह्मण परिवार से थी। 2. शहंशाह हुमायुँ को ममता ने अपनी झोपड़ी में शरण दी थी। **(क)** 1. ममता रोहतास दुर्ग के मंत्री चूड़ामणि की अकेली दुहिता थी। उसके दु:ख का कारण यह था कि उसके पिता ने म्लेच्छ का उत्कोच स्वीकार कर लिया था। 2. चूड़ामणि अपनी स्नेह-पालिका पुत्री के लिए व्यथित थे कि क्या करें, यह स्थिर न कर सकते थे। 3. स्वर्ण उपहार देखकर ममता ने अपने पिता से कहा कि '' तो क्या आपने म्लेच्छ का उत्कोच स्वीकार कर लिया। पिताजी यह अनर्थ है नहीं। लौटा दीजिए। पिताजी, हम लोग ब्राह्मण हैं, इतना सोना लेकर क्या करेंगे।'' 4. ममता ने अपने आश्रम में आंगतुक को आश्रय देकर स्त्री धर्म का पालन किया। 5. ममता को आगंतुक सही प्रतीत नहीं हुआ, उसने आगंतुक को मना करते हुए कहा- '' परंतु तुम भी वैसे ही क्रूर हो, वही भीषण रक्त की प्यास, वही निष्ठर प्रतिबिंब तुम्हारे मुख पर भी हैं। सैनिक मेरी कुटी में स्थान नहीं, जाओं कहीं दूसरा आश्रय खोज लीजिए।'' 6. बाद में ममता ने अपने मन में सोचा - '' यहाँ कौन दुर्ग है, यही झोपड़ी न, जो चाहे ले लो मुझे तो अपना कर्त्तव्य करना पड़ेगा।'' यह सोचते हुए उसने आगंतुक को आश्रम दे दिया। 7. जब ममता स्तर वर्ष की वृद्धा हुई। तब एक दिन वह वह अपनी झोपड़ी में पड़ी थी। वह बीमार थी और पास की दो-तीन स्त्रियाँ उसकी सेवा कर रही थी। तभी सहसा एक अश्वारोही उसी झोपड़ी के द्वार दिखाई पड़ा। वह शहंशाह हुमायूँ के आदेशानुसार सत्तर वर्ष पूर्ण उस झोपड़ी में रुके थे, इसलिए उसे बनवाने के लिए आया था। 8. झोपड़ी के स्थान पर अष्टकोण मंदिर बनाया गया, क्योंकि ममता तो मर चुकी थी, और अकबर ने अपने पिता की याद में वहाँ एक मंदिर बनवा दिया। 9. अष्टकोण मंदिर के शिलालेख पर लिखा था – '' सातों देशों के नरेश हुमायूँ ने एक दिन यहाँ विश्राम किया था।'' उनके पुत्र अकबर ने उनकी स्मृति में यह गगनचुंबी मंदिर बनावाया है। **(ख)** 1. अ 2. ब 3. स **(ग)** 1. ममता 2. थाल 3. स्तूप 4. शंहशाह 5. सचेष्ट **(घ)** 1. ममता ने, अपने पिता से कहे। 2. चूड़ामणि ने, ममता से कहे। 3. ममता ने, अपने पिता से कहे। 4. आगंतुक ने, झोपड़ी में पाठ कर रही स्त्री से कहे। 5. ममता ने आगंतुक से कहे। 6. ममता ने, अश्वारोही से कहे। **(ङ)** 1. इस पंक्ति से लेखक का आशय यह है कि जब ममता बचते हुए एक झोपड़ी में पहुँचकर पाठ करने लगी तभी एक मुगल दरवाजे पर आया, और बोला कि मैं एक मुगल हूँ। चौसा-युद्ध में शेरशाह से लड़कर मुसीबत में पड़ गया हूँ और इस विपन्नता से बचने के लिए रक्षा चाहता हूँ। इस अंधे री रात में अब और आगे जाने में भी असमर्थ हूँ, इसलिए मुझे आश्रय दो। 2. प्रस्तुत पंक्ति से लेखक का आशय यह है कि जब ममता ने आगंतुक मुगल को जल देकर उसके प्राणों की रक्षा की , तब उस मुगल ने कहा कि अब मैं जाऊँ माता'' तो ममता मन में विचार करने लगी- '' मैं ब्राह्मणी हूँ, मुझे तो अपने धर्म-अतिथिदेव की उपासना का पालन करना चाहिए।'' अर्थात् ममता अपने धर्म कर्त्तव्य अतिथिदेवों भव: का पालन करना चाहती थी और आगंतुक को आश्रय देना चाहती थी पर वह विचारमग्न थी, क्योंकि वह एक मुगल था और उसके प्राण भी ले सकता था। 3. इस पंक्ति में ममता मन में सोचती हुए अपने आप से कह रही थी कि यह तो झोपड़ी ही तो है, कौनसा दुर्ग या महल है, जो मेरी सम्पत्ति चोरी कर लेगा। मुझे तो इस अतिथि को आश्रय देकर अपने अतिथि देव कर्त्तव्य का पालन करना होगा। 4. पंक्ति से आशय यह है, कि ममता ने जिस मुगल को आश्रय दिया था, वह कोई साधारण व्यक्ति नहीं बल्कि शंहशाह हुमायूँ था, जिसने झोपड़ी से जाते समय अपने सेनापति को आदेश दिया था कि यहाँ एक बड़ा मकान बनवा देना। पर जब सेनापति सैंतालीस वर्ष बाद वहाँ आया, तो ममता अपनी अंतिम सांसे ले रही थी और उसके मरने के बाद हुमायूँ के पुत्र अकबर ने वहाँ एक मंदिर बनवा दिया पर शिलालेख पर ममता का जिक्र भी नहीं किया, क्योंकि उसे देखने वाले न तो हुमायूँ थे और न ही ममता। **(च)** 1. उसका (पुरुषवाचक सर्वनाम) 2. वे (पुरुषवाचक सर्वनाम) 3. वह, (निश्चियवाचक); अपने को (निजवाचक) 4. मैं, मुझे (पुरुषवाचक सर्वनाम); अपने (निजवाचक) 5. मैं, (पुरुषवाचक); किससे (प्रश्नवाचक) 6. तुम (पुरुषवाचक) 7. तुम, (पुरुषवाचक) तुम्हें (पुरुषवाचक) **(छ)** 1. शोंण के प्रवाह में, उसके कलनाद में, अपना जीवन मिलाने में वह बेसुध थी। 2. उस व्यक्ति ने कहा – ''माता मुझे आश्रय दो।'' 3. मुगल ने कहा – ''माता, तो फिर मैं जाऊँ।'' 4. उसने पास की स्त्री से कहा – '' उसे बुलाओ।'' 5. ''सातों देशों के नरेश हुमायूँ ने एक दिन यहाँ विश्राम किया था। उनके पुत्र अकबर ने उनकी स्मृति में यह गगनचुंबी मंदिर बनावाया।'' **(ज)** 1. मैंने सेना के बढ़ते प्रवाह को देखा। 2. हुमायूँ ने ममता से आश्रय माँगा। 3. ममता ने अश्वारोहियों का बढ़ता दल देखा। 4. ममता अपने विकल कानों से सुन रही थी। 5. शरणार्थी ने युद्ध में शेरशाह से विपन्न होकर रक्षा चाही। **(झ)** 1. अनुचार = सेवक प्रयोग - राजा के दरबार में कई अनुचर नियुक्त थे। 2. आवरण = पर्दा प्रयोग - उसन थाल से आवरण हटा दिया। 3. स्वर्ण = सोने जैसा। प्रयोग = अमृतसर का स्वर्ण मंदिर प्रसिद्ध है। 4. गगनचुंबी = आसमान छुने वाला। प्रयोग = आजकल सोने के भाव आसमान छू रहे है। 5. अश्वारोही = घोड़े पर सवार होने वाला। प्रयोग = 6. स्मृति = याद प्रयोग = हुमायूँ की स्मृति में एक अष्टकोण मंदिर बनवाया गया। **(ञ)** छात्र स्वयं करें। **(ट)** छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं करें। **क्रियाकलाप –** छात्र स्वयं करें।

अध्याय 13. सच्चा इंसान

मौखिक अभ्यास – 1. सच्चा इंसान अपने व्यवहारिक जीवन में अच्छे आचरण का ज्ञान अपनाता है। 2. हमारे शास्त्र सच्चे इंसान की पहचान धैर्य, क्षमा, पवित्रता, संयम, बुद्धि, विद्या, सत्य और विनम्रता बताते है। **(क)** 1. कवि ने उस नर को धिक्कार योग्य बताया है, जो दूसरों की पीड़ा में अपना आनन्द समझते है। 2. कवि के अनुसार जब धर्म में भेद-भाव का विष पनप जाता है, तो वह धर्म नहीं अज्ञान है। 3. कवि के द्वारा धर्म भेद-भाव को झूठा कहा गया है। 4. कवि द्वारा लड़ाई-झगड़ा, भेद-भाव को झूठा कहा गया है। 4. कवि द्वारा लड़ाई-झगड़ा, भेद-भाव आदि को नासमझी का खेल बताया गया है। 5. मिलजुल कर चलने से मंजिल आसान बन जाती है। 6. प्रस्तुत कविता में सारी दुनिया को सबका एक साझाँ मकान कहा गया है। 7. कवि द्वारा सच्चे इंसान के बहुत-से गुण बताये गये हैं, जिनमें'-जनता की सेवा करना, मानचता का धर्म निभाना, भेद-भाव नहीं करना, मिजलुल कर रहना प्रमुख है। **(ख)** 1. अ 2. अ 3. स 4. अ **(ग)** छात्र स्वयं करे। **(घ)** 1. प्रस्तुत पंक्तियाँ कवि द्वारा रचित कविता 'सच्चा इंसान' से ली गई है। पंक्तियों से कवि का आशय है कि वह व्यक्ति जिसका जीवन ही कर्म यज्ञ है

अर्थात् वह कर्म करने को ही जीवन मानता है वह सच्चा और गुणवान व्यक्ति है। तथा यदि व्यक्ति मानवता का धर्म ले लें तो वह व्यक्ति ही भगवान् की श्रेणी में आ जायेंगा। 2. प्रस्तुत पंक्तियों से कवि का आशय यह है, कि वह व्यक्ति जिसने केवल जग-हित अर्थात्-संसार के लिए जीना सीखा है वह व्यक्ति ही संसार का शृंगार है तथा जिस व्यक्ति ने दूसरों की पीड़ा में आनंद लिया है उस व्यक्ति धिक्कार है। 3. प्रस्तुत पंक्तियों में कवि कहना चाहते है, कि मानव धरती पर मानव धर्म ही सबसे बड़ा धर्म है और मानवता। मानव धर्म ही सब धर्मों का सार है। तथा प्रत्येक सच्चा मानव धरती मनुष्य नहीं एक अवतार है। **(ङ)** 1. इस पंक्ति में कवि के गहन भाव निहित है। इससे आशय है कि सारी दुनिया एक मिला-जुला मकान है, जिसमें अलग-अलग प्राणी रहते है। और इस मकान में सबको मिल-जुल कर रहना चाहिए। 2. इस पंक्ति में निहित भाव यह है कि यह जो सारी दुनिया है वह रेल के समान है। इस रेल का गंतव्य स्थान एक ही है और रास्ता भी एक बस इसमें चढ़ने वाली प्राणियों का बदलाव है। **(च)** 1. सौन्दर्यीकरण, रूपनिखार 2. बेशर्म, बेइज्जत 3. परेशानी, आफत 4. सूचना, समाचार 5. पेरशानी, दुख 6. प्रसन्नता, हर्ष 7. यात्रा, आवागमन **(छ)** 1. सच माने तो हर प्राणी जग में परमेश्वर का दूत होता था। 2. लड़ना-भिड़ना, बैर-भाव सब नासमझी का खेल होगें। 3. मानवता धर्म बड़ा है सबसे, सब धर्मों का सार है। 4. जिसका जीवन कर्म-यज्ञ होगा। 5. बोस ढोने का कार्य हाथी करते थे। **(ज)** 1. अज्ञान = अ + ज्ञान 2. उपकार = उप + कार 3. अधिकार = अधि + कार 4. अत्याचार = अत् + आचार 5. आजीवन = आ + जीवन 6. उत्कर्ष = उत् + अकृर्ष **(झ)** 1. मानवता = दानवता 2. भगवान् = भक्त 3. साँझा = एकल 4. दूत = यम 5. परमेश्वर = अनीश्वर 6. उपकार = अपकार 7. निर्माण = विध्वंस **क्रियाकलाप –** छात्र स्वयं करें।

अध्याय 14. ओलंपिक की आत्मकथा

मौखिक अभ्यास – 1. ओलंपिक 2. ओलंपिक विजेता उसे कहते है जो देश के कई खेलों में सबसे अधिक बार प्रथम स्थान प्राप्त करता है। **(क)** 1. यूनान के पुराने नगर ओलंपिक नगर के नाम पर यह नाम पड़ा। 2. ओलंपिक प्रतियोगिताओं के पिता के रूप में वीर हर्क्यूलिस का नाम जुड़ा हुआ है तथा इन खेलों का इतिहास लगभग तीन हजार वर्ष पुराना है। 3. ओलंपिक खेल सबसे पहले सन् 1896 में एथेंस में शुरु हुए। तथा अब तक 23 ओलंपिक खेल हो चुके है। 4. ओलंपिक खेल शुरु होने से पहले खिलाड़ी यह शपथ लेते है,'' हम शपथ लेते हैं कि इन खेलों में भाग लेने की इच्छा रखते हुए खेल-कूद की कीर्ति तथा अपने देश के सम्मान के लिए, खिलाड़ी की सच्ची भावना से खेल नियमों के प्रति आदर रखते हुए हम ओलंपिक खेलों में निष्ठापूर्वक भाग लेगें।'' 5. ओलंपिक ध्वज में कुल पाँच गोले होते हैं, जो एक-दूसरे से गुंदे हुए होते है। प्रत्येक गोला एक-एक महाद्वीप का प्रतीक है। 6. ओलंपिक खेलों का उद्धार सबसे पहले फ्रांस के एक प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री और युवा-कल्याण कार्यों में बेहद रुचि रखने वाले भी बैरन पियेर द कूबते' ने किया। **(ख)** 1. अ 2. ब 3. स 4. स 5. अ **(ग)** 1. मशाल 2. कल्पना 3. खिलाड़ी 4. वातावरण 5. खंडहर **(घ)** 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓ **(ङ)** 1. ओलंपिक खेल के जन्मदाता 2. यूनान के महान् दार्शनिक 3. एक संस्था 4. 1896 में एथेंस में हुआ 5. एक-एक महाद्वीप का प्रतीक। **(च)** 1. स्वतंत्रता 2. वीरता 3. लोकप्रियता 4. सुन्दरता 5. मूर्खता **(छ)** 1.जीतना = जीत 2. भूलना = भूल 3. खोजना = खोज 4. सजाना = सजावट 5. गूँजना = गूँज। **(ज)** 1. बड़े-बड़े = मैं दुनिया के बड़े-बड़े नगरों की सेर करता हूँ। 2. खेल-कूद = हमनें विविध प्रकार की खेल-कूद प्रतियोगिताओं में भाग लिया। 3. उतार-चढ़ाव = इन्हीं उतार-चढ़ावों का शिकार मेरा देश यूनान भी रहा है। 4. धीरे-धीरे = धीरे-धीरे सारा वातावरण तालियों से गूंज उठा। 5. अपने-अपने = सारे देशों के अपने-अपने ध्वज होते हैं। **(झ)** छात्र स्वयं करें। (ञ) जातिवाचक = देशों, खेलों, विद्यालयों, अच्छे। व्यक्तिवाचक = स्त्री-पुरुष, भारत, फ्रांस, पियेर। **क्रियाकलाप –** छात्र स्वयं करें।

अध्याय 15. ईसा-मसीह

मौखिक अभ्यास – 1. क्रिसमस का पर्व ईसा मसीह के जन्मदिन के रुप में मनाया जाता है। 2. क्रिसमस का पर्व दिसम्बर महीने की 25 तारीख को मनाया जाता है। **(क)** 1. ईसा-मसीह का जन्म आज लगभग दो हजार वर्ष पूर्व बेथलेहम नामक स्थान पर हुआ था। यह स्थान भूमध्य सागर के पश्चिमी तट के निकट फिलिस्तीन में है। 2. ईसा-मसीह के जन्म के समय उनके पिता जोसफ तथा माता मैरी जनगणना कराने के लिए बेथलेहम आये थे और उन्होंने रात अस्पताल में गुजारी थी, वहीं मैरी ने एक बालक को जन्म दिया, जिसका नाम जीसस रखा। 3. ईसा ने महात्मा जॉन से दीक्षा प्राप्त कर चालीस दिन तक जंगल में रहकर उपवास किया और वे निरंतर ध्यान में लगे रहे, जिसके फलस्वरूप उन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई। 4. ईसा मसीह द्वारा दिये गए उपदेश निम्न है – लोगों को सदैव नम्र होना चाहिए। अपने शत्रुओं से भी प्यार करो। दान गुप्त रूप से दो। यदि तुम अपने सभी मनुष्यों के अपराध क्षमा करोगे, तो ईश्वर तुम्हारे अपराध भी क्षमा कर देगा। 5. ईसा-मसीह के विरुद्ध कुछ लोग इसीलिए हो गये थे कि वे रोम से युद्ध करने की बात मानने को तैयार नहीं थे। 6. ईसा-मसीह को प्राणदंड देने का आदेश दिया गया। भरे बाजार में उन्हीं लोगों के बीच, जिनके कल्याण के लिए उन्होंने जीवन भर काम किया । ईसा मसीह को अपना क्रूस खुद उठाकर ले जाना पड़ा। उनके पैरों में कीले ठोककर उन्हें क्रूस पर लटका दिया गया। क्रूस पर चढ़े हुए ईसा मसीह ने असहाय पीड़ा में भी अपने शत्रुओं के प्रति दुर्भाव नहीं रखा। उन्होंने उनके लिए प्रार्थना की – '' हे प्रभु इन्हें क्षमा करना, क्योंकि ये नहीं जानते कि ये क्या कर रहे हैं।'' **(ख)** 1. अ 2. ब 3. अ 4. स 5. अ **(ग)** 1.बेथलेहम 2. जीसस 3. ईसा-मसीह, अनुयायी 4. प्राणदंड़ 5. क्रूस 6. सहिष्णुता, संदेश **(घ)** 1. छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं करे। **(ङ)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓ **(च)** दयालु, शांत, परोपकारी, उदार, सर्वाप्रिय, क्षमाशील, सहिष्णु, उपदेशक **(छ)** 1. बहादुर आदमी वह है, जो कभी हार नहीं मानता। 2. बहादुर लोग वे है, तो देश की खातिर अपनी जान दे देते है। 3. धन्य हैं वे लोग जो नम्र रहते है जिन्हें पृथ्वी का राज्य मिलेंगा। 4. जिन लोगों के पास पैसा है, उनके पास अक्ल नहीं। 5. यह वह किताब है, जिसे मैनें मेले में खरीदा था। **(ज)** 1. प्रसंग के अनुकूल 2. संदेहहीन 3. भरपेट 4. रातोरात 5. क्रमानुसार 6. विधिनुसार **(झ)** 1. जहाँ घोड़े बाँधे जाते है = अस्तबल 2. जहाँ गाएँ रखी जाती है = गौशाला 3. जहाँ हाथी बाँधे जाते है = हाथीसाल 4. जहाँ पाठ पढ़ाया जाता है = विद्यालय **(ञ)** 1. उदार = कठोर 2. शांत = अशांत 3. अपराध = निरपराध 4. निर्बल = सबल 5. भाव = निर्भाव 6. गुण = अवगुण **क्रियाकलाप –** छात्र स्वयं करें।

अध्याय 16. कबीर के दोहे

मौखिक अभ्यास – 1. कबीर दास जी ज्ञान मार्ग शाखा के कवि थे। 2. कबीर दास जी ने हिन्दू-मुस्लिम एकता पर बल दिया। **(क)** 1. कबीर जी ईश्वर से पर्याप्त वस्तुएँ माँग रहे है, जिससे उनका परिवार खुश रहे। और समा जाये और ना खुद भूखे रहे और ना ही साधु भूखा जायें। 2. लोग ईश्वर को सदैव दुःख में याद करते है। 3. सज्जन पुरुषों का जीवन दूसरे लोगों की सहायता के लिये होता हैं। 4. ईश्वर को सुख में भी सुमिरन करने से कभी दुःख पास में नहीं आते है। 5. राम मनुष्य के शरीर में उपस्थित रहते है। 6. मनुष्य को जब अपने भीतर के ज्ञान का पता चल जाता है, तो वह विद्वान बन जाता है। 7. कवि ने सज्जन पुरुषों की जाति पर ध्यान देने के लिए इसलिए कहा है क्योंकि साधु की कोई जाति नहीं होती, उसका केवल ज्ञान ही उसे साधु बनाता है। 8. कबीर जी 'जामें कुटुम समाएँ' के द्वारा यह समझाना चाहते है कि हमें केवल इतनी ही पर्याप्त वस्तुएँ मिले, जिसमें हमारा परिवार समा जाएँ और खाने को इतना ही मिले कि ना तो स्वयं भूखा रहूँ और ना ही कभी कोई अतिथि साधु भूखा जाये। **(ख)** 1. प्रस्तुत पंक्ति कबीर जी के दोहों से ली गई है। कबीरदास जी कहते है, कि जो गंधी अर्थात् वह व्यक्ति जो इत्र आदि बेचता है, वह खुद तो कुछ देता नहीं है; उसमें से स्वयं की तो कोई गंध बेचता नहीं है, फिर वह व्यक्ति अपने शरीर की गंध को एक सुगंध में परिवर्तित कर लेता है, जिसमें दूसरा व्यक्ति प्रसन्न होकर उस इत्र को खरीदना चाहता है। 2. कबीरदास जी कहते है कि जिस प्रकार वृक्ष स्वयं के फल नहीं खाता है तथा ना ही नदी स्वयं का पानी पीती है, उसी प्रकार साधु व्यक्ति ने भी साधु का शरीर केवल परमार्थ करने के लिए ही धरा है। 3. कबीरदास जी के अनुसार पोथियाँ पढ़-पढ़ कर भी कोई पंडित नहीं बन सकता है इसलिए जो व्यक्ति प्रेम भाव अपने दिल में बिठा लेता है, प्रेम के ढाई अक्षर पढ़ लेता है, वहीं व्यक्ति पंडित है। 4. कबीरदास जी के अनुसार जो व्यक्ति अपना घर नहीं चला सकता है, तथा वह हमेशा अपने घर को बर्बाद करने में तत्पर रहता है, उस व्यक्ति के लिए कबीरदास जी कहते है, कि वह व्यक्ति हमारे साथ चले और परोपकार करे। 5. प्रस्तुत दोहे की पंक्ति से आशय यह है कि हमें हमेशा अच्छे कर्म करने चाहिए, बिना फल की इच्छा करे। और जग में ऐसे काम करने चाहिए। जिससे हम स्वयं खुश हो तथा सारा जगे पीछे से रोता रहे। 6 से 9 तक छात्र स्वयं करें। **(ग)** छात्र स्वयं करें। **(घ)** 1. कारण 2. वृक्ष 3. स्मरण 4. जुड़े 5. धक्का 6. मिलना 7. दोनों 8. किसके 9. बुझना 10. करके 11. बुरा व्यक्ति 12. बहुत **(ङ)** 1. ऋग्वेद, सामवेद, अर्थवेद एवं यजुर्वेद, यह चार वेद माने गए है। 2. राम ने जो कहा था, सत्य था।'' 3. सुख-दुख और लाभ-हानि सब ईश्वर के हाथ है। 4. जल ही जीवन है। अधजल गगरी छलकत जाय। **(च)** 1.जो, वे। 2. जिन, तिन 3. जाके, ऊ 4. जैसा, वैसा 5. जिसने, उसकी। **(छ)** 1. उपस्थिति = इति 2. ईश्वरीय = इय 3. धार्मिक = इक 4. कुरीतियाँ = इया 5. निदंक = इक 6. परमारथ = अव **(ज)** 1. पाँच फल = परिमाणवाचक विशेषण 2. पितृभक्त = गुणवाचक विशेषण 3. थोड़ा, कम = परिमाणवाचक 4. क्रूर = गुणवाचक विशेषण, दससिर = संख्यावाचक विशेषण 5. सौ रुपये = संख्यावाचक विशेषण, वह सार्वनामिक विशेषण 6. बहुत = गुणवाचक विशेषण 7. वह = गुणवाचक विशेषण 7. वह = सार्वजनिक विशेषण, चोर = गुणवाचक विशेषण 8. कच्ची = गुणवाचक विशेषण 9. बड़ा = गुणवाचक विशेषण 10. लंबी = गुणवाचक विशेषण **क्रियाकलाप –** छात्र स्वयं करें।

अध्याय 17. भिक्षावृत्ति

मौखिक अभ्यास – 1. मुफ्त भोजन प्रणाली राष्ट्र को गिरावट की ओर ले गई है। 2. हाँ, हमें भिक्षावृत्ति पर रोक लगानी चाहिए। **(क)** 1. प्रस्तुत पाठ में दरीद्रता और भूखमरी क समस्या को आधार बनाया गया है। 2. हमारा देश घोर दारिद्रय और भूखमरी का शिकार है, उसके कारण प्रतिवर्ष भिखारियों की संख्या में वृद्धि होती जा रही है। 3. लेखक यह चाहता है, कि सभी सदाव्रत बंद हो जाएँ, क्योंकि यह प्रणाली राष्ट्र को गिरावट की ओर ले गई है, और उसने आलस्य, अकर्मण्यता, ढ़ोंग और यहाँ तक कि अपराध वृत्ति को भी बढ़ावा दिया है। अपात्रों पर दयालुता दिखाने की इस वृत्ति से राष्ट्र की संपति में कोई वृद्धि नहीं होती-न भौतिक और न आध्यात्मिक बल्कि इससे दानदाता में पुण्यशाली होने की झूठी भावना पैदा होती है। 4. 'काम के बदले भोजन' इस नियम को लागू करने में कई बाधाएँ आ सकती है क्योंकि मुफ्त भोजनशाला चलाने की तुलना में लोगों से काम लेकर खाना खिलाना महँगा पड़ सकता है। 5. लेखक नंगे लोगों को कपड़े देने में उनके प्रति अपमान इसलिए अनुभव करता है, क्योंकि उन्हें कपड़े नहीं बल्कि काम की जरूरत है, जो हमें उनको देना चाहिए। लेखक उनका सरंक्षक बनने का पाप नहीं करना चाहता, लेकिन यह ज्ञात है कि उन्हें निर्धन बनाने में भी हमारा ही हाथ है। हम उन्हें रोटी के चंद टुकड़े या उतारे हुए कपड़े यहीं देगे बल्कि उनके साथ काम में भागीदार बनेगें। 6. शारीरिक रूप से असमर्थ लोगों के भरण-पोषण का दायित्व राज्य का है। 7. भिक्षावृत्ति में दोष इसलिए है, क्योंकि मिथ्या अथवा सच्चे अंधेपन की आड़ में भी बड़ी धोखाधड़ी चल रही है। बेईमानी से पैसा कमाकर बहुत से अंधे धनवान बन गए है। इसलिए भिक्षावृत्ति की प्रोत्साहित करना बुरा है। 8. भिक्षावृत्ति के कारण भारत की प्रतिष्ठा को भी हानि पहुँचती है। पर्यटकों के आगे जब भिक्षा मांगने वाले आते है, अन्य देशों के सामने भारत का नाम नीचे होता है। 9. भिक्षावृत्ति की समस्या को रोकने का सबसे बड़ा उपाय यह है, कि किसी भी भिखारी को काम करने पर ही खाना दिया जाएँ और यदि वह काम से इंकार करे, तो उसे कुछ भी न दिया जायें। **(ख)** 1. ब 2. ब 3. अ **(ग)** 1.भिक्षा 2. गिरावट 3. खाना 4. ईश्वर 5. वायदा **(घ)** 1. मुफ्त में भोजन कराने की प्रणाली देश को पतन की ओर ले जाएगी। इसके कारण लोग मेहनत करना बंद कर देंगे। 2. व्यक्ति मेहनत करता है तभी उसे दो वक्त की रोटी मिलती है, यदि मुफ्त खाना मिलने की प्रणाली बंद करके यह नियम लगा दिया जाये कि व्यक्ति काम नहीं करेगा तो खाना भी नहीं मिलेगा। 3. जो व्यक्ति शरीर से अपंग है वह काम करने में असमर्थ है ऐसे लोगों की जिम्मेदारी सरकार की होती है। **(ङ)** 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓ **(च)** 1. कल्पना = कल्पित, काल्पनिक, कल्पवृक्ष, अकाल्पनिक। 2. बल = बलवान, निर्बल, बाली। 3. खिलना = खिलावट, 4. जगत = जगदीश, जगत्गुरु 5. प्रकाश = प्रकाशित, प्रकाशवान्, अप्रकाशित 6. मूल्य = मूल्यवान, मूल्यहीन, मूल्यान्वित, मौलिक। **(छ)** 1. उत्तरदायित्त्व = कर्त्तव्य (शारीरिक दृष्टि से असमर्थ लोगों को खिलाने-पिलाने का उत्तरदायित्व राज्य का है।) 2. प्रगतिशील = प्रगति की ओर अग्रसर (भारत एक

प्रगतिशील देश है।) 3. अकर्मण्यता = कुछ न करना (कई अकर्मण्य व्यक्ति घर में बैठे रहते है। 4 से 6 छात्र स्वयं करें। **(ज)** 1. भोजन = खाना, आहार, कलेवा 2. देश = राष्ट्र, जन्मभूमि, जग 3. धनी = धनवान्, अमीर, दौलतवान 4. अपमान = बेइज्जती, तिरस्कार, अनादर 5. जिम्मेदारी = कर्त्तव्य, दायित्व, फर्ज़ 6. संस्था = समिति, ट्रस्ट, कार्यकारिणी **(झ)** 1. इंसानियत = इंसान + ईयत् 2. अकर्मण्यता = अकर्मण्य + ता 3. मनुष्यता = मनुष्य + ता 4. प्रक्रिया = प्रक्रिय + आ 5. आध्यात्मिक = आध्यात्मक + इक **(ञ)** छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं करें। **क्रियाकलाप –** छात्र स्वयं करें।